


This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.
The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website
https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi
https://egangotri.wordpress.com/

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

2012

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक
हस्तलिखित संग्रह
दाखल क्र. M 2248 विषय वैदिक
नाव श्रीशुक्लयजुर्वेदस्य ब्रह्मभाष्य (मुद्रित)
लेखक / लिपीकार (मासिक)
पृष्ठ 95 काळ एप्रिल 1885 पूर्ण / ~~अपूर्ण~~

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

M2848



**पदार्थः** १ हे भुवन के २ पालन करने वाले ३ प्रजापति ४ जिस ५ आप के ६ स्वर्ग में ७ स्थान हैं ८ अथवा ९ जिस आप के १० भूलोक में स्थान हैं ११ वह तुम १२ हमारे १३ इस १४ ब्राह्मण वा मन के लिये १५ और इस १६ क्षत्री वा प्राण के लिये १७ बड़ा १८ सुख १९ दीजियै २० आप के लिये श्रेष्ठ होम हो॥ ४४॥

**समुद्रोसि नभस्वानार्द्रदानुः शम्भूर्मयोभूरभि मावाहि स्वाहा मारुतोसि मरुतां गणः शम्भूर्मयोभूरभिमावाहि स्वाहावस्यूरसि दुवस्वाञ्छम्भूर्मयोभूरभि मावाहि स्वाहा॥ ४५॥**

समुद्रः। नभस्वान्। आर्द्रदानुः। शम्भूः। मयोभूः। असि। मा। अभि वाहि। स्वाहा। शम्भूः। मयोभूः। मारुतः। गणः। मारुतः। असि। मा। अभि वाहि। स्वाहा। शम्भूः। मयोभूः। दुवस्वान्। अवस्यूः। असि। मा। अभि वाहि। स्वाहा॥ ४५॥

तीन बात होमों को होमता है उसके मंत्र

ओं समुद्रोसीत्यस्य (लुशो धानाक ऋषिः निचृद्गायत्री छन्दः वायु देवता) १
ओं मारुत इत्यस्य ( तथा आर्षी उष्णिक् छन्दः तथा ) २

**पदार्थः**– हे वायु तम १ जलों से भले प्रकार आर्द्र २ नक्षत्रों के स्थान ३ वर्षा आदि के देने वाले ४,५ इस लोक और पर लोक के सुख को देने वाले स्वर्ग लोक रूप ६ हो ७,८ मेरे सन्मुख आओ ९ आप के लिये श्रेष्ठ होम हो हे वायु १०,११ दोनों लोक के सुख दाता तुम १२ मृक् ज्योति आदि की १३ गणना करने वाले १४ अन्तरिक्ष लोक रूप १५ हो १६, १७ मेरे सन्मुख आओ १८ श्रेष्ठ होम हो हे वायु १९,२० दोनों लोक के सुख दाता तुम २१ हवि से युक्त २२ भूलोक रूप २३ हो २४,२५ मेरे सन्मुख आओ २६ श्रेष्ठ होम हो॥ ४५॥

**अथाध्यात्मम्**– हे प्राण १ अमृत से आर्द्र २ कमलाकाश से युक्त ३

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

अमृत वर्षा के दाता भृकुटि रूप तुम ४ पारलौकिक सुख के दाता ५ और मोक्ष सुख के दाता ६ हो ७,८ मेरे सन्मुख प्राप्त हो ९ गुरु उपदेश द्वारा हे द्वितीय प्राण १०,११ पारलौकिक और मोक्ष सुख के दाता तुम १२,१३,१४ हार्दान्तरिक्ष में १५ हो १६,१७ मेरे सन्मुख प्राप्त हो १८ गुरु उपदेश द्वारा हे तृतीय प्राण १९,२० पारलौकिक और मोक्ष सुख के दाता तुम २१ भोग संपन्न २२ और रक्षण धर्म के दाता मानसलोक रूप २३ हो २४,२५ मेरे सन्मुख प्राप्त हो २६ गुरु उपदेश द्वारा ॥ ४५ ॥

यास्ते॑ऽअग्ने सूर्य्ये॒ रुचो॒ दिव॑मात॒न्वन्ति॑ र॒श्मिभिः॑। ताभि॑र्नो॒ऽअ॒द्य सर्वा॑भी रु॒चे जना॑य नस्कृधि ४६

पूर्व संस्कृत घृत से एक एक बार लेकर नौ आहुति को होमता है उसका पहिला मंत्र, इसकी व्याख्या अध्याय १३ मंत्र २२ में हो गई॥ ४६॥

या वो॑ देवाः॒ सूर्ये॒ रुचो॒ गोष्वश्वे॑षु॒ या रुचः॑। इन्द्रा॑ग्नी॒ ताभिः॒ सर्वा॑भी॒ रुचं॑ नो धत्त बृहस्पते ॥ ४७

इसकी व्याख्या अध्याय १३ मंत्र २३ में हो गई॥ ४७॥

रुचं॑ नो धेहि ब्राह्म॒णेषु॒ रुच॒ꣳ राज॑सु नस्कृधि। रुचं॒ विश्ये॑षु शू॒द्रेषु॒ मयि॑ धेहि रु॒चा रुच॑म् ॥ ४८॥

१ नः। ब्राह्मणेषु। रुचं। धेहि। नः। राजसु। रुचं। कृधि। विश्येषु। शूद्रेषु। रुचं। मयि। रुचा। रुचम्। धेहि॥ ४८॥

ॐ रुचन्न इत्यस्य (लुशो धानाक ऋषिः॰ अनुष्टुप् छन्दः॰ अग्निर्देवता) १

**पदार्थः** हे अग्ने १ हमारे २ ब्राह्मणों में ३ दीप्ति को ४ धारण करो ५ हमारे ६ क्षत्रियों में ७ तेज को ८ धारण करो ९ वैश्यों १० और शूद्रों में ११ तेज को धारण करो १२ मुझ में १३ दीप्ति के साथ १४ अमरता को १५ धारण करो॥ ४८

**अथाध्यात्मम्** हे आत्माग्ने १ हम योगियों की २ मन की वृत्तियों में ३ अमृतत्व को ४ धारण करो ५ हमारे ६ प्राणों में ७ अमृतत्व को ८ धारण करो ९

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

ज्ञानेन्द्रियों १० और कर्मेन्द्रियों में ११ अमृतत्व को धारण करो १२ मुझ आत्म प्रतिबिंब में १३ तुम तेज के साथ १४ अमृतत्व को १५ धारण करो॥४८॥

**तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳस मान आयुः प्रमोषीः॥४९॥**

वरुणः। यजमानः। हविर्भिः। तत्। आशास्ते। तत्। ब्रह्मणा। वंदमानः। त्वा। यामि। उरुशंस। इह। अहेडमानः। बोधि। नः। आयुः। मा। प्रमोषीः॥ ४९॥

ओं तत्त्वा यामीत्यस्य (शुनःशेप ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः वरुणो देवता) १

**पदार्थः** १ हे ईश्वर २ यजमान ३ हवि दान के द्वारा ४ उस वेद को ५ चाहता है ६ उस कारण वेद से ८ स्तुति करता मैं ९,१० तुम से याचना करता हूं ११ कि हे बहुस्तुत १२ इस स्थान पर १३ क्रोध न करते तुम १४ मेरी प्रार्थना को जानो १५ और हमारे १६ जीवन को १७,१८ मत चुराओ अर्थात् पूरी आयु दो॥४९॥

**स्वर्ण घर्म्मः स्वाहा स्वर्णार्कः स्वाहा स्वर्ण शुक्रः स्वाहा स्वर्ण ज्योतिः स्वाहा स्वर्ण सूर्यः स्वाहा॥५०॥**

स्वः। नः। घर्मः। स्वाहा। स्वः। नः। अर्कः। स्वाहा। स्वः। नः। शुक्रः। स्वाहा। स्वः। नः। ज्योतिः। स्वाहा। स्वः। नः। सूर्यः। स्वाहा।५०

ओं ५,७,८,९ मंत्राणां (शुनःशेप ऋषिः दैवी त्रिष्टुप् छन्दः अग्निर्देवता) १

ओं ६ मंत्रस्य ( तथा दैवी पंक्तिश्छन्दः तथा ) २

**पदार्थः** १ आत्मा की २ समान ३ व्यष्टि समष्टि सूर्य ४ ब्रह्माग्नि में होमहो ५,६ सूर्य की समान ७ अग्नि वा जाठराग्नि ८ सूर्य रूप महानारायण में होमहो ९,१० सूर्य की समान ११ और कर्म उपासना से शुद्ध मानस सूर्य १२ ब्रह्माग्नि

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

में होम हो १३,१४ सूर्य की समान १५ आत्माग्नि १६ महा नारायण में होम हो १७,१८ सूर्य की समान १९ समष्टि भाव को प्राप्त मानस सूर्य २० महा नारायण में होम हो॥ ५०॥

अ॒ग्निं यु॑नज्मि॒ शव॑सा घृ॒तेन॑ दि॒व्यꣳ सु॑प॒र्णं वय॑सा बृ॒हन्त॑म्। तेन॑ व॒यं ग॑मेम ब्र॒ध्नस्य॑ वि॒ष्टप॒ꣳ स्वो॒ रुहा॑णा॒ अधि॒ नाक॑मुत्त॒मम्॥ ५१॥

दिव्यम्। सुपर्णम्। वयसा। बृहन्तम्। अग्निम्। शवसा। घृतेन। युनज्मि। तेन। ब्रध्नस्य। विष्टपम्। वयम्। गमेम। स्वः। रुहाणाः। उत्तमम्। नाकम्। अधि॥ ५१॥

**अथाधिदैवम्**· तीन ऋचा से परिधियों को स्पर्श कर अग्नि योजन करता है उसका पहिला मंत्र १

ओं अग्निमित्यस्य (शुनः शेप ऋषिः· त्रिष्टुप् छन्दः अग्निर्देवता) १

**पदार्थः** १ स्वर्ग में प्रगट २ सुन्दर गति वाले ३ धूम के साथ ४ वृद्धि पाने वाले ५ अग्नि को ६ बल ७ और घृत से ८ संयुक्त करता हूं ९ उस के द्वारा १० ११ पाप रहित सूर्य लोक को १२ हम १३ जावें १४ स्वर्ग को १५ चढ़ते १६,१७ वैकुंठ को १८ प्राप्त करें॥ ५१॥

**अथाध्यात्मम्** १ मन में प्रकट २ पक्षी रूप ३ प्राणायाम से ४ वृद्धि पाने वाले ५ आत्माग्नि को ६ योग धन वा योगैश्वर्य ७ और इन्द्रियों की शक्ति से ८ संयुक्त करता हूं ९ उस आत्माग्नि के साथ १०,११ सूर्य लोक को १२ हम १३ जावें १४,१५ स्वर्ग को चढ़ते १६,१७ आनन्दस्वरूप महा नारायण को १८ प्राप्त करें॥ ५१॥

इ॒मौ ते॑ प॒क्षाव॒जरौ॑ पत॒त्रिणौ॒ याभ्या॒ꣳ रक्षा॑ꣳस्यप॒हꣳस्य॑ग्ने। ताभ्यां॑ पतेम सु॒कृता॑मु लो॒कं

यत्र ऋषयो जग्मुः प्रथमजाः पुराणाः ॥ ५२ ॥

अग्ने। तौ। इमौ। पक्षौ। अजरौ। पतत्रिणौ। याभ्याम्। रक्षां-
सि। अपहंसि। ताभ्याम्। उ। सुकृताम्। लोकम्। पतेम। यत्र।
प्रथमजाः। पुराणाः। ऋषयः। जग्मुः॥ ५२॥

ओं इमौ ते इत्यस्य (शुनःशेप ऋषिः। विराड्ब्राह्म्यनुष्टुप् छन्दः। अग्निर्देवता) १

**पदार्थः** १ हे अग्ने २ तेरे ३ ये ४ दाहिने बांये पक्ष ५ जरा रहित ६ उड़ने का स्वभाव रखने वाले हैं ७ जिनसे ८ राक्षसों को ९ नाश करते हैं १०,११ हम उनके द्वारा ही १२ पुण्यात्मा पुरुषों के १३ लोक को १४ जावें १५ जिस लोक में १६ प्रथम उत्पन्न १७,१८ सनक आदि ऋषि १९ गये ॥ ५२ ॥

**अध्यात्मम्**—१ हे आत्मन् २ तेरे ३ ये ४ ज्ञान उपासना रूप पक्ष ५ जरा रहित ६ और उत्पतनशील हैं ७ जिनसे ८ काम आदि को ९ नाश करते हो १०,११ हम उनके द्वारा ही १२,१३ ब्रह्मलोक को १४ जावें १५ जिस लोक में १६ प्रथमोत्पन्न १७ पुराण १८ ऋषि १९ गये ॥ ५२ ॥

इन्दुर्दक्षः श्येन ऋतावा हिरण्यपक्षः शकुनो
भुरण्युः। महान्त्सधस्थे ध्रुव आनिषत्तो नमस्ते
अस्तु मा मा हिंसीः ॥ ५३ ॥

इन्दुः। दक्षः। श्येनः। ऋतावा। हिरण्यपक्षः। शकुनः। भुर-
ण्युः। महान्। ध्रुवः। सधस्थे। आनिषत्तः। मा। मा। हिंसीः।
ते। नमः। अस्तु ॥ ५३॥

अथाधिदैवम्-

ओं इन्दुरित्यस्य (शुनःशेप ऋषिः। आर्षी पंक्तिश्छन्दः। अग्निर्देवता) १

**पदार्थः** हे अग्ने १ ईश्वर वा चन्द्रमा की समान आल्हाद करने वाले २ उत्साह वाले ३ प्रशंसा योग्य गति वाले ४ सत्य यज्ञ वा जल से संपन्न ५ सुवर्ण प्रकाश रूप पक्ष वाले ६ पक्षी रूप ७ पोषक ८ प्रभाव में बड़े ९ स्थिर १०,११

ब्रह्मके साथ स्थित्प्रम १२ मुझ को १३,१४ मतमारो १५ तुम को १६ नमस्कार १७ हो॥५३॥

**अध्यात्मम्**— हे आत्माने १ ज्ञान दान से आल्हादित २ जाने और करने योग्य कर्मों के उपस्थित होने पर शीघ्र जाने और करने को समर्थ ३ प्रशंसा योग्य गति वाले ४ योग यज्ञ वाले ५ ज्योति रूप पक्ष वाले ६ पक्षी नाम ७ जीवों के पोषक ८ महान् ९ अचल १० और सह स्थान रूप ब्रह्म ११ शरीर में ११ विराजमान तुम १२ मुझ को १३,१४ मत मारो १५ तुम को १६ नमस्कार १७ हो॥ ५३॥

## द्विवो मूर्द्धासि पृथिव्या नाभिरूर्ग्पामोषधी नाम्। विश्वायुः शर्म्म सप्रथा नमस्पथे॥५४॥

दिवः। मूर्धा। पृथिव्याः। नाभिः। ऊर्क्। अपाम्। ओषधीनाम्। विश्वायुः। शर्म्म। सप्रथाः। पथे। नमः॥५४॥

**ऋष्यादि दैवम्**— दो ऋचा से दक्षिणोत्तर परिधि संधि का स्पर्श कर अग्नि विमोचन करता है उसका पहिला मंत्र १

ओंदिव इत्यस्य (प्रजः शोपऋषिः परोष्णिक छन्दः अग्निर्देवता) १

**पदार्थः**— हे अग्ने तुम १,२ स्वर्ग लोक के शिर रूप ३ पृथिवी के ४ नाभि रूप ५ जल ६ और औषधियों के ७ रस रूप ८, सब प्राणियों के जीवन ९ सब के शरण १० विस्तार वान ११ हो १२ तुम्हें स्वर्ग मार्ग रूप के लिये १३ नमस्कार॥ ५४॥

**अध्यात्मम्**— हे आत्मा ने तुम १ प्रकृति कमल के २ सूर्य ३ मानस कमल के ४ मध्य स्थानी मानस सूर्य ५ कमलों के अन्त रिक्ष ६ और इन्द्रियों के ७ सार ८ सब के जीवन ९ शरण रूप १० और महान ११ हो १२ तुम्हें मोक्ष मार्ग रूप के लिये १३ नमस्कार॥ ५४॥

## विश्वस्य मूर्द्धन्नधि तिष्ठसि श्रितः समुद्रे ते हृदं

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

**यमप्स्वायुरपो दत्तो दधिम्भिन्त दिवस्पर्ज्ज न्यादन्तरिक्षात् पृथिव्यास्ततोनो वृष्ट्याव ५५**

भिन्तः। विश्वस्य। मूर्धन्। अधि। तिष्ठसि। तौ। हृदयं। समुद्रे। आयुः। अप्सु॥ दिवः। पर्जन्यात्। ततः। पृथिव्याः। अन्तरिक्षात्। वृष्ट्या। नः। अव। उदधिं। भिन्त। अपः। दत्ते॥ ५५

ओं विश्वस्येत्यस्य (शुनः शेष ऋषिः महापंक्ति जगती छन्दः अग्निर्देवता) १

**पदार्थः** हे अग्ने १ ब्रह्मांड में व्याप्त तुम २,३ स्वर्ग लोक में ४ सूर्य्य रूप से स्थित हो ५ तेरा ६ मध्य भाग ७ अन्तरिक्ष में है ८ जीवन ९ जलों में है १० स्वर्ग के ११ मेघ से १२ फिर १३ अन्तरिक्ष के १४ आकाश से १५ वर्षा द्वारा १६ हमको १७ रक्षा करौ १८ मेघ को १९ चीरो २० जलों को २१ दो॥ ५५॥

**अथाध्यात्मम्** – हे आत्माग्ने १ सुषुम्नानाड़ी में आश्रित तुम २,३ गगन मंडल में ४ स्थित हो ५ आप का ६ मध्य भाग ७ मन में है ८ अन्न ९ कमलान्तरिक्ष में है १० गगन मंडल के ११ मेघ से १२ फिर १३ हार्दान्तरिक्ष के १४ आकाश से १५ अमृत वर्षा द्वारा १६ हम को १७ रक्षा करौ १८ गगन मेघ को १९ चीरो २० अमृत जलों को २१ दो॥ ५५॥

**इष्टो यज्ञो भृगुभिराशीर्दा वसुभिः। तस्य न इष्टस्य प्रीतस्य द्रविणे हागमेः॥ ५६॥**

नः। इष्टस्य। प्रीतस्य। तस्य। द्रविणा। इह। आगमेः। आशीर्दाः। यज्ञः। भृगुभिः। वसुभिः। इष्टः॥ ५६॥

**अथाधिदैवम्** – होम के अंत में दो समिष्ट यजुषी का होम करता है उस का पहिला मंत्र

ओं इष्ट इत्यस्य (गालव ऋषिः उष्णिक् छन्दः यज्ञो देवता) १

**पदार्थः** १–५ हमारे वल्लभ इष्ट यज्ञ की हे यज्ञ लक्ष्मि ६ इस मेरे गृह में ७

आओ ८ जौ अभिलषित पदार्थों का दाता ८ यज्ञ १० भृगु गोत्री ब्राह्मणों ११ और वसु देवता ओं करके १२ संपादित हुआ ॥ ५६॥

**अथाध्यात्मम्** — वाक् आदि ऋत्विज कहते हैं १-५ हमारे पूजित हुए योग्य यज्ञ के हे योगी ऐश्वर्य ६ इस उत्थान अवस्था में ७ आओ जो ८ अभिलषित मोक्ष का दाता ८ योग यज्ञ १० आत्माग्नि के ज्वाला रूप हम वाक् आदि ऋत्विजों ११ और वास स्थान रूप कमलों से १२ संपादित हुआ ५६॥

**इष्टो अग्निराहुतः पिपर्त्तु न इष्टं हविः। स्वगे दन्देवेभ्यो नमः॥ ५७॥**

नः। हविः। इष्टं। इष्टः। अग्निः। आहुतः। इदम्। नमः। देवेभ्यः। पिपर्तु। स्वगा॥ ५७॥ अथाधिदैवम्-

ओं इष्ट इत्यस्य (गालव ऋषिः। गायत्री छन्दः। अग्निर्देवता) १

**पदार्थः**— १ हमारा २ हवि ३ सिद्ध हुआ ४,५ प्रिय अग्नि ६ सब और से ७ तृप्त हुआ वह ७ इस ८ हवि को ८ देवताओं के लिये १० दो ११ जौकि स्वर्ग में स्थित हैं॥ ५७॥

**अथाध्यात्मम्** १ हम योगियों का २ आत्म प्रति बिंब ३ संस्कृत हुआ ४,५ प्रिय आत्माग्नि ६ तृप्त हुआ वह ७ इस ८ हविरूप को ८ ब्रह्म परा महा नारायण के लिये १० दो ११ जौकि आत्माग्नि में स्थित हैं॥ ५७॥

**यदाकूतात्समसुस्रोद्धृदो वा मनसो वा सम्भृतम्। चक्षुषो वा। तदनु प्रेत सुकृतामु लोकं यत्र ऋषयो जग्मुः प्रथमजाः पुराणाः॥ ५८**

तत्। अनु। सुकृताम्। लोकं। उ। प्रेत। यत्। सम्भृतं। आकूतात्। वा। हृदः। वा। मनसः। वा। चक्षुषः। समसुस्रोत यत्र। प्रथमजाः। पुराणाः। ऋषयः। जग्मुः॥ ५८॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

अाठ सुवा हुति को होमता है उस का पहिला मंत्र

ओं यदा कूता दित्यस्य (विश्व कर्मा ऋषिः जगती छन्दः अग्निर्देवता) १

**पदार्थः**– हे ऋत्विजो १ उस कर्म को २ करके ३,४ पुण्य वान पुरुषों के लोक में ५ ही ६ जाओ ७ जोकि ८ सब सामग्री रखने वाला ९ और प्रजा पति के चित्त १० तथा ११ बुद्धि १२ और १३ मन १४ और १५ चक्षु आदि इन्द्रियों से १६ रचा गया १७ और जिस लोक में १८ प्रथमो त्पन्न १९ पुराण २० ऋषि २१ गये॥ ५८॥

**एतꣳ सधस्थ परि ते ददामि यमावहाच्छेवधिञ्जातवेदः। अन्वागन्ता यज्ञपतिर्वो अत्र तꣳ स्म जानीत परमे व्योमन्॥ ५९॥**

सधस्थ[1]। जातवेदः[2]। यम्[3]। शेवधिम्[4]। आवहात्[5]। एतम्[6]। ते[7]। परिदधामि। यज्ञपतिः। वः। अन्वागन्ता। अत्र। परमे। व्योमन्। तम्[15]। जानीत[16]॥ ५९॥

ओं एतमित्यस्य (विश्व कर्मा ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः अग्निर्देवता) १

**पदार्थः** १ हे स्वर्ग २ सर्वज्ञ अग्नि ने ३ जिस यजमान को ४ यज्ञ फल ५ प्राप्त कराया ६ इस यजमान को ७ तुझे ८ सौंपता हूं हे देवता ओ ९ यजमान १० ११ यज्ञ समाप्ति पर आप के पास आवेगा १२ इस १३,१४ स्वर्ग में १५ उस यजमान को १६ पालन करो॥ ५९॥

**अथाध्यात्मम्** १ हे परम धाम २ सर्वज्ञ ब्रह्माग्नि ने ३ जिस यजमान को ४ मोक्ष सुख के निधि योग यज्ञ का फल ५ प्राप्त कराया ६ इस आत्मा रूप यजमान को ७ तुझे ८ सौंपता हूं हे ब्रह्म परा महानारायणो ९ आत्मा रूप यजमान १० तुम्हारे ११ समीप आवेगा १२ इस १३,१४ परम धाम में १५ उसको १६ प्रेम दृष्टि से देखो॥ ५९॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

एतञ्जानाथ परमे व्योमन्देवाः सधस्था विद रूपमस्य। यदा गच्छात्पथिभिर्देवयानैरिष्टापूर्त्ते कृणवाथाविरस्मै ॥ ६०॥

परमे। व्योमन्। सधस्थाः। देवाः। एतम्। जानाथ। अस्य। रूपम्। विद। यदा। देवयानैः। पथिभिः। आगच्छात्। इष्टापूर्त्ते। अस्मै। आविः। कृणवाथ॥ ६०॥

ओं एतमित्यस्य (विश्वकर्मऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः अग्निर्देवता) १

पदार्थः १,२ स्वर्ग वा परम धाम में ३ साथ स्थित ४ देवता वा ब्रह्म परा महानारायण ५ इस यजमान को ६ जानो ७ इस के स्वरूप को ८ जानो १० जब ११,१२ देवयान मार्गों से १३ आओ तब १४ श्रौत स्मार्त्त कर्म के फल १५ इस यजमान के लिये १६,१७ प्रकट करो॥ ६०॥

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सꣳसृजेथामयञ्च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्विश्वे देवा यजमानश्च सीदत॥ ६१॥

येन वहसि सहस्रं येनाग्ने सर्ववेदसम्। तेनेमं यज्ञन्नो नय स्वर्देवेषु गन्तवे॥ ६२॥

इन की व्याख्या अध्याय १५ के मंत्र ५४ व ५५ में हो गई॥

प्रस्तरेण परिधिना स्रुचा वेद्या च बर्हिषा। ऋचेमं यज्ञन्नो नय स्वर्देवेषु गन्तवे॥ ६३॥

नः। प्रस्तरेण। परिधिना। स्रुचा। वेद्या। बर्हिषा। च। ऋचा। इमम्। यज्ञं। देवेषु। गन्तवे। स्वः। नय॥ ६३॥

अथाधिदेवम्

ओं प्रस्तरेणेत्यस्य (विश्वकर्मा ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः अग्निर्देवता) १

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

**पदार्थः** हे अग्ने१ हमारे२ स्रुक आधार रूप दर्भ मुष्टि३ तीनों परिधि रूप वाऊ मात्र काष्ठों४ जुव्हा आदि५ वेदी६ कुशा७ और८ वेदों के मंत्रों से उपलक्षित९ इस१० यज्ञ को ११ देवताओं को प्राप्त होने के लिये१२ स्वर्ग में १४ पहुंचाओ॥ ६३॥

**अथाध्यात्मम्** – हे आत्माग्ने१ हमारे२ भूतात्मा३ मन बुद्धि प्रतिबिंब४ वाक्५ मन भृकुटि६ प्राण७ और८ महा वाक् से उपलक्षित९ इस१० जीवात्मा को ११ ब्रह्मपर महा नारायण में १२ प्राप्त होने के लिये१३ परम धाम में १४ पहुंचाओ॥ ६३॥

**यद्दत्तं यत्परा दानं यत्पूर्त्तं याश्च दक्षिणाः। तदग्निर्वैश्वकर्म्मणः स्वर्द्देवेषु नो दधत्॥ ६४॥**

वैश्वकर्मणः। अग्निः। नः। तत्। स्वः। देवेषु। दधत्। यत्। दत्तम्। यत्। परादत्तं। यत्। पूर्त्तं। च। याः। दक्षिणाः॥ ६४

ओं प्रस्तरेणेत्यस्य (विश्वकर्मा ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः अग्निर्देवता) १

**पदार्थः** १,२ मानस सूर्य३ हम वाक् आदि ऋत्विजों के४ उस कर्म फल को५ स्वर्ग में ६ देवताओं के मध्य७ स्थापन करो८ जो भार्या पुत्र जामात भगिनी वहनोई आदि के लिये९ दिया१० जो ११ परोपकार के लिये दया आदि से अंधे दुखियों को दिया१२ जो१३ ब्राह्मण भोजन कूप बाग् आदि स्मार्त्त कर्म किया१४ और १५ जो १६ दक्षिणा दी॥ ६४॥

**यत्र धारा अनपेता मधोर्घृतस्य च याः। तदग्निर्वैश्वकर्म्मणः स्वर्द्देवेषु नो दधत्॥ ६५॥**

विश्वकर्मणः। अग्निः। तत्। स्वः देवेषु नः दधत्। यत्र। मधोः। घृतस्य। च याः। धाराः। अनपेताः॥ ६५॥

ओं प्रस्तरेणेत्यस्य (विश्वकर्मा ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः अग्निर्देवता) १

**पदार्थः** – १,२ मानस सूर्य ३,४ उस स्वर्ग वा महानारायण लोक में ५ देवताओं वा ब्रह्मपरा महानारायण के मध्य ६ हम वा क आदि ऋत्विजों को ७ स्थापन करो ८ जिस लोक में ९,१० मधुर रस वा ज्ञान रस के ११ समूह १२ धारा रूप १३ और पूर्ण वर्त्तमान हैं॥ ६५॥

**अग्निरस्मि जन्मना जातवेदा घृतम्मे चक्षुरमृतम्म आसन्। अर्कस्त्रिधातू रजसो विमानोऽजस्रो घर्म्मो हविरस्मि नाम॥ ६६॥**

जातवेदाः। अर्कः। त्रिधातुः। रजसः। विमानः। अजस्रः। अग्निः। जन्मना। अस्मि। मे। चक्षुः। घृतम्। मे। आसम्। अमृतम्। घर्मः। नाम। हविः। अस्मि॥ ६६॥

ॐ अग्निरित्यस्य (देवश्रवादेववात ऋषिः· त्रिष्टुप् छन्दः· अग्निर्देवता) १

**पदार्थः** – यजमान आप को अग्नि रूप मान कर कहता है १ सब सृष्टि का स्वामी २ पूज्य ३ त्रिदेव रूप धातु वाला ४,५ ब्रह्मांड वा जल अथवा आत्म प्रति बिंद रूप ज्योति का रचने वाला ६ अविनाशी ७ आत्माग्नि जो है वह ८ योग संस्कार से ९ मैं हूं १० मेरी ११ चक्षु आदि इन्द्रिय समूह १२ घृत हैं १३ मेरे १४ मुख में १५ जीव रूप हवि है १६ मैं व्यष्टि समष्टि रूप सूर्य १७ नाम १८ हवि १९ हूं॥ ६६॥

**ऋचो नामास्मि यजूꣳषि नामास्मि सामानि नामास्मि। येऽअग्नयः पाञ्चजन्याऽअस्यां पृथिव्यामधि तेषामसि त्वमुत्तमः प्रनो जीवातवे सुव॥ ६७॥**

ऋचः। नाम। अस्मि। यजूंषि। नाम। अस्मि। सामानि। नाम। अस्मि। अस्याम्। पृथिव्याम्। अधि। ये। पाञ्चजन्याः। अग्नयः। तेषाम्। त्वम्। उत्तमः। असि। नः। जीवातये। प्रसव॥ ६७

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

ओं ऋस्च इत्यस्य (देवश्रवा देव वात ऋषिः आर्षीजगती छन्दः आत्मा देवता)१

**पदार्थः** १ मैं ऋग्वेद २ नाम ३ हूं ४ यजुर्वेद ५ नाम ६ हूं ७ साम वेद ८ नाम ९ हूं हे नित्य अग्ने अथवा आत्माग्ने १०,११ इस पृथिवी वा देह के १२ ऊपर वा मध्य में १३ जो १४ पांच मनुष्य पांच चिति वा पांच प्राणों के लिये हितकारी १५ अग्नि अथवा इन्द्रिय आत्मा प्रति विंव रूप वर्त्तमान हैं १६ उनके मध्य १७ तुम १८ श्रेष्ठ १९ हो इस कारण २० हम वा क आदि ऋत्विजों को २१ चिरजीवन वा अमर होने के लिये २२ प्रेरणा करो॥६७॥

वार्त्रहत्याय शवसे पृतनाषाह्याय च। इन्द्र त्वा वर्त्तयामसि॥६८॥

इन्द्र। वार्त्रहत्याय। च। पृतनाषाह्याय। शवसे। त्वा। आवर्त्तयामसि॥६८॥

मृति का पूरण के पीछे इस चिति का उपस्थान करता है उस का पहिला मंत्र १

ओं वार्त्रहत्यायेत्यस्य (विश्वामित्र ऋषिः निचृद्गायत्री छन्दः इन्द्रो देवता)१

**पदार्थः** ईश्वर का उपस्थान १ हे ईश्वर २ पापनाश में समर्थ ३ और ४ शत्रु सेना का पराभव में समर्थ ५ बल के लिये ६,७ हम तेरा उपस्थान करते हैं ६८

सहदानुम्पुरुहूत क्षियन्तमहस्तमिन्द्र सम्पिणक् कुणारुम्। अभि वृत्रं वर्द्धमानम्पियारुमपादमिन्द्र तवसा जघन्थ॥७०॥

पुरुहूत। इन्द्र। क्षियन्तं। कुणारुम्। सहदानुम्। अहस्तम्। सम्पिणक्। इन्द्र। वर्धमानं। पियारुं। वृत्रं। अपादं। तवसा। अभिजघन्थ॥६९॥

ओं सहदानुमित्यस्य (विश्वामित्र ऋषिः आर्षीत्रिष्टुप् छन्दः इन्द्रो देवता)१

**पदार्थः** १ बहुत भक्तों से आह्वान किये हुए २ हे परमेश्वर ३ निकट वसने

वाले ४ दुर्वचन कहने वाले ५ शत्रु वा काम को ६ हस्त हीन करके ७ चूर्ण करो ८ हे परमेश्वर ९ बढ़ने वाले १० और मारने वाले ११ पाप को १२ पाद हीन करके १३ बल से १४ नाश करो ॥ ६९॥

**वि न इन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः । यो अस्माँ२॥ अभिदासत्यधरं गमया तमः ७०**

इसकी व्याख्या अध्याय ८ मंत्र ४४ में हो गई ॥

**मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आजगन्था परस्याः । सृकं सं शाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून्ताढि वि मृधो नुदस्व ७१**

[1]इन्द्र । [2]मृगः । [3]भीमः । [4]कुचरः । [5]न । [6]गिरिष्ठाः । [7]अपरस्याः । [8]परावतः । [9]आजगन्थ । [10]सृकम् । [11]तिग्मम् । [12]पविम् । [13]संशाय । [14]शत्रून् । [15]विताढि । [16]मृधः । [17]वितुदस्व ॥ ७१ ॥

ओं विन इन्द्रेत्यस्य (जयऋषिः- त्रिष्टुप् छन्दः इन्द्रो देवता) १

**पदार्थः** १ हे परमेश्वर २ वराह नृसिंह रूप से मृग स्वरूप ३ राम कृष्ण परशुराम कल्कि रूप से असुरों के भय दाता ४ मत्स्य कूर्म रूप से जलचर ५ और ६ वामन रूप से वेद वचन में स्थित तुम ७ अपरा माया से पृथक् ८ परा शक्तिधारी ब्रह्म से ९ प्रकट हुए हो १० शत्रु शरीर में प्रवेश करने वाले ११ उत्साहवान १२ असुरों के बध में भी शुद्ध सुदर्शन परशु आदि शस्त्र समूह को १३ तीक्ष्ण करके १४ शत्रुओं को १५ विशेष ताड़न करो १६ पाप को १७ दूर करो। ७१

**वैश्वानरो न ऊतय आ प्रयातु परावतः । अग्निर्नः सुष्टुतीरुप ७२**

[1]वैश्वानरः । [2]अग्निः । [3]नः । [4]सुष्टुतीः । [5]उप । [6]नः । [7]ऊतये । [8]परावतः प्रयातु ॥ ७२ ॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

ओं वैश्वानर इत्यस्य (जय ऋषिः गायत्री छन्दः वैश्वानरो देवता) १

**पदार्थ** १ सब नरों का हितकारी २ अग्नि ३ हमारी ४ शुभ स्तुतियों के ५ सुन्ने ६ और हमारी ७ रक्षा के लिये ८ पराशक्ति वाले ब्रह्म से ९ प्रगट हो ॥ ७२॥

**पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः पृथिव्यां पृष्टो विश्वा ओषधीरा विवेश। वैश्वानरः सहसा पृष्टो अग्निः स नो दिवा स रिषस्पातु नक्तम् ७३**

वैश्वानरः। अग्निः। दिवि। पृष्टः। पृथिव्याम्। पृष्टः। विश्वाः। ओषधीः। आ। विवेश। सः। पृष्टः। सहसा। पृष्टः। सः। अयम्। दिवा। नक्तं। नः। रिषः। पातु॥ ७३॥

ओं पृष्ट इत्यस्य (कुत्स ऋषिः- त्रिष्टुप् छन्दः- वैश्वानरो देवता) १

**पदार्थः** १ सब नरों का हितकारी २ अग्नि ३ स्वर्ग लोक में ४ मोक्ष के इच्छा रखने वालों से पूछा गया, यह कौन है जो सूर्य रूप से प्रकाश करता है ५ अन्तरिक्ष लोक में ६ पूछा गया यह कौन है जो विजली रूप से स्थित है जो ७ सब ८ ओषधियों में ९ प्रवेश हुआ १० वह ११ पूछा गया, यह कौन है जो जीवन के हेतु ताप, पाक प्रकाशों से प्रजा का उपकार करता है जो १२ अध्वर्यु केवल से मथा हुआ १३ मनुष्यों से पूछा गया, यह कौन अरणी काष्ठ से निकाला जाता है १४ वह १५ यह ब्रह्म रूप वैश्वानर अग्नि १६, १७ दिन रात १८ हमको १९ पाप से २० रक्षा करे ७३

**अश्याम तं काममग्ने तवोती अश्याम रयिं रयिवः सुवीरम्। अश्याम वाजमभि वाजयन्तो ऽश्याम द्युम्नमजराजरं ते ७४**

अग्ने। तव। ऊती। तम्। कामम्। अश्याम। रयिवः। सुवीरं। रयिम्। अश्याम। वाजयन्तः। वाजम्। अभि। अश्याम। अजर। ते। अजरम्। द्युम्नम्। अश्याम॥ ७४॥

ओं अस्यामेत्यस्य (भरद्वाजऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः अग्निर्देवता) १

**पदार्थः** १ हे अग्ने वा आत्माग्ने २ तेरे ३ रक्षण वा पालन से हम ४ उस ५ अभिलाष को ६ पावें ७ हे धन वान वा छै एश्वर्य से युक्त ८ पुत्र सहित बड़े बल वान ९ धन वा योगधन को १० हम पावें ११ तुझे पूजते हम १२ अन्न को १३ सब ओर से १४ प्राप्त करें १५ हे जरारहित १६ तेरे १७ अक्षीण १८ यश को १९ प्राप्त करें॥७४॥

**वयन्तेऽअद्यररिमाहि काममुत्तानहस्तानमसोपसद्य। यजिष्ठेनमनसायक्षिदेवानस्त्रेधतामन्मनाविप्रोऽअग्ने ७५॥**

अग्ने। उत्तानहस्ताः। वयम्। ममसा। उपसद्य। अद्य। यजिष्ठेन। अस्त्रेधता। मन्मना। मनसा। कामं। हविः। नोहि। ररिम। विप्रः। देवान्। यक्षि॥७५॥

ओं वयन्त इत्यस्य (उत्कील ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः अग्निर्देवता) १

**पदार्थः** १ हे अग्ने वा आत्माग्ने २ कृपणता को त्यागने वाले ३ हम भूतात्मा ४ नमस्कार के साथ ५ समीप आकर ६ अब ७ त्याग में तत्पर ८ एकाग्र ९ ब्रह्मज्ञानी १० मन के साथ ११, १२ ईप्सित हवि वा आत्म प्रति विंब को १३ तेरे लिये १४ ही १५ देते हैं १६ वेदा धारतम १७ देवता ओं वा ब्रह्म परमहा नारायण को १८ तृप्त करो॥७५॥

**धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः। सचेतसो विश्वे देवा यज्ञम्प्रावन्तु नः शुभे॥७६॥**

धामच्छत्। देवः। अग्निः। इन्द्रः। ब्रह्मा। बृहस्पतिः। सचेतसः। विश्वे। देवाः। नः। यज्ञं। शुभे। प्र। अवन्तु॥७६॥

ओं धामच्छदित्यस्य (उत्कील ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः विश्वे देवा देवता) १

**पदार्थः** १ लोकों का आच्छादन करने वाला २, ३ देवता अग्नि ४, इन्द्र ५

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

ब्रह्मा ६ बृहस्पति ७ और ज्ञानी ८, ९ सब देवता १० हमारे ११ यज्ञ की १२ इष्ट-स्थान स्वर्ग में १३ भलेप्रकार रक्षा करो ॥ ७६ ॥

**अथाध्यात्मम्**- वाक् आदि ऋत्विज प्रार्थना करते हैं १ अपने तेज से ब्रह्मांड का ढकने वाला २ नाना प्रकार के अवतारों से क्रीड़ा करने वाला ३ ब्रह्माग्नि ४ ईश्वर ५ ब्रह्मा ६ ब्रह्मांड का स्वामी विष्णु ७ समान चित्त वाले ८ ९ सब देवता १० हमारे ११ यजमान को १२ ब्रह्मलोक वा परम धाम में १३ रक्षा करो ॥ ७६ ॥

**त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄः पाहि शृणुधी गिरः। रक्षा तोकमुत त्मना ॥ ७७ ॥**

इस मंत्र की व्याख्या अध्याय १३ मंत्र ५२ में हो गई ॥ ७७ ॥

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म कृते शुक्ल यजुर्वेदीय ब्रह्मभाष्ये वसोर्धारादि चित्युपस्थानान्त नामाष्टादशोऽध्यायः १८

**स्वाद्वीं त्वा स्वादुना तीव्रां तीव्रेणामृताममृतेन मधुमतीं मधुमता सृजामि सᳬ सोमेन। सोमोऽस्यश्विभ्यां पच्यस्व सरस्वत्यै पच्यस्वेन्द्राय सुत्राम्णे पच्यस्व ॥ १ ॥**

स्वाद्वीम्[1]। तीव्राम्[2]। अमृताम्[3]। मधुमतीम्[4]। त्वा[5]। स्वादुना[6]। तीव्रेण[7]। अमृतेन[8]। मधुमता[9]। सोमेन[10]। सं सृजामि[11]। सोमः[12]। असि[13]। अश्विभ्याम्[14]। पच्यस्व[15]। सरस्वत्यै[16]। पच्यस्व। सुत्राम्णे[18]। इन्द्राय[19]। पच्यस्व[20] ॥ १ ॥

**अथाधिदैवम्**- अब सौत्रामणी यज्ञ के मंत्र उ अध्याय में कहे जाते हैं ओदनों को चूर्ण किए सर के साथ मिला कर ३ रात्रि का स्थापन करता है उसके मंत्र ॥

ओं स्वाद्वीमित्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः सुरारूपः सोमो देवता) १
ओं सोमो सीत्यस्य ( तथा दैव्युष्णिक् छन्दः सुरा देवता) २
ओं अश्विभ्यामित्यस्य ( तथा गायत्री छन्दः तथा ) ३
ओं सरस्वत्या इत्यस्य ( तथा उष्णिक् छन्दः तथा ) ४
ओं इन्द्रा येत्यस्य ( तथा बृहती छन्दः तथा ) ५

**पदार्थः**- हे सुरा १ मीठे रस वाली २ शीघ्र मद उत्पन्न करने वाली ३ अमृत तुल्य ४ मधुर स्वाद से युक्त ५ तुझ को ६ मीठे ७ कटु रस वाले ८ सुधा तुल्य ९ मधुर स्वादु वाले १० सोम से ११ संयुक्त करता हूं हे सुरा तुम १२ सोम ही १३ हो १४ अश्विनी कुमारों के लिये १५ रूप को बदलो १६ सरस्वती के लिये १७ रूप को बदलो १८ रक्षा करने वाले १९ इन्द्र के लिये २० रूपांतर करो अर्थात् सोमभाव को प्राप्त करो॥ १॥

**अथाध्यात्मम्**- जो उत्थान अवस्था में आत्म प्रति विंव तमो गुणी हो जाय उसके प्रायश्चित्त को कहते हैं हे तमो रूप आत्म प्रति विंव शक्ति १ मिष्ट रस वाली २ में ब्रह्म हूं इस भाव की उत्पन्न करने वाली ३ अमृत तुल्य ४ ब्रह्म ज्ञान से युक्त ५ तुझ को ६ मिष्ट ७ तीव्र प्रकाशमान ८ अविनाशी ९ ज्ञानी १० समष्टि सूर्य से ११ संयुक्त करता हूं तुम १२ सूर्य रूप १३ हो १४ नरनारायण के लिये १५ शुद्ध हो १६ महा वाक् के लिये १७ शुद्ध हो १८ रक्षक १९ महानारायण के लिये २० शुद्ध हो॥ १॥

**परीतो षिञ्चता सुतꣳ सोमो य उत्तमꣳ हविः। दधन्वायो नर्य्यो अप्स्वन्तरा सुषाव सोममद्रिभिः॥२॥**

यः। सोमः। उत्तमम्। हविः। वा। यः। नर्यः। दधन्। अप्सु। अन्तः। सोमम्। अद्रिभिः। आसुषाव। सुतम्। इतः। परिषिञ्चत॥ २

**अथाधिदैवम्**- गौ के दुग्ध से सुरा को सींचता है और उसमें शाष्प चूर्णा-

को डालता है दूसरे दिन सुरा को दुग्ध से सींच कर उसमें तोक्म चूर्ण को डालता है तीसरे दिन दूध से सींच कर लाज चूर्ण को डालता है उसका मंत्र १

ओं परीत इत्यस्य (भरद्वाज ऋषिः बृहती छन्दः सोमो देवता) १

**पदार्थः** हे ऋत्विजो १ जो २ सोम ३ श्रेष्ठ ४ हवि है ५ अथवा ६ जिसने ७ नरों के हितकारी होते हुए ८ यजमान को धारण किया और अध्वर्यु ने ९,१० जलों में वर्त्तमान जिस ११ सोम को १२ पाषाणों से १३ अभिषवण किया (निकाला) १४ उस अभिषुत सोम को १५ द्रुस गो दुग्ध से १६ सींचो॥२॥

**अथाध्यात्मम्** – हे वाक् आदि ऋत्विजो १ जो २ आत्म प्रतिबिंब ३ श्रेष्ठ ४ हवि है ५ अथवा ६ जिस ७ ब्रह्मा विष्णु महेश की सायुज्यता के योग्य ने ८ देह को धारण किया और ज्ञानचक्षु ने ९,१० देहान्तरिक्षों के मध्य वर्त्तमान ११ जिस आत्मप्रतिबिंब को १२ प्राणों के द्वारा १३ अभिषवण किया १४ उस अभिषुत आत्मप्रतिबिंब को १५ इन्द्रिय शक्तिरूप दुग्ध से १६ सींचो॥२॥

**वायोः पूतः पवित्रेण प्रत्यङ् क्सोमो अतिद्रुतः। इन्द्रस्य युज्यस्सखा। वायोः पूतः पवित्रेण प्राङ् क्सोमो अतिद्रुतः। इन्द्रस्य युज्यः सखा ३**

प्रत्यङ्।१ अतिद्रुतः।२ सोमः।३ वायोः।४ पवित्रेण।५ पूतः।६ इन्द्रस्य।७ युज्यः।८ सखा।९ प्राङ्।१० अतिद्रुतः।११ सोमः।१२ वायोः।१३ पवित्रेण।१४ पूतः।१५ इन्द्रस्य।१६ युज्यः।१७ सखा॥१८ ३॥

**अथाधिदैवम्** – पालाश पात्र में गो घोड़े के बालों के पवित्रा से सुरा को पवित्र करता है उसके मंत्र॥

ओं वायोरिति मंत्रयोः (आभूतिर्ऋषिः गायत्री छन्दः सोमो देवता) १

**पदार्थः** १ अधोमुख २ निकला हुआ ३ सोम ४ वायु के ५ पवित्रा से ६ शुद्ध हुआ जो कि ७ इन्द्र का ८ योग के योग्य ९ सखा है १० पूर्वमुख ११ निकला

द्रुआ १२ सोम १३ वायु के १४ पवित्रा से १५ शुद्ध हुआ जोकि १६ इन्द्र का १७ योग के योग्य १८ सखा है॥ ३॥

**अथाध्यात्मम्** १ सुषुम्णा नाड़ी से पश्चिम मुख २ आत्मा को उलंघन कर निकला हुआ ३ आत्मप्रति विंव ४,५ प्राण के पवित्रा से ६ शुद्ध हुआ जोकि ७ आत्मा का ८ योग के योग्य ९ सखा है १० पूर्व मुख ११ आत्मा को उलंघन कर निकला हुआ १२ आत्म प्रतिविंव १३,१४ प्राण के पवित्रा से १५ शुद्ध हुआ जोकि १६ अंतर्यामी ईश्वर का १७ योग के योग्य १८ सखा है॥ ३॥

**पुनाति ते परि स्रुत थं सोम थं सूर्य्यस्य दुहिता। वारेण शश्वता तना॥ ४॥**

**सूर्यस्य। दुहिता। ते। परिस्रुतम्। सोमम्। शश्वता। तना। वारेण। पुनाति॥ ४॥** **अथाधिदैवम्**-

ॐ वायोरिति मंत्रयोः (आभूतिर्ऋषिः- गायत्री छन्दः- सोमो देवता) १

**पदार्थः**- हे यजमान १,२ सूर्य्य की पुत्री श्रद्धा ३ तेरे ४ सुरा रूप ५ सोम को ६ अनादि ७ धन की उत्पत्ति के कारण ८ गौ घोड़ों के वालों के पवित्रा से ९ शुद्ध करती है॥ ४॥

**अथाध्यात्मम्**- हे आत्म रूप यजमान १ महानारायण की २ पुत्री महावाक् ३ तेरे ४ तमो रूप ५ आत्म प्रति विंव को ६ अनादि ७ और योग धन की उत्पत्ति के कारण ८ प्राण यज्ञ क्रिया और ज्ञानाग्नि के समूह से ९ पवित्र करती हैं ४

**ब्रह्म क्षत्रम्पवते तेज इन्द्रिय थं सुरया सोमः सुत आसुतो मदाय। शुक्रेण देव देवताः पिपृग्धि रसेनान्नं यजमानाय धेहि॥ ५॥**

**देव। शुक्रेण। देवताः। पिपृग्धि। रसेन। अन्नम्। यजमानाय। धेहि। सोमः। सुतः। ब्रह्म। क्षत्रं। तेजः। इन्द्रियं। पवते। सुरया।**

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

आसुतः। मदाय॥ ५॥

**अथाधिदेवम्**- अज मेष के लोम से रचित पवित्रा द्वारा वेतस पात्र में उत्तर दिशा के बीच दुग्ध को पवित्र करता है उसका मंत्र १

ओं ब्रह्म क्षत्र मित्यस्य (आभूतिर्ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः सुरा सोमौ देवते) १

**पदार्थः** १ हे सोम देवता तुम २ शुद्ध बल से ३ अग्नि आदि देवताओं को ४ तृप्त करो ५ घृत आदि सहित ६ अन्न को ७ यजमान के लिये ८ दो जिस कारण ९ सोम १० अभिषुत होता ११ ब्राह्मण १२ क्षत्री १३ कांति १४ सामर्थ्य को १५ उत्पन्न करता है १६ और सुरा के साथ १७ अभिषवण किया हुआ १८ मद के लिये होता है॥ ५॥

**अथाध्यात्मम्**- १ हे आत्मप्रतिबिंब तुम २ अपने शुद्ध बल से ३ ब्रह्म परमहानारायण को ४ तृप्त करो ५ अमृत रस के साथ ६ विराट् रूप अन्न को ७ आत्मा रूप यजमान के लिये ८ दो जिस कारण ९ आत्मप्रतिबिंब १० अभिषुत होता ११ मन १२ प्राण १३ कांति १४ और इन्द्रिय समूह को १५ शोधन करता है १६ तम से १७ पृथक् किया हुआ आत्मप्रतिबिंब १८ मैं ब्रह्म हूं इस मद के लिये होता है॥ ५॥

**कुविदङ्ग यवमन्तो यवंचिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय। इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नमउक्तिं यजन्ति। उपयामगृहीतोस्यश्विभ्यान्त्वा सरस्वत्यै त्वेन्द्राय त्वा सुत्राम्णऽएष ते योनिस्तेजसे त्वा वीर्य्याय त्वा बलाय त्वा॥ ६॥**

कुवित्। अङ्ग। चित्। यथा। इह। यवमन्तः। यवम्। अनुपूर्वम्। वियूय। दान्ति। इह। एषाम्। भोजनानि। कृणुहि। ये। बर्हिषः। नमः। उक्तिं। यजन्ति। उपयामगृहीतः। असि।

अश्विभ्याम्। त्वा। सरस्वत्यै। त्वा। सुत्राम्णे। इन्द्राय। त्वा एषः। ते। योनिः। तेजसे। त्वा। वीर्य्याय। त्वा। बलाय। त्वा। ६

**अथाधिदैवम्**- इस प्रकार सुरा और दुग्ध को पवित्र करके तीन पयोग्रह को ग्रहण करता है उसका मंत्र-

ओं कुविदित्यस्य (काक्षीवतसुकीर्त्तिर्ऋषिः विराट्पंक्तिश्छन्दः सोमो देवता) १

**पदार्थः** १ हे यज्ञ भूमि को भासर मनसे देवता के अर्पित ३ चैतन्य विशिष्ट सोम ४ जिस प्रकार ५ इस लोक में ६ बहुत अन्न वाले किसान ७ अन्न को ८ क्रम पूर्वक ९ पृथक् करके १० लुनते हैं उसी प्रकार ११ इस यज्ञ में १२ इन ऋत्विजों के १३ भोजन पदार्थों को १४ बनाओ १५ जो ऋत्विज १६ कुशासन पर बैठे हुए १७ हविरूप अन्न को १८ मंत्र पूर्वक १९ होमते हैं हे सोम तुम २० उपयाम पात्र से गृहीत २१ हो २२ अश्विनी कुमारों के लिये २३ तुझे ग्रहण करता हूं २४ सरस्वती के लिये २५ तुझे ग्रहण करता हूं २६ रक्षक २७ इन्द्र के लिये २८ तुझे ग्रहण करता हूं २९ यह ३० तेरा ३१ स्थान है ३२ तेज के लिये ३३ तुझे सम्पादन करता हूं ३४ वीर्य के लिये ३५ तुझे सादन करता हूं ३६ बल के लिये ३७ तुझे सादन करता हूं उन को क्रम पूर्वक अश्वत्थ उदुम्बर न्यग्रोध के पात्रों से ग्रहण करना चाहिये॥ ६॥

**अथाध्यात्मम्**– १ हे योग भूमि के ज्ञाता २ महा नारायण के अर्पित ३ चिद्धातु आत्म प्रति बिंब ४ जिस प्रकार ५ इस लोक में ६ किसान लोग ७ अन्न को ८ क्रम पूर्वक ९ पृथक् करके १० लुनते हैं उसी प्रकार ११ इस योग यज्ञ में १२ इन वाक् आदि ऋत्विजों के १३ भोजन महा वाक् रूप को १४ बनाओ १५ जो वाक् आदि १६ अपने स्थान में स्थित होते १७ हविरूप १८ वाक् को १९ होमते हैं अर्थात् ब्रह्म यज्ञ को करते हैं आत्म प्रति बिंब तुम २० परा शक्ति से गृहीत २१ हो २२ नर नारायण के लिये २३ तुझे ग्रहण करता हूं २४ महा वागभिमा

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

नीदेवी के लिये २५ तुम्हें ग्रहण करता हूं २६ क्षेश रक्षक २७ महानारायण के लिये २८ तुम्हें ग्रहण करता हूं २९ यह परा शक्ति ३० तेरा ३१ स्थान है ३२ तेज के लिये ३३ तुम्हें सादन करता हूं ३४ योग वीर्य के लिये ३५ तुम्हें सादन करता हूं ३६ योग बल के लिये ३७ तुम्हें सादन करता हूं ॥ ६॥

**नाना हि वान्देव हितं सदस्कृतम्मा संसृक्षाथाम्परमे व्योमन्। सुरा त्वमसि शुष्मिणी सोम एष मा मा हिंसीः स्वां योनिमाविशन्ती ७**

**नाना। हि। वाम्। देवहितं। सदः। कृतम्। मा। संसृक्षाथां। परमे। व्योमन्। सुरा। त्वम्। असि। शुष्मिणी। सोमः। एषः। मा। मा। हिंसीः। स्वाम्। योनिम्। आविशन्ती॥ ७।**

**अथाधिदैवम्-** मिट्टी की थालियों के द्वारा तीन सुरा ग्रहों को धारण करता है उसका मंत्र-

ओं नाना हीत्यस्य (आभूतिर्ऋषिः- जगती छन्दः- सुरा सोमौ देवते) १

**पदार्थः-** हे सुरा सोम १ जिस कारण २ तुम दोनों का ३ देवता ओं से स्थापित ४ पृथक ५ स्थान ६ रच्चा गया क्योंकि सुरा सोम की दो वेदी होती हैं इस कारण ७ उत्कृष्ट ८ और आकाश की समान विशाल हवन स्थान में तुम दोनों ९,१० मिलाप मत करो क्योंकि आहवनीय में दुग्ध और दक्षिणाग्नि में सुरा होमी जाती है इस प्रकार दोनों से कह कर सुरा से कहते हैं कि हे सुरा ११ तुम १२ बलवती १३ सुरा १४ हो १५ यह १६ सोम है १७ मायारूप तुम १८ अपने १९ स्थान में २० प्रवेश करती २१ सोम को २२,२३ मत मारो ७

**अथाध्यात्मम्** - हे देह सहित आत्म प्रतिबिंब १ जिस कारण २ तुम दोनों का ३ ईश निर्मित ४ पृथक ५ स्थान ६ रच्चा गया उस कारण ७,८ गगन मंडल में ९,१० परस्पर मिलापन करो हे देह ११ तुम १२ बलवती-

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

१३ और विषय मद को उत्पन्न करने वाली १४ हो १५ यह आत्म प्रति विंब- १६ अमृत है १७ माया रूप तुम १८,१९ अपने उत्पत्ति स्थान में २० प्रवेश करती २१ आत्म प्रति विंब को २२,२३ संसार बंधन से मत नष्ट करो ॥ ७॥

**उपयाम गृहीतोऽस्याश्विनन्तेजः सारस्वतं वीर्य मैन्द्रम् वलम्। एषते योनि र्मोदाय त्वानन्दाय त्वा महसेत्त्वा॥ ८॥**

आश्विनं[1]। तेजः[2]। सारस्वतम्[3]। वीर्यम्[4]। ऐन्द्रम्[5]। वलम्[6]। उपयाम गृहीतः[7]। असि[8]। एषः[9]। ते[10]। योनिः[11]। मोदाय[12]। त्वा[13]। आनन्दाय[14]। त्वा[15]। महसे[16]। त्वा[17]॥ ८॥

**अथाधिदेवम्-**

ॐ उपयाम गृहीत इत्यस्य (आभूतिर्ऋषिः निचृदार्षीपंक्तिश्छंदः सोमो देवता) १

**पदार्थः**– हे सुरा सोम समूह १,२ अश्वि देवता सम्वंधी तेज ३ सरस्वती संबंधी ४ सामर्थ्य ५ और इन्द्र सम्वंधी ६ वल तुम ७ उपयाम पात्र से गृहीत ८ हो ९ वह १० तेरा ११ स्थान है १२ प्रमोद के लिये १३ तुझे सादन करता हूं १४ हर्ष के लिये १५ तुझे सादन करता हूं १६ महत्व के लिये १७ तुझे सादन करता हूं ८

**अथाध्यात्मम्**– हे प्राण युक्त देह १ नरनारायण सम्वंधी २ तेज ३ और महा वागभिमानी देवी सम्वंधी ४ सामर्थ्य ५ और महा नारायण सम्वंधी ६ वल तुम ७ परा शक्ति से गृहीत ८ हो ९ यह परा शक्ति १० तेरा ११ स्थान है १२ संसार दुःख निवृत्ति के लिये १३ तुझे सादन करता है १४ ब्रह्मानंद के लिये १५ तुझे सादन करता हूं १६ योगैश्वर्य के लिये १७ तुझे सादन करता हूं ८

**तेजोऽसि तेजो मयि धेहि वीर्य्यमसि वीर्य्यं मयि धेहि वलमसि वलम्मयि धेह्योजोस्योजो मयि धेहि मन्युरसि मन्युं मयि धेहि सहोऽसि सहो मयि धेहि** ९

तेजः। असि। मयि। तेजः। धेहि। वीर्यम्। असि। मयि। वीर्यं। धेहि। बलम्। असि। मयि। बलम्। धेहि। ओजः। असि। मयि। ओजः। धेहि। मन्युः। असि। मयि। मन्युः। धेहि। सहः। असि। मयि। सहः। धेहि ॥९॥

दो कुशा को पात्र के ऊपर करके गोधूम और स्थूल बदरी फल के चूर्ण को एक साथ दुग्ध में डालता है उसका मंत्र १ इन्द्र जौ स्थूल बदरी फल के चूर्ण को सारस्वत नाम पयोग्रह में डालता है उसका मंत्र २ यव स्थूल बदरी फल के चूर्ण को इन्द्र के पयोग्रह में डालता है उसका मंत्र ३ वृक आदि के बालों से सुराग्रहों को युक्त करता है उसके मंत्र ४,५

ओं १, ६ मंत्रयोः (आभूतिर्ऋषिः आसुरी जगती छन्दः सुरासोमौ देवते) १
ओं २,३,५ मंत्राणां ( तथा आसुरी त्रिष्टुप् छन्दः तथा )
ओं ओजो सीत्यस्य ( तथा प्राजापत्याऽनुष्टुप् छन्दः सुरा देवता)

**पदार्थः** – हे दुग्ध अथवा हे प्राण तुम १ तेज २ हो ३ मुझ में ४ तेज को ५ स्थापन करो ६ वीर्य ७ हो ८ मुझ में ९ सामर्थ्य को १० धारण करो ११ बल १२ हो १३ मुझ में १४ बल को १५ धारण करो हे सुरा अथवा हे शरीर तुम १६ कांति १७ हो १८ मुझ में १९ कान्ति को २० धारण करो २१ अहंकार २२ हो २३ मुझ में २४ अहंकार को २५ धारण करो २६ बल २७ हो २८ मुझ में २९ बल को ३० धारण करो ॥९॥

**याव्याघ्रंविषूचिकोभौवृकञ्चरक्षति श्येनम्पतत्रिणᳬं सिᳬंहᳬं सेमम्पात्वᳬंहसः ॥१०॥**

या। विषूचिका। व्याघ्रं। च। वृकम्। उभौ। रक्षति। श्येनम्। पतत्रिणᳬं। सिंहम्। सा। इमम्। अंहसः। पातु ॥१०॥

**अथाधिदैवम्**- अध्वर्यु और प्रति प्रस्थाता यजमान को श्येन पिच्छों

से नाभि के ऊपर और नीचे पवित्र करते हैं उस का मंत्र·

ओं या व्याघ्रमित्यस्य (हैमवर्चिर्ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः विषूचिका देवता) १

**पदार्थः** १ जो २ विषूचिका नाम रोग विशेष ३ व्याघ्र ४ और ५ वृक ६ दोनों को ७ रक्षा करती है तथा ८ श्येन ९ पक्षी १० और सिंह को रक्षा करती है ११ वह १२ इस यजमान को १३ व्याधि के कारण पाप से १४ रक्षा करो॥ १०॥

**अथाध्यात्मम्** १ जो २ सर्व व्यापिनी परा शक्ति ३ प्राण ४ और ५ अपान ६ दोनों को ७ रक्षा करती है तथा ८,९ जीवात्मा १० और उदान को रक्षा करती है ११ वह परा शक्ति १२ इस आत्म प्रति बिंब को १३ संसार बंधन रूप पाप से १४ रक्षा करो॥ १०॥

**यदापिपेष मातरम्पुत्रः प्रमुदितो धयन्। एतत्तदग्ने अनृणो भवाम्यहतौ पितरौ मया। सम्पृच स्थ सम्मा भद्रेण पृङ्क्त विपृच स्थ वि मा पाप्मना पृङ्क्त॥ ११॥**

प्रमुदितः। धयन्। अहम्। यत्। मातरम्। आपिपेष। अग्ने। तत्। एतत्। अनृणः। भवामि। मया। पितरौ। अहतौ। सम्पृचः। स्थ। मा। भद्रेण। सम्पृङ्क्त। विपृचः। स्थ। मा। पाप्मना। विपृङ्क्त॥ ११॥

**अथाधिदैवम्**– अध्वर्यु यजमान को अग्नि का दर्शन कराता है और वह उत्तर वेदी के अग्नि का दर्शन करता है उस का मंत्र १ यजमान पयो ग्रहों का स्पर्श करता है उस का मंत्र·

ओं यदेत्यस्य ( हैमवर्चिर्ऋषिः बृहती छन्दः अग्निर्देवता) १

ओं सम्पृचस्थेत्यस्य ( तथा त्रिष्टुप् छन्दः पयोग्रहो देवता) १

**पदार्थः** १ अति हृष्ट २ और स्तन पान करते ३ मैंने ४ जो ५ माता को ६ पांव

सेपीडित किया ७ हे अग्ने ८ वह ९ यह मैं १० तीनों ऋण से रहित ११ होता हूं १२ मुझ से १३ माता पिता १४ पीडित नहीं हैं अर्थात् जो पुत्र मत्युपकार करने को असमर्थ है वही मा बाप कहाता है हे पयो ग्रहो तुम १५ आपही संयोजक १६ हो इस कारण १७ मुझ को १८ कल्याण से १९ संयुक्त करो हे सुराग्रहो तुम २० वियोजक २१ हो इस कारण २२ मुझ को २३ पापसे २४ पृथक् करो ११

**अथाध्यात्मम्** १ संसार में अति हृष्ट २ और विषय रूप दुग्ध को पान करते ३ मुझ जीवने ४ जो ५ प्रकृति माता को ६ पीडित किया ७ हे ब्रह्माग्नि ८ वह ९ यह मैं १० तीनों ऋण से रहित ११ होता हूं १२ मुझसे १३ प्रकृति पुरुष १४ पीडित नहीं हुए अर्थात् यज्ञों से पूजित हुए उस कारण हे प्राणो तुम १५ संयोजक १६ हो १७ मुझ को १८ मोक्ष से १९ संयुक्त करो हे देहाङ्गो तुम २० वियोजक २१ हो २२ मुझ को २३ पापसे २४ पृथक करो ॥ ११॥

**देवा यज्ञमतन्वत भेषजम्भिषजाश्विना। वाचा सरस्वती भिषगिन्द्रायेन्द्रियाणि दधतः १२**

देवाः। भेषजम्। यज्ञम्। अतन्वत। भिषजा। अश्विना। सरस्वती। वाचा। इन्द्रियाणि। दधतः॥ १२॥

**अथाधिदैवम्**– वीस कंडिका ब्राह्मण रूप हैं इस कारण उनका विनियोग नहीं है॥

**पदार्थः** १ देवताओं ने २ इन्द्र के औषधि रूप ३ यज्ञ को ४ विस्तार दिया तब ५ वैद्य ६ अश्विनी कुमार और ७ सरस्वती देवी ८ वेद वचन द्वारा ९ बलों को १० धारण करने वाले हुए॥ १२॥

**अथाध्यात्मम्** १ वाक् आदि ऋत्विजों ने २ आत्म मति विंव नाम यजमान के औषधिरूप ३ और देहात्म विवेक रूप यज्ञ को ४ विस्तार दिया तब ५ संसार रोग के वैद्य ६ नर नारायण ७ और वाग धिष्ठात्री देवी ८ महा वाक् द्वारा ९ योग

वलों को १० धारण करने वाले ऊए॥ १२॥

दीक्षायै रूपꣳ शष्पाणि प्रायणीयस्य तोक्मानि। क्रयस्य रूपꣳ सोमस्य लाजाः सोमांशवो मधु॥ १३॥

शष्पाणि। दीक्षायै। रूपꣳ। तोक्मानि। प्रायणीयस्य। लाजाः। क्रयस्य। सोमस्य। रूपम्। मधु। सोमांशवः॥ १३

अथाधिदैवम् – अव सौत्रामणी यज्ञ की सोम संपत्ति को कहते हैं

पदार्थः १ नवीन उपजे ऊए चांवल २ दीक्षणीय इष्टि का ३ रूप हैं ४ नये उपजे ऊए जौ ५ प्रायणीय इष्टि का रूप हैं ६ खील ७ मोल लिये ऊए ८ सोम का ९ रूप हैं १० मधुर स्वाद वाली खील ११ सोम के खंड हैं॥ १३॥

अथाध्यात्मम् अव आत्म प्रति विंव की संपत्ति को कहते हैं १ शरीर के रोम २ दीक्षणीय इष्टि का ३ रूप हैं ४ त्वचा ५ प्रायणीय इष्टि का रूप है ६ मांस ७ मोल लिये ऊए ८ सोम का ९ रूप है १० मांसही ११ सोम के अंशु हैं १३

आतिथ्यरूपम्मासरम्महावीरस्य नग्नहुः। रूपमुपसदामेतत्तिस्रो रात्रीः सुरासुता॥ १४॥

मासरम्। आतिथ्यरूपम्। नग्नहुः। महावीरस्य। तिस्रः। रात्रीः। सुरा। आसुता। एतत्। उपसदाम्। रूपम्॥ १४॥

पदार्थः – १ व्रीहि श्यामाक लाज आदि का मिला ऊआ चूर्ण जो मासर नाम है वह २ आतिथ्य इष्टि का स्वरूप है ३ नग्नहु नाम वस्तु ४ घर्म का रूप है ५, ६ तीन रात्रि तक ७ सुरा का ८ अभिषवण किया ९ यह १० उपसदनाम इष्टियों का ११ रूप है॥ १४॥

अथाध्यात्मम् १ मज्जा २ आतिथ्य इष्टि का स्वरूप है ३ रुधिर ४ महावीर का रूप है ५, ६ तीन रात्रि तक ७ देह का ८ अभिषवण किया ९ यह

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

भूतात्मा १० उपसद नाम इष्टियों का ११ रूप है॥ १४॥

**सोमस्य रूपङ्क्रीतस्य परिस्रुत्परि षिच्यते। अ॒श्विभ्यान्दुग्धम्भेषज॒मिन्द्रा॑यैन्द्रꣳ सरस्वत्या १५ इन्द्राय। ऐन्द्रं॑ꣳ। भेषजम्। सरस्वत्या। अश्विभ्याम्। दुग्धम्। परिस्रुत्। परिषिच्यते। क्रीतस्य। सोमस्य। रूपम्॥**

**पदार्थः** १ इन्द्र के लिये २ इन्द्र सम्बन्धी ३ औषधि ४ सरस्वती ५ और अश्विनी कुमारों के लिये ६ रस ७ सुरा रूप जो तीन दिन में ८ सींचा जाता है वह ९ मोल लिये हुए १० सोम का ११ रूप है॥ १५॥

**अथाध्यात्मम्**– १ आत्मा रूप यजमान के लिये २ उससे सम्बन्ध रखने वाली ३ औषधि ४ और सरस्वती ५ नर नारायण के लिये ६ पान योग्य ७ जो रस ८ सींचा जाता है ९, १० वह मानस सूर्य का ११ रूप है॥ १५॥

**आसन्दी रूपꣳ राजासन्द्यै वेद्यै कुम्भी सुराधानी। अन्तर॑ उत्तरवेद्या रूपङ्कारोतरो भिषक् १६ आसन्दी। राजासन्द्यै। रूपम्। सुराधानी। कुम्भी। वेद्यै। अन्तरः। उत्तरवेद्याः। रूपम्। कारोतरः। भिषक्॥ १६॥**

**पदार्थः**– १ यजमान के अभिषेक के लिये जो मंच का है वह २ सोम की मंचिका का ३ रूप है ४, ५ सुरा पात्र ६ सोम की वेदी का रूप है ७ दोनों वेदी का मध्यभाग ८ उत्तर वेदी का ९ रूप है १० सुरापावनचालिनी ११ इन्द्र की औषधि है॥ १६॥

**अथाध्यात्मम्**– १ नाभि २ आत्म प्रति विंब की मंचिका का ३ रूप है ४ तमो रूप आत्म प्रति विंब का धारण करने वाला ५ मानस कमल ६ आत्म प्रति विंब की वेदी का रूप है ७ मन भृकुटि रूप दोनों वेदी का मध्य हृदय ८ उत्तर वेदी का ९ रूप है १० अस्थि रूप आत्म प्रति विंब को पवित्र करने वाली चालिनी ११ आत्म प्रति विंब रूप यजमान की औषधि है॥ १६॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रियम्।
यूपेन यूप आप्यते प्रणीतो अग्निरग्निना ॥ १७ ॥

वेद्या। वेदिः। समाप्यते। बर्हिषा। बर्हिः। इन्द्रियं। यूपेन। यूपः। आप्यते। अग्निना। प्रणीतः। अग्निः॥ १७॥

पदार्थः—१ वर्त्तमान वेदी के द्वारा २ सोम की वेदी ३ भले प्रकार प्राप्त होती है ४ वर्त्तमान कुशा से ५ सोम सम्बंधी कुशा तथा ६ बल प्राप्त होता है ७ वर्त्तमान यूपसे ८ सोम सम्बन्धी यूप ९ प्राप्त होता है १० वर्त्तमान अग्नि से ११ प्रणीत नाम १२ अग्नि प्राप्त होता है॥ १७॥

अथाध्यात्मम्—मन रूप वेदी से २ सौत्रामणी यज्ञ सम्बंधी वेदी ३ प्राप्त होती है ४ प्राण से ५ सोम सम्बंधी कुशा ६ तथा योग बल प्राप्त होता है ७ नासिका से ८ सोम सम्बंधी यूप ९ प्राप्त होता है १० आत्माग्नि से ११, १२ ब्रह्माग्नि प्राप्त होता है॥ १७॥

हविर्धानं यदश्विनाग्नीध्रं यत्सरस्वती। इन्द्रायैन्द्रꣳ सदस्कृतं पत्नीशालं गार्हपत्यः॥ १८॥

यत्। अश्विना। हविर्धानं। यत्। सरस्वती। आग्नीध्रं। इन्द्राय। ऐन्द्रम्। सदः। पत्नीशालं। कृतम्। गार्हपत्यः॥ १८॥

पदार्थः—१ जो २ अश्विनी कुमार हैं वह ३ हविर्धान हैं ४ जो ५ सरस्वती है वह ६ आग्नीध्र है तथा ७ इन्द्र के लिये जो ८ इन्द्र को देवता रखने वाला ९ स्थान १० पत्नीशाल नाम ११ रचा गया वह १२ गार्हपत्य जानना चाहिये॥ १८

अथाध्यात्मम्—१ जो २ नेत्र में दो पुरुष हैं वह ३ सोम यज्ञ का हविर्धान है ४ जो ५ महावाक् है वह ६ सोम यज्ञ का आग्नीध्र है तथा ७ यजमान के लिये जो ८ यजमान सम्बन्धी ९ उदर १० और हृदय ११ संस्कार किया गया वह १२ सोम यज्ञ का गार्हपत्य है॥ १८॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

प्रैषैभिः प्रैषानाश्नोत्याप्रीभिराप्रीर्यज्ञस्य।प्र
याजैर्भिरनुयाजान्वषट्कारेभिराहुतीः॥१९
प्रैषेभिः। प्रैषान्। आप्नोति। आप्रीभिः। यज्ञस्य। आप्रीः। प्र
याजेभिः। अनुयाजान्। वषट्कारेभिः। आहुतीः॥ १९॥

पदार्थः प्रैषनाम यज्ञकर्मों से २ प्रैषों को ३ पाता है ४ प्रयाज याज्यों से ५ यज्ञ की ६ आप्री को पाता है ७ प्रयाजों से प्रयाजों को पाता है अनुयाजों से ८ अनुयाजों को पाता है ९ वषट्कारों से वषट्कारों को पाता है आहुतियों से १० आहुतियों को पाता है॥ १९॥

अथाध्यात्मम् – १ प्राणों के प्रेषण से २ प्रैषों को ३ पाता है ४ प्राण सम्बन्धी मंत्रों से ५ यज्ञ के ६ प्रयाज याज्यों को पाता है ७ शिर के प्राणों से प्रयाजों को पाता है नीचे के प्राणों से ८ अनुयाजों को प्राप्त करता है ९ प्राण प्रयत्नों से वषट्कारों को प्राप्त करता है प्राण आदि की आहुतियों से १० आहुतियों को प्राप्त करता है॥ १९॥

पशुभिः पशूनाप्नोति पुरोडाशैर्हवींष्या।
छन्दोभिः सामिधेनीर्याज्याभिर्वषट्कारान्॥२०
पशुभिः। पशून्। आप्नोति। पुरोडाशैः। हवींषि। आ।
छन्दोभिः। सामधेनीः। याज्याभिः। वषट्कारान्॥ २०॥

पदार्थः १ पशुओं के द्वारा २ पशुओं को ३ पाता है ४ हवियों से ५ हवियों को ६ पाता है ७ छन्दों के द्वारा छन्दों को पाता है ८ साम धेनियों के द्वारा साम धेनियों को पाता है ९ याज्यों से याज्यों को पाता है १० वषट्कारों से वषट्कारों को पाता है॥ २०॥

अथाध्यात्मम् १ प्राण हृदय आत्मा के द्वारा २ पशुओं को ३ प्राप्त करता है ४ आत्मा सहित इन्द्रियों के द्वारा ५ हवियों को ६ प्राप्त करता है ७ देहांगों के

द्वारा छन्दों को प्राप्त करता है अग्नि, अन्तरिक्ष, वायु, स्वर्ग, सूर्य, चन्द्रमा, मन वाक्, तप और ब्रह्म यह ग्यारह साम धेनी हैं उनके द्वारा ८ साम धेनियों को प्राप्त करता है ९ याज्यनाम ऋचा ओं के द्वारा याज्यों को प्राप्त करता है भाग प्रदानों से १० वषट्कारों को प्राप्त करता है॥ २०॥

धाना: कर॒म्भः सक्त॑वः परी॒वापः पयो॒ दधि॑। सोम॑स्य रू॒प ঁ हविष॑ आमि॒क्षा वाजि॑न॒म्मधु॑॥ २१

धानाः। करम्भः। सक्तवः। परीवापः। पयः। दधि। सोमस्य। रूपम्। आमिक्षा। मधु। वाजिनम्। हविषः॥ २१॥

पदार्थः—१ भ्रष्ट धान्य २ उदमंथ ३ सत्तू ४ हविष पंक्ति ५ दुग्ध ६ दधि ये ७ सोम के ८ रूप हैं ९ आमिक्षा अर्थात् फटा हुआ दूध १०, ११ और मधुर आमिक्षा का जल यह १२ हवि का रूप है॥ २१॥

अथाध्यात्मम्—१ अहोरात्रि (दिनरात) २ तथा कंठचक्र विष्णु का स्थान नाभिचक्र, हृदयचक्र, ब्रह्मा का स्थान नाभि के नीचे का चक्र, मूलचक्र, भृकुटिचक्र, इन सब का समूह ३ इन्द्रियां ४ वायु, श्रोत्र, लिङ्ग, नासिका, नेत्र, मुख इन सब के अन्तरिक्ष ५ तथा प्राण ६ पृथिवी लोक ये सब ७ आत्मप्रतिबिंब का ८ रूप हैं ९ रोकी हुई इन्द्रियां १० प्राण ११ राग रूप रस ये सब १२ हवि का रूप हैं॥ २१॥

धाना॑नाᳫँ रू॒पङ्कु॑वल॒म्परी॒वाप॑स्य गो॒धूमाः॑। सक्तू॑नाᳫँ रू॒पम्बद॑र॒मुप॒वाकाः॑ कर॒म्भस्य॑ २२

कुवलम्। धानानाम्। रूपम्। गोधूमाः। परीवापस्य। वदरम्। सक्तूनाम्। रूपम्। उपवाकाः। करम्भस्य॥ २२॥

पदार्थः १ कोमल वदरी फल २ भ्रष्ट धान्यों का ३ रूप है ४ गेहूं ५ हवि पंक्ति के रूप हैं ६ सब वदरी फल ७ सत्तुओं का ८ रूप हैं ९ जौ १० करम्भ का रूप है ॥ २२॥

**अथाध्यात्मम्** १ आंखों के पलक २ भृष्ट धान्यों का ३ रूप हैं ४ नीचे के पलक ५ हवि पंक्ति के रूप हैं ६ नासिका के वाल ७ सक्तुओं के ८ रूप हैं ९ दूसरी नासिका छिद्र के वाल १० करम्भ के रूप हैं॥ २२॥

**पयसो रूपं यद्यवा दध्नो रूपङ्कर्कन्धूनि। सोमस्य रूपं वाजिनꣳ सौमस्य रूपमामिक्षा॥ २३॥**

यत्। यवाः। पयसः। रूपम्। कर्कन्धूनि। दध्नः। रूपम्। वाजिनम्। सोमस्य। रूपम्। आमिक्षा। सौम्यस्य। रूपम्॥ २३॥

**पदार्थः** १ जो २ जो हैं वे ३ दुग्ध का ४ रूप हैं ५ स्थूल वदरी फल ६ दही का ७ रूप हैं ८ फटे दूध का जल ९ सोम का १० रूप है ११ फटा दूध १२ सौम्य चरु का १३ रूप जान्ना चाहिये॥ २३॥

**अथाध्यात्मम्** – १ जो २ कान के बाल हैं वे ३ दुग्ध के ४ रूप हैं ५ भौंके वाल ६ दही के ७ रूप हैं ८ रागरूप रस ९ सोम के १० रूप हैं ११ निरुद्ध इन्द्रियों का समूह १२ सौम्य चरु का १७ रूप जान्ना चाहिये॥ २३॥

**आश्रावयेति स्तोत्रियाः प्रत्याश्रावो अनुरूपः। यजेति धाय्यारूपम्प्रगाथा येयजामहाः॥ २४॥**

आश्रावय। इति। स्तोत्रियाः। प्रत्याश्रावः। अनुरूपः। यज। इति। धय्यारूपम्। येयजामहाः। प्रगाथाः॥ २४॥

**पदार्थः** शस्त्रसम्पत्ति को कहते हैं १ आश्रावय २ यह शब्द ३ स्तोत्र में प्रथम तीन ऋचा वाले अनुवाक् का रूप है ४ प्रत्याश्राव, यह शब्द ५ उत्तर तीन ऋचा वाले अनुवाक् का रूप है ६ यज ७ यह शब्द ८ धय्या का रूप है ९ ये यजामहा यह शब्द १० प्रगाथा का रूप है॥ २४॥

**अथाध्यात्मम्** १ महावाक् का उपदेश करो २ यह स्तुति सहित गुरु की प्रार्थना ३ स्तोत्रिया का रूप है ४ गुरु का उपदेश ५ अनुरूप नाम है ६ आत्मप्रति-

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

विंब का होम करें ७ यह गुरु की आज्ञा ८ ध्यया का रूप है ९ हम जो हैं वे यज्ञ करते हैं यह संकल्प १० प्रगाथा नाम है॥ २४॥

**अर्द्धऋचैरुकथानां रूपम्पदैराप्नोति निविदः। प्रणवैः शस्त्राणां रूपम्पयसा सोम आप्यते॥२५॥**

अर्द्धऋचैः[1]। उकथानाम्[2]। रूपम्[3]। आप्यते[4]। पदैः[5]। निविदः[6]। आप्नोति[7]। प्रणवैः[8]। शस्त्राणाम्[9]। रूपम्[10]। पयसा[11]। सोमः[12]।२५

**पदार्थः** १ अर्द्धऋचाओं से २ उकथ नाम शस्त्र विशेषों का ३ रूप ४ प्राप्त होता है ५ पदों से ६ न्यूङ्ख नाम मंत्रों को ७ प्राप्त करता है ८ ओंकारों से ९ शस्त्रों का १० रूप ११ और दुग्ध से १२ सोम प्राप्त होता है॥ २५॥

**अथाध्यात्मम्** १ अर्द्ध स्तुति योग्य इन्द्रियों के द्वारा २ उक्थों का ३ रूप ४ प्राप्त होता है ५ बुद्धि के निश्चियों से ६ न्यूङ्ख नाम मंत्रों को ७ प्राप्त करता है ८ ओंकारों से ९ शस्त्रों का १० रूप ११ और प्राण से १२ आत्म प्रतिविंब प्राप्त होता है २५

**अश्विभ्याम्प्रातः सवनमिन्द्रेणैन्द्रम्माध्यन्दिनम्। वैश्वदेवं सरस्वत्या तृतीयमाप्तं सवनम्॥२६॥**

अश्विभ्याम्[1]। प्रातः[2]। सवनम्। इन्द्रेण[3]। ऐन्द्रम्[4]। माध्यन्दिनम्[5]। सरस्वत्या[6]। वैश्वदेवम्[7]। तृतीयम्[8]। सवनम्[9]। आप्तम्[10]।२६

**पदार्थः**– सवन सम्पत्ति को कहते हैं, १ अश्विनी कुमारों के द्वारा २ प्रातः सवन प्राप्त होता है ३ इन्द्र के द्वारा ४ इन्द्र को देवता रखने वाला ५ माध्यान्दिन सवन प्राप्त होता है ६ सरस्वती के द्वारा ७ विश्वे देवाओं को देवता रखने वाला ८ तीसरा ९ सवन १० प्राप्त होता है॥ २६॥

**अथाध्यात्मम्**– १ नर नारायण के द्वारा २ प्रातः सवन प्राप्त होता है ३

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

महाविष्णु के द्वारा ४ महा विष्णु को देवता रखने वाला ५ माध्यन्दिन सवन प्राप्त होता है ६ महा वाक् के द्वारा ७ सब देवताओं को देवता रखने वाला ८ तीसरा ९ सवन १० प्राप्त होता है॥२६॥

वायव्यैर्वायव्यान्याप्नोति सतेन द्रोणकलशम्। कुम्भीभ्यामम्भृणौ सुते स्थालीभिः स्थालीराप्नोति॥२७॥

वायव्यैः। वायव्यानि। आप्नोति। सतेन। द्रोणकलशम्। कुम्भीभ्याम्। अम्भृणौ। सुतेः। स्थालीभिः। स्थालीः। आप्नोति।

**पदार्थः** १ वायव्य पात्रों के द्वारा २ वायव्य पात्रों को ३ पाता है ४ वेतस पात्र-द्वारा ५ द्रोणकलश को पाता है ६ शतछिद्र वाली सुराधानियों के द्वारा ७ पूतभृत आधवनीय नाम को ८ सोमाभिषवन होने पर पाता है ९ स्थालियों के द्वारा १० स्थालियों को ११ पाता है॥२७॥

**अथाध्यात्मम्**— १ इन्द्रिय गोलकों के द्वारा २ वायव्य पात्रों को ३ पाता है ४ हृदय से ५ द्रोणकलश को पाता है ६ लिङ्ग गुदा से ७ पूतभृत और आधवनीय को ८ प्रतिबिंब का संस्कार होने पर पाता है ९ कमल रूपों से १० स्थालियों को ११ प्राप्त करता है अर्थात् इन्द्रिय गोलक आदि वायव्य पात्र आदि के रूप हैं॥२७॥

यजुर्भिराप्यन्ते ग्रहा ग्रहैः स्तोमाश्च विष्टुतीः। छन्दोभिरुक्थाः शस्त्राणि साम्नावभृथ आप्यते॥२८॥

यजुर्भिः। ग्रहाः। आप्यन्ते। ग्रहैः। स्तोमाः। च। विष्टुतीः। छन्दोभिः। उक्थाः। शस्त्राणि। साम्ना। अवभृथः। आप्यते॥२८॥

**पदार्थः** १ यजुर्मंत्रों के द्वारा २ ग्रह ३ प्राप्त होते हैं ४ ग्रहों से ५ स्तोम ६ और ७ नानाप्रकार की स्तुति प्राप्त होती हैं ८ छन्दों से ९ उक्थ १० और शस्त्र नामस्तो

त्र प्राप्त होते हैं ११ सामऋचा से १२ अवभृथ १३ प्राप्त होता है॥ २८॥

**अथाध्यात्मम्**– १ मन की वृत्तियों से २ चक्षु श्रोत्र आदि अंग ३ प्राप्त होते हैं ४ वाक् आदि से ५ स्तोम ६ और ७ नाना प्रकार की स्तुति प्राप्त होती हैं ८ वाक् वृत्तियों से ९, १० उक्थ और शस्त्र नाम स्तोत्र प्राप्त होते हैं ११ प्राण द्वारा १२ आत्मारूप नदी में स्नान १३ प्राप्त करता है॥ २८॥

**इडाभिर्भक्षानाप्नोति सूक्तवाकेनाशिषः। शंयुना पत्नीसंयाजान्त्समिष्टयजुषा स॒ꣳस्थाम् २९**

इडाभिः। भक्षान्। आप्नोति। सूक्तवाकेन। आशिषः। शम्युना। पत्नीसंयाजान्। समिष्टयजुषा। संस्थाम्॥ २९॥

**पदार्थः**– १ अन्नों के द्वारा २ भक्षण को ३ प्राप्त करता है ४ सूक्त वचन के द्वारा ५ आशीर्वादों को पाता है ६ शम्यु नाम होम विशेष के द्वारा ७ पत्नी संयाजों को पाता है ८ समिष्ट यजु के द्वारा ९ संस्था को प्राप्त करता है॥ २९॥

**अथाध्यात्मम्**– १ प्राणों के द्वारा २ भक्षों को ३ प्राप्त करता है ४ सूक्त वचन वा परमेश्वर के स्तोत्र से ५ प्रार्थनाओं को पाता है ६ विषय होम से ७ ऊरू और बाहू को वश में करता है ८ पांवों से ९ स्थिति को पाता है॥ २९॥

**व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ३०**

व्रतेन। दीक्षाम्। आप्नोति। दीक्षया। दक्षिणाम्। आप्नोति। दक्षिणा। श्रद्धाम्। श्रद्धया। सत्यम्। आप्यते॥ ३०॥

**पदार्थः** १ व्रत से २ दीक्षा को ३ पाता है ४ दीक्षा से ५ दक्षिणा दान को ६ प्राप्त करता है ७ दक्षिणा दान से ८ आस्तिक्य बुद्धि को पाता है ९ आस्तिक्य बुद्धि से १० ज्ञान स्वरूप अनंत ब्रह्म ११ प्राप्त होता है॥ ३०॥

**एतावद्रूपं यज्ञस्य यद्देवैर्ब्रह्मणा कृतम्। तदेत**

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

त्सर्वं माप्नोति यज्ञे सौत्रामणी सुते ॥ ३१॥

यज्ञस्य। एतावत्। रूपम्। यत्। देवैः। ब्रह्मणा। कृतम्। सौत्रामणी। यज्ञे। सुते। तत्। एतत्। सर्वम्। आप्नोति ॥ ३१॥

**पदार्थः**—१ यज्ञ का २ इस परिमाण वाला ३ रूप है ४ जो कि ५ देवताओं ६ और ७ प्रजापतिजी से ७ देखा गया ८, ९ सौत्रामणी यज्ञ में १० सुरा सोम के अभिषवण होने पर ११ वह १२ यह सोम याग रूप १३ सब १४ प्राप्त होता है ॥ ३१॥

सुरावन्तम्बर्हिषदं सुवीरं यज्ञं हिन्वन्ति महिषा नमोभिः। दधानाः सोमन्दिवि देवतासु मदेमेन्द्रं यजमानाः स्वर्काः ॥ ३२॥

नमोभिः। दिवि। देवतासु। सोमम्। दधानाः। महिषाः। बर्हिषदम्। सुरावन्तम्। सुवीरम्। यज्ञम्। हिन्वन्ति। स्वर्काः। इन्द्रम्। यजमानाः। मदेम ॥ ३२॥

**अथाधिदैवम्** अध्वर्यु उन उपग्रहों को भी एक साथ होमता है उस का मंत्र-
ओं सुरावन्तमित्यस्य हैमवर्चिर्ऋषिः- त्रिष्टुप् छन्दः अश्वि सरस्वतीन्द्रा देवताः १

**पदार्थः** १ यज्ञों के द्वारा २ स्वर्ग में ३ देवताओं के मध्य ४ सोम को ५ स्थापन करते ६ ऋत्विज लोग ७ देवताओं के कुशासन से युक्त ८ सुरा से सम्पन्न ९ शुभ ऋत्विज वाले १० सौत्रामणी यज्ञ को ११ प्राप्त कराते हैं १२ शुभ मंत्र वा अन्न वाले तथा १३ इन्द्र को १४ पूजते हम १५ हर्ष को पावें ॥ ३२॥

**अथाध्यात्मम्**—१ योग यज्ञों के द्वारा २ गगन मंडल में ३ ब्रह्म परामहा नारायण के मध्य ४ आत्म प्रति बिंब को ५ धारण करते ६ वाक् आदि ऋत्विज ७ मानस कमल में विद्यमान ८ भूतात्म शक्ति से संयुक्त ९ निरुद्ध प्राण वाले १० आत्म रूप यजमान को ११ प्राप्त करते हैं १२ शुभ यज्ञ वाले तथा १३ महाविष्णु को १४ पूजते हम वाक् आदि ऋत्विज १५ ब्रह्मानंद को प्राप्त करें ॥ ३२॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

यस्तै रसः सम्भृत ओषधीषु सोमस्य शुष्मः सुरं
या सुतस्य। तेन जिन्व यजमानम्मदेन सरस्वती
मश्विना विन्द्र। मग्निम्। ३३

ओषधीषु। यः। ते। रसः। सम्भृतः। सुरयो। सुतस्य। सोमस्य
शुष्मः। तेन। मदेन। यजमानं। सरस्वतीम्। अश्विनो। इ
न्द्रम्। अग्निम्। जिन्व॥ ३३॥ {मंत्र

**अथाधिदैवम्**- प्रतिप्रस्थाता सुराग्रहों को दक्षिणाग्नि में होमता है उसका
ओं यस्त इत्यस्य (हैमवर्च्चि र्ऋषिः आर्षीत्रिष्टुप् छन्दः सुरा देवता) १

**पदार्थः** हे सुरा १ ओषधियों में वर्त्तमान २ जो ३ तेरा ४ रस ५ इकट्ठा किया ६
सुरा के साथ ७ अभिषुत ८ सोम का ९ जो वल है १० उस ११ मद उत्पन्न करने वाले
१२ यजमान १३ सरस्वती १४ अश्विनी कुमार १५ इन्द्र १६ अग्नि को १७ तृप्त करो॥३३

**अथाध्यात्मम्** - हे भूतात्मन् १ इन्द्रियों में वर्त्तमान २ जो ३ तेरा ४ रस
५ एकत्र किया और ६ शरीर के साथ ७ अभिषुत ८ आत्म प्रति विंव का जो ९ योग
वल है १० उस ११ मद से १२ आत्मा १३ महा वाक् १४ नर नारायण १५ महा वि
ष्णु १६ और ब्रह्माग्नि को १७ तृप्त करो॥ ३३॥

यमश्विना नमुचेरासुरादधि सरस्वत्यसुनोदि
न्द्रियाय। इमन्त्तं शुक्रम्मधुमन्तमिन्दुं
सोमं राजानमिह भक्षयामि। ३४॥

अश्विनो। सरस्वती। यम्। आसुरात्। नमुचेः। अधि। इन्द्रि
याय। असुनोत्। इमम्। तम्। शुक्रम्। मधुमन्तं। इन्दुम्।
राजानम्। सोमम्। इह। भक्षयामि॥ ३४॥

**अथाधिदैवम्**· अध्वर्यु प्रतिप्रस्थाता और आग्नीध्र ये सब आश्विन-
पयोग्रह को भक्षण करते हैं होता ब्रह्मा और मैत्रावरुण सारस्वत पयोग्रह-

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

को भक्षण करते हैं यजमान ऐन्द्र पयोग्रह को भक्षण करता है उसका मंत्र

ऊँ यमित्यस्य (हैम वर्चिर्ऋषिः आर्षी त्रिष्टुप् छन्दः अश्वि सरस्वत्यः देवताः) १

**पदार्थः** १ अश्विनी कुमार २ और सरस्वती ने ३ जिस सोम को ४,५,६ नमुची असुर के सकाश से ७ इन्द्र के बलार्थ ८ अभिषवण किया ९ इस १० उस ११ शुद्ध सुरा रूपसे पृथक् १२ रसवान १३ परमैश्वर्य के दाता १४,१५ राजा सोम को १६ इस यज्ञ में १७ भक्षण करता हूं॥ ३४॥

**अथाध्यात्मम्** १ नर नारायण २ और महा वाक् ने ३ जिस आत्म प्रति बिंब को ४,५,६ पाप के सकाश से ७ मुझ यजमान के बलार्थ ८ देहाभिमान से रहित किया ९ इस १० उस ११ शुद्ध १२ ज्ञानी १३ योगैश्वर्य दाता १४ दीप्तिमान १५ आत्म प्रति बिंब को १६ इस यज्ञ में आत्मा में १७ भक्षण करता हूं॥ ३४

**यदत्र॑ रि॒प्तꣳ र॒सिनः॑ सु॒तस्य॒ यदिन्द्रो॒ अपि॑ब॒च्छची॑भिः। अ॒हन्तद॑स्य॒ मन॑सा शि॒वेन॒ सोम॒ꣳ राजा॑नमि॒ह भ॑क्षयामि॥ ३५॥**

रसिनः१। सुतस्य२। यत्३। अत्र४। रिप्तम्५। यत्६। शचीभिः७। इन्द्रः८। अपिबत्९। अस्य१०। तत्११। राजानम्१२। सोमम्१३। शिवेन१४। मनसा१५। इह१६। अहम्१७। भक्षयामि॥ ३५॥

**अथाधिदैवम्**- अपसव्य दक्षिण मुख स्थित अध्वर्यु आदि आश्विन ग्रह को और होता आदि सारस्वत ग्रह को और यजमान ऐन्द्र सुरा ग्रह को भक्षण करते हैं उसका मंत्र १

ऊँ यदत्रेत्यस्य (हैम वर्चिर्ऋषिः ब्राह्म्युष्णिक् छन्दः यजमानो देवता) १

**पदार्थः**—१ रसवान २ अभिषुत सोम का ३ जो भाग ४ इस सुरा में ५ लिप्त हुआ ६ और जिस सुरा से लिप्त सोमांश को ७ कर्मों से शुद्ध करके ८ इन्द्र ने ९ पान किया १० इस सोम के ११ उस सुरा रहित १२ दीप्तिमान १३ सोम को १४,१५

आनंद रूप मनके साथ १६ इस यज्ञ में १७,१८ मैं भक्षण करता हूं॥ ३५॥

**अथाध्यात्मम्** १ ज्ञान रस से युक्त २ देहाभिमान से रहित आत्म प्रतिविंव का ३ जो भाग ४ इस शरीर में ५ लिप्त हुआ ६ और जिस देह में लिप्त आत्म प्रतिविंव को ७ योग क्रियाओं से शुद्ध करके ८ आत्मा रूप यजमान ने ९ पान किया १० इस आत्म प्रतिविंव के ११ उस देहाभिमान रहित १२ दीप्तिमान १३ प्रतिविंव को १४,१५ आनन्द रूप मन के साथ १६ इस यज्ञ में १७ मैं आत्मा १८ भक्षण करता हूं ३५

**पि॒तृभ्यः॑ स्वधा॒यिभ्यः॑ स्व॒धा नमः॑ पि॒ता म॒हेभ्यः॑ स्वधा॒यिभ्यः॑ स्व॒धा नमः॑ प्रपि॑ता महे॒भ्यः॑ स्वधा॒यिभ्यः॑ स्व॒धा नमः॑ अक्ष॒न्पि॒तरो॑ मी मदन्त पि॒तरो॑ऽतीतृपन्त पि॒तरः॑ पित॒रः॒ शुन्ध॑ध्वम्॥ ३६॥**

स्वधायिभ्यः[1]। पितृभ्यः[2]। स्वधा[3]। नमः[4]। स्वधायिभ्यः[5]। पितामहेभ्यः[6]। स्वधा[7]। नमः[8]। स्वधायिभ्यः[9]। प्रपितामहेभ्यः[10]। स्वधा[11]। नमः[12]। पितरः[13]। अक्षन्[14]। पितरः[15]। अमी मदन्त[16]। पितरः[17]। अतीतृपन्त[18]। पितरः[19]। शुन्धध्वं॥ ३६॥

आहवनीय के अंगारों में जो कि परिधि के वाहर दक्षिण दिशा में स्थित हैं होम से बचे सुरा ग्रहों को होमता है उसके मंत्र, और ग्रह होम के जो पात्र हैं उनके प्रक्षालन जल से अंगारों को सींचता है उसके मंत्र,

ॐ पितृभ्य इत्यस्य (हैमवर्चिर्ऋषिः याजुषी गायत्री छन्दः पितरो देवता) १
ॐ पितामहेभ्य इत्यस्य ( तथा आसुर्यनुष्टुप् छन्दः तथा ) २
ॐ प्रपितामहेभ्य इत्यस्य ( तथा साम्न्यनुष्टुप् छन्दः तथा ) ३
ॐ अक्षन्नित्यस्य ( तथा दैवी पंक्तिश्छन्दः तथा ) ४
ॐ अमी+अतीतृपन्नेति मंत्रयोः ( तथा याजुष्यनुष्टुप् छन्दः तथा ) ५,६
ॐ पितर इत्यस्य ( तथा याजुषी गायत्री छन्दः तथा ) ७

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

**पदार्थः** आनंद रूप मन के साथ ऐसा पूर्व मंत्र में कहा, और हवन का आनंद-स्वरूप होना बिना पितृ यज्ञ के असंभव है इस लिये पितृ यज्ञ को कहते हैं, १ अन्न की ओर जाने वाले २ पितरों के लिये ३ स्वधा नाम ४ अन्न हो अथवा अन्न और नमस्कार दोनों हों ५ अन्न की ओर जाने वाले ६ पिता महाओं के लिये ७,८ अन्न और नमस्कार हो ९ अन्न की ओर जाने वाले १० प्रपिता महाओं के लिये ११,१२ अन्न और नमस्कार हो १३ पितरों ने १४ भक्षण किया १५ पितर १६ तृप्त हुए १७ पितर १८ हम से तृप्त किये गये अथवा हम को अभीष्ट देते हैं १९ हे पितरो तुम २० हाथ पांव के धोने से शुद्ध हूजिये॥३६॥

पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु मा पिता महाः पुनन्तु प्रपिता महाः पवित्रेण शता युषा। पुनन्तु मा पिता महाः पुनन्तु प्रपिता महाः पवित्रेण शता युषा विश्वमा युर्व्यश्नवै ३७

सोम्याः। पितरः। शता युषा। पवित्रेण। मा। पुनन्तु। पिता महाः। मा। पुनन्तु। प्रपिता महाः। पुनन्तु। पिता महाः। शता युषा। पवित्रेण। मा। पुनन्तु। प्रपिता महाः। पुनन्तु। विश्वम्। आयुः। व्यश्नवै॥ ३७॥

नौ ऋचा यजमान से कहलाता है उसके मंत्र

ओं पुनन्तु त्यस्य (हैम वर्चि ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः पितरो देवता) १,२

**पदार्थः** १ सोम के योग्य २ पितर ३ पूर्ण आयु के दाता ४ पवित्रा से ५ मुझ को ६ शुद्ध करो ७ पिता मह ८ मुझ को ९ पवित्र करो १० प्रपिता मह ११ पवित्र करो १२ पिता मह १३ पूर्ण आयु के दाता १४ पवित्रा से १५ मुझ को १६ शुद्ध करो १७ प्रपिता मह १८ शुद्ध करो १९ पूर्ण　२० आयु को २१ प्राप्त करूं॥ ३७॥

अग्न आयूंषि पवस आसुवोर्ज मिषञ्चनः। आ

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

रे वांध स्वदुच्छुनाम् ३८

अग्ने। आयूंषि। पवसे। नः। इषम्। च। ऊर्जम्। आसुव। आरे। दुच्छुनाम्। वाधस्व॥ ३८॥

ओं अग्न इत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः गायत्री छन्दः अग्निर्देवता) १

**पदार्थः** १– हे अग्ने तुम २ आयुप्राप्त कराने वाले कर्मों को ३ करते हो ४ हमारे लिये ५ धान्य ६ और ७ दधि घृत आदि को ८ दीजिये ९ दूरस्थित १० दुर्जनों को भी ११ ताड़ना करो॥ ३८॥

पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा। ३९

देवजनाः। मा। पुनन्तु। मनसा। धियः। पुनन्तु। विश्वा। भूतानि। पुनन्तु। जातवेदः। मा। पुनीहि॥ ३९॥

ओं पुनन्त्विमित्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः अग्न्याद्या देवता) १

**पदार्थः** १ देवताओं के अनुगामी २ मुझ को ३ पवित्र करो ४ मन के साथ ५ बुद्धि वृत्तियां ६ मुझ को पवित्र करो ७ सब ८ प्राणी ९ मुझ को पवित्र करो १० हे अग्नि तुम भी ११ मुझ को १२ पवित्र करो॥ ३९॥

पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत्। अग्ने क्रत्वा क्रतूँ२ रनु ४०

देव। अग्ने। दीद्यत्। शुक्रेण। पवित्रेण। मा। पुनीहि। क्रतून्। अनु। क्रत्वा॥ ४०॥

ओं पवित्रेणेत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः गायत्री छन्दः अग्निर्देवता) १

**पदार्थः** – १,२ हे देवता अग्नि ३ दीप्यमान तुम ४ शुद्ध ५ पवित्रा से ६ मुझ को ७ पवित्र करो ८ यज्ञों को ९ लक्ष्य कर के १० कर्म से पवित्र करो॥ ४०॥

यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने विततमन्तरा। ब्रह्मतेन

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

## पुनातु मा ॥ ४१॥

अग्ने। ते। अर्चिषि। अन्तरा। यत्। ब्रह्म। पवित्रं। विततम्। तेन। मा। पुनातु ॥ ४१॥

ओं यत्त इत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः गायत्री छन्दः ब्रह्माग्नि दैवता)१

पदार्थः—१ हे अग्ने २ तेरी ३ ज्वाला के ४ मध्य ५ जो ६ पर ब्रह्म रूप ७ पवित्र ८ विस्तार को प्राप्त है ९ उस पवित्रता से १० मुझ को ११ पवित्र करो ॥ ४१॥

पवमानस्सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः । यः
पोता स पुनातु मा ॥ ४२॥

यः। विचर्षणिः। पवमानः। सः। नः। पोता। सः। अद्य। पवित्रेण। मा। पुनातु ॥ ४२॥

ओं पवमान इत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः गायत्री छन्दः वायु दैवता)१

पदार्थः १ जो २ हत यक्त का जानने वाला ३ शोधक है ४ वह वायु ५ हमारा ६ शोधक है ७ वह ८ अब ९ आत्मा रूप पवित्रता से १० मुझ को ११ पवित्र करो ॥ ४२॥

उभाभ्यान्देव सवितः पवित्रेण सवेन च । माम्पु
नीहि विश्वतः ॥ ४३॥

देव। सवितः। उभाभ्याम्। पवित्रेण। च। सवेन। विश्वतः। माम्। पुनीहि ॥ ४३॥

ओं उभाभ्यामित्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः गायत्री छन्दः सूर्यो देवता)१

पदार्थः १,२ हे सविता देवता ३ दोनों प्रकार के ४ पवित्रता ५ और ६ अनुज्ञा से ७ सब ओर ८ मुझ को ९ शुद्ध करो॥ ४३॥

वैश्वदेवी पुनती देव्यागाद्यस्यामिमा बह्व्य
स्तन्वो वीतपृष्ठाः । तया मदन्तस्सधमादेषु
वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥ ४४॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

[1] देवी। [2] पुनती। [3] वैश्वदेवी। [4] आगता। [5] यस्याम्। [6] इमाः। [7] बह्वः। [8] तन्वः। [9] वीतपृष्ठाः। [10] तया। [11] सधमादेषु। [12] मदन्तः। [13] वयम्। [14] रयीणाम्। [15] पतयः। [16] स्याम॥ ४४॥

ॐ वैश्वदेवीत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः। त्रिष्टुप् छन्दः। वैश्वदेवी देवता) १

**पदार्थः**—१ नाना प्रकार के अवतारों से क्रीड़ा करने वाले महानारायण की शक्ति २ पवित्र करने वाली ३ सब की प्रकाशक परा नाम ४ सब ओर से प्राप्त हुई ५ जिसमें ६ ये ७ बहुत संख्या वाले ८ जीवात्मा ९ स्तुति करने वाले भक्त हैं १० उस शक्ति से ११ यज्ञ स्थानों में १२ आनंद पाते १३ हम १४ धनों वा योगैश्वर्यों के १५ स्वामी १६ होवें॥ ४४॥

## ये समानाः समनसः पितरो यमराज्ये। तेषांल्लोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम्॥ ४५॥

[1] ये। [2] समानाः। [3] समनसः। [4] पितरः। [5] यमराज्ये। [6] स्वधा। [7] नमः। [8] तेषाम्। [9] लोकः। [10] यज्ञः। [11] देवेषु। [12] कल्पताम्॥ ४५॥

अपसव्य और दक्षिणमुख यजमान एक बार लिये हुए घृत को जुहू से दक्षिणाग्नि में होमता है उसका मंत्र

ॐ ये समाना इत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। पितरो देवता) १

**पदार्थः**—१ जो २ सपिंड ३ मनस्वी ४ पितर ५ यमलोक में हैं ६ स्वधा नाम ७ अन्न ८ उनके ९ दृष्टिगोचर हो १० पितृयज्ञ ११ वसु रुद्र आदित्य देवताओं में १२ वास करै॥ ४५॥

## ये समानाः समनसो जीवा जीवेषु मामकाः। तेषा श्रीर्मयि कल्पतामस्मिँल्लोके शत समाः॥ ४६॥

[1] ये। [2] जीवेषु। [3] समानाः। [4] समनसः। [5] मामकाः। [6] जीवाः। [7] तेषाम्। [8] श्रीः। [9] अस्मिन्। [10] लोके। [11] शत। [12] समाः। [13] मयि। [14] कल्पताम्। ४६

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

ओं ये समाना इत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीर्देवता) १

**पदार्थः** १ जो २ प्राणियों के मध्य ३ समदर्शी ४ मनस्वी ५ हमारे सपिंड ६ पितर हैं ७ उन्हों की ८ धनसम्पत्ति ९,१० इस लोक में ११,१२ शतवर्षान्तक १३ मेरे पास १४ निवास करो॥ ४६॥

द्वे स्रुती अशृणवम्पितॄणामहन्देवानामुत मर्त्यानाम्। ताभ्यामिदं विश्वमेजत्समेति यदन्तरा पितरम्मातरञ्च॥ ४७॥

१ अहम्। २ मर्त्यानाम्। ३ देवानाम्। ४ उत। ५ पितॄणाम्। ६ द्वे। ७ स्रुती ८ अशृणवम्। ९ यत्। १० पितरम्। ११ च। १२ मातरम्। १३ अन्तरा। १४ इदम्। १५ एजत्। १६ विश्वम्। १७ ताभ्याम्। १८ समेति॥ ४७॥

अध्वर्यु पय का होम करता है उसका मंत्र

ओं द्वे स्रुती त्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः देवयानपितृयानमार्गौ देवते) १

**पदार्थः** – १ मैंने २ मनुष्यों ३ देवताओं ४ और ५ पितरों के ६ दो ७ मार्ग को ८ सुना ९ जो कि १० स्वर्ग ११ और १२ पृथिवी के १३ मध्य वर्त्तमान है १४ यह १५ क्रियावान १६ विश्व १७ उन देवयान पितृयान मार्गों से १८ जाता है उन मार्गों के लिये श्रेष्ठ होम हो॥ ४७॥

इदꣳ हविः प्रजननम्मे अस्तु दशवीरꣳ सर्व्वगणꣳ स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि। अग्निः प्रजाम्बहुलाम्मे करोत्वन्नम्पयो रेतो अस्मासु धत्त ४८

१ इदम्। २ प्रजननम्। ३ दशवीरम्। ४ सर्वगणम्। ५ आत्मसनि। ६ प्रजासनि। ७ पशुसनि। ८ लोकसनि। ९ अभयसनि। १० हविः। ११ मे। १२ स्वस्तये १३ अस्तु। १४ अग्निः। १५ मे। १६ प्रजाम्। १७ बहुलाम्। १८ करोतु। १९ अस्मासु।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

अन्नम्। पयः। रेतः। धत्त॥ ४८॥

उखा में स्थित शेष पय को यजमान भक्षण करता है उसका मंत्र

ओं इदमित्यस्य (प्रजापतिऋर्षिः त्र्यवसाना ऽष्टिश्छन्दः यजमानाशीर्देवता) १

**पदार्थः** १ वह २ सन्तान का उत्पन्न करने वाला ३ दश प्राणों को स्वस्थ करने वाला ४ सब अंगों को स्वस्थ करने वाला ५ आत्मा का दाता ६ संतान का दाता ७ पशु का दाता ८ इस लोक के सुख का दाता ९ स्वर्ग का दाता १० हवि ११ मेरे १२ कल्याण के लिये १३ हो इस प्रकार हवि से प्रार्थना कर अग्नि से प्रार्थना करते हैं १४ अग्नि १५ मेरी १६ सन्तान को १७, १८ बढ़ाओ इस प्रकार अग्नि से कह कर ऋत्विजों से कहते हैं हे ऋत्विजो १९ हमारे पास २० अन्न २१ दूध २२ और पराक्रम को २३ स्थापन करो॥ ४८॥

उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुं यईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु॥ ४९॥

अवरे। उत। परासः। उत। मध्यमाः। सोम्यासः। पितरः। उत्। ईरताम्। ये। असुम्। ईयुः। ते। अवृकाः। ऋतज्ञाः। पितरः। हवेषु। नः। अवन्तु॥ ४९॥

सोमवत बर्हिषद अग्निष्वात्तनाम पितरों के मंत्रों को यजमान से कहलाता है उसका पहिला मंत्र

ओं उदीरतामित्यस्य (शंखऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः पितरो देवता) १

**पदार्थः** १ इस लोक में स्थित २ और ३ परलोक में स्थित ४ तथा ५ मध्यलोक में स्थित ६ सोम के योग्य ७ पितर ८ ऊर्द्ध्वलोक को जाओ ९ जिन्होंने १० ११ वायु रूप को प्राप्त किया १२ वे १३ शत्रु रहित उदासीन १४ सत्य वाक्य के जानने वाले अथवा स्वाध्याय में तत्पर १५ पितर १६ आह्वानों में १७ हम को १८

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

रक्षा करो ॥ ४९॥

अङ्गि रसोनः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः। तेषां वय थं सुमतौ यज्ञियानाम पि भद्रे सौमनसे स्याम ५०

नवग्वा। सोम्यासः। अङ्गिरसः। अथर्वाणः। भृगवः। नः। पितरः। तेषाम्। यज्ञियानाम्। सुमतौ। भद्रे। सौमनसे। अपि। वयम्। स्याम्॥ ५०॥

ऊँ अङ्गिरस इत्यस्य (शंख ऋषिः विराट् त्रिष्टुप् छन्दः पितरो देवता) १

**पदार्थः** १ जो नवीन गति वाले २ सोम योग्य ३ अङ्गिरा वंशी ४ अथर्व वंशी ५ भृगु वंशी ६ हमारे ७ पितर हैं ८ उन ९ यज्ञ योग्य पितरों की १० श्रेष्ठ बुद्धि ११ और कल्याण करने वाली १२ सुन्दर मनो वृत्ति में १३ भी १४ हम १५ स्थित होवें॥ ५०॥

येनः पूर्वे पितरः सोम्या सोऽनूहिरे सोमपीथं वसिष्ठाः। तेभिर्यमः स थं रराणो हवी थंष्यु शन्नु शद्भिः प्रति काम मत्तु॥ ५१

ये। सोम्यासः। वसिष्ठाः। नः। पूर्वे। पितरः। सोम पीथं। अनूहिरे। उशन्। यमः। तेभिः। उशद्भिः। संरराणः। प्रतिकामम्। हवींषि। अत्तु॥ ५१॥

ऊँ येन इत्यस्य (शंख ऋषिः निचृद् ब्राह्म्युष्णिक छन्दः पितरो देवता) १

**पदार्थः**— १ जिन २ सोम के योग्य ३ वसिष्ठ वंशी ४ हमारे ५, ६ पूर्व पितरों ने ७ सोम पान ८ देवताओं को प्राप्त कराया ९ हवि चाहने वाला १० यजमान ११ उन १२ हवि चाहने वाले पितरों के साथ १३ प्रसन्न होता १४ इच्छानुसार १५ हवियों को १६ भक्षण करो॥ ५१॥

त्व ᳫं सोम प्रचिकितो मनीषात्व ᳫं रजिष्ठमनु नेषि पन्थाम्। तव प्रणीती पितरो न इन्दो देवे षु रत्नमभजन्त धीराः॥५२॥

सोम। त्वम्। प्रचिकितः। त्वम्। मनीषा। रजिष्ठम्। पन्थाम्। अनु नेषि। इन्दो। नः। धीराः। पितरः। तव प्रणीती। देवेषु। रत्नम्। अभजन्त॥ ५२॥

ॐ त्वमित्यस्य (शंखऋषिः ब्राह्म्युष्णिक् छन्दः पितरो देवताः) १

**पदार्थः** १ हे सोम २ तुम ३ विशिष्ट चेतन्य से युक्त हो ४ तुम ५ बुद्धि द्वारा ६ ज्योति मंडल में स्थित ७ देव यान मार्ग को ८ प्राप्त कराते हो ९ हे सोम १० हमारे ११ बुद्धिमान १२ पितरों ने १३ तेरी १४ आश्रय से १५ देवताओं के बीच १६ सुन्दर यज्ञ फल को १७ प्राप्त किया॥ ५२॥

त्वया हि नः पितरः सोम पूर्वे कर्म्माणि चक्रुः पवमान धीराः। वन्वन्नवातः परिधीᳫं रपोर्णु वीरेभिरश्वैर्मघवा भवानः॥ ५३॥

पवमान। सोम। नः। धीराः। पूर्वे। पितरः। त्वया। कर्म्माणि। चक्रुः। वन्वन्। अवातः। परिधीन्। अपोर्णुहि। वीरेभिः। अश्वैः। नः। मघवा। आभव॥ ५३॥

ॐ त्वयाहीत्यस्य (शंखऋषिः आर्षी त्रिष्टुप् छन्दः सोमो देवता) १

**पदार्थः** १,२ हे शोधक सोम ३ तुम्हारे ४ बुद्धिमान ५,६ पूर्व पितरों ने ७ तेरे द्वारा ८ यज्ञ आदि कर्म्मों को ९ किया इसलिये प्रार्थना करता हूं १० इस कर्म में युक्त ११ वायु आदि उपद्रव से रहित तुम १२ उपद्रव करने वालों को १३ हटाओ और १४ वीर १५ तथा तेज से सूर्य रूप पितरों से युक्त तुम १६ हमारे १७ धन दाता १८ हूजिये॥ ५३॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

**त्व थ्ठं सोम पितृभिः संविदानोनु द्यावा पृथिवी आ ततन्थ। तस्मैत इन्दो हविषा विधेम वय थ्ठं स्याम पतयो रयीणाम्॥ ५४॥**

सोम। पितृभिः। संविदानः। त्वम्। द्यावा पृथिवी। अन्वाततन्थ। इन्दो। तस्मै। ते। हविषा। आविधेम। वयम्। रयीणाम्। पतयः। स्याम॥ ५४॥

ओंत्वमित्यस्य (शंख ऋषिः निचृद्ब्राह्म्युष्णिक् छन्दः सोमो देवता) १

**पदार्थः**— १ हे सोम २ पितरों के साथ ३ संवाद करते ४ तुमने ५ पृथिवी स्वर्ग को ६ विस्तार दिया ७ हे सोम ८ उस ९ तुझ के लिये हम १० हवि ११ देते हैं १२ हम १३ धनों को १४ स्वामी १५ हों॥ ५४॥

**वर्हिषदः पितर ऊत्यर्वागिमावो हव्याचकृमा जुषध्वम्। तआगताऽवसा शन्तमेनाथानः शं योरं रपो दधात ५५**

वर्हिषदः। पितरः। ते। ऊत्या। अर्वाक्। आगत। वः। इमा। हव्या। चकृम। आजुषध्वं। अथ। शन्तमेन। अवसा। नः। शं। योः। अरपः। दधात॥ ५५॥

ओं वर्हिषद इत्यस्य (शंख ऋषिः निचृद्ब्राह्म्युष्णिक् छन्दः पितरो देवता) १

**पदार्थः**— १ कुशासन पर बैठने वाले २ जो पितर हैं ३ वे आप ४ रक्षा के निमित्त ५ समीप ६ आइये ७ तुम्हारे ८ यह ९ हवि हमने १० संस्कार किये ११ तुम इन को सेवन करो १२ उसके पीछे १३ बड़े सुख दाता १४ अन्न से तर्पित होते १५ हमारे　१६ सुख वा रोग नाश १७ भय का हटाना १८ और पाप के अभाव को १९ स्थापन करो॥ ५५॥

**आहम्पितृन्त्सु विदत्रा २ं॥ अवित्सिनपातञ्च**

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

विक्रमणञ्च विष्णोः बर्हिषदो ये स्वधया सुतस्य
भजन्त पित्वस्त इहागमिष्ठाः ५६

अहम्। सुविदत्रान्। पितॄन्। आ। अवित्सि। विष्णोः। नपातं। च। विक्रमणं। च। ये। बर्हिषदः। स्वधया। सुतस्य। पित्वः। भजन्ते। ते। इह। आगमिष्ठाः॥ ५६॥

ओं आह मित्यस्य (शंखऋषिः आर्षी त्रिष्टुप् छन्दः पितरो देवताः) १

पदार्थः— १ मैं २ विशेष कल्याण दाता ३ पितरों को ४ प्रत्यक्ष ५ जानता हूं ६ यज्ञ के ७ पाप हीन देव यान मार्ग को ८ और ९ नाना प्रकार का गमन आगमन रखने वाले पितृ यान मार्ग को १० जानता हूं ११ जो १२ बर्हिषद नाम पितर १३ स्वधा नाम अन्न के साथ १४ अभिषुत सोम के १५ पान को १६ सेवन करते हैं १७ वे पितर १८ इस यज्ञ में १९ आओ॥ ५६॥

उपहूताः पितरस्सोम्यासो बर्हिष्येषु निधिषु
प्रियेषु। तआगमन्तु त इह श्रुवन्त्वधि ब्रुवन्तु
ते वन्त्वस्मान्॥ ५७॥

पितरः। इह। आगमन्तु। प्रियेषु। बर्हिष्येषु। निधिषु। उपहूताः। सोम्यासः। ते। श्रुवन्तु। ते। अधि ब्रुवन्तु। ते। अस्मान्। अवंतु॥ ५७॥

ओं उपहूता इत्यस्य (शंखऋषिः भुरिगार्षी पंक्ति श्छन्दः पितरो देवता):१

पदार्थः— १ हे पितरो २ इस यज्ञ में ३ आओ ४ और प्रिय ५ कुशा पर रक्खे हुए ६ और निधि की समान स्थापन योग्य हवियों पर ७ बुलाये हुए ८ जो सोम योग्य पितर हैं ९ वे १० हमारे वचन को सुनों ११ वे १२ उस वाक्य को कहो जो पितरों के लिये कहना चाहिये १३ वे १४ हम को १५ पालन करो॥ ५७॥

आयन्तु नः पितरस्सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः प

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

थिभिर्देव यानैः। अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्॥ ५८॥

सोम्यासः। अग्निष्वात्ताः। नः। पितरः। देव यानैः। पथिभिः। आयन्तु। अस्मिन्। यज्ञे। स्वधया। मदन्तः। अधि ब्रुवन्तु। ते। अस्मान्। अवन्तु॥ ५८॥

ओं आयन्त्वित्यस्य (शंखऋषिः स्वराट् ब्राह्मी गायत्री छन्दः पितरो देवता) १

**पदार्थः** १ सोमपान योग्य २ श्रौतस्मार्त्त कर्म के अनुष्ठाता ३ हमारे ४ पितर ५,६ देव यान मार्गों से ७ आओ ८,९ इस यज्ञ में १० स्वधानाम अन्न से ११ तृप्त और सन्तुष्ट होते हम को १२ अधिक कहो अर्थात् हम उन के आशीर्वाद से वृद्धि पावें १३ वे पितर १४ हम को १५ पालन करो॥ ५८॥

अग्निष्वात्ताः पितर एह गच्छत सदः सदः सदत सुप्रणीतयः। अत्ता हवीꣳषि प्रयतानि बर्हिष्यथा रयिꣳ सर्ववीरन्दधातन ५९

अग्निष्वात्ताः। पितरः। इह। आगच्छत। सुप्रणीतयः। सदः सदः। सदत। बर्हिषि। प्रयतानि। हवींषि। आ। अत्त। अथ। सर्ववीरं। रयिꣳ। आ। दधातन॥ ५९॥

ओं अग्निष्वात्ता इत्यस्य (शंखऋषिः- निचृद्ब्राह्म्यनुष्टुप् छन्दः पितरो देवता) १

**पदार्थः** १ हे अग्निष्वात्त नाम २ पितरो ३ इस यज्ञ में ४ आओ ५ सुन्दर नीतिवाले तुम ६,७ प्रत्येक गृह में ८ बैठो ९ कुशा पर १० नियम से स्थापित ११ हवियों को १२ आदर पूर्वक १३ भक्षण करो १४ इस के पीछे १५ पुत्र पौत्रों से युक्त १६ धन को १७ सब ओर से १८ दो॥ ५९॥

ये अग्निष्वात्ता ये अनग्निष्वात्ता मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते। तेभ्यः स्वराडसुनीतिमेतां य-

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

याव॒शन्त॒न्वङ्क॒ल्पयाति ॥ ६० ॥

ये। अग्निष्वात्ताः। ये। अनग्निष्वात्ताः। दिवः। मध्ये। स्वधया। मादयन्ते। स्वराट्। तेभ्यः। यथावशम्। एताम्। असुनीतिम्। तन्वम्। कल्पयाति॥ ६०॥

ओं येऽग्निष्वात्ता इत्यस्य (शंखऋषिः ब्राह्म्युष्णिक् छन्दः पितरो देवताः) १

**पदार्थः**—१ जो २ अग्नि से दग्धविधि से और्द्ध्वदैहिक कर्म को प्राप्त हैं ३ और जो पितर ४ अग्नि में दग्ध नहीं हुए अर्थात् श्मशान कर्म को प्राप्त नहीं किया और ५, ६ स्वर्ग में ७ अपने कर्मोपार्जित अन्न से ८ तृप्त होते हैं जिस कारण ९ ईश्वर १० उन पितरों के लिये ११ इच्छानुसार १२ इस १३ प्राणयुक्त १४ शरीर को १५ देता है॥ ६०॥

अ॒ग्नि॒ष्वा॒त्तानृ॑तु॒मतो॑ हवामहे नारा॒श॒ꣳसे सो॑मपी॒थं य आ॒शुः। ते नो॒ विप्रा॑सः सु॒हवा॑ भवन्तु व॒यꣳ स्या॑म॒ पत॑यो र॒यी॒णाम् ॥ ६१ ॥

ऋतुमतः। अग्निष्वात्तान्। हवामहे। ये। नाराशंसे। सोमपीथं। आशुः। ते। विप्रासः। नः। सुहवाः। भवन्तु। वयम्। रयीणाम्। पतयः। स्याम॥ ६१॥

ओं अग्निष्वात्ता इत्यस्य (शंखऋषिः आर्षीत्रिष्टुप् छन्दः पितरो देवताः) १

**पदार्थः** १ यज्ञकाल से युक्त २ अग्निष्वात्त नाम पितरों को ३ हम आह्वान करते हैं ४ जो पितर ५ चमस पात्र में ६ सोमपान को ७ भक्षण करते हैं ८ वे ९ पितर १० हमारे ११ सुख से बुलाने योग्य १२ हों १३ और हम १४ धनों के १५ स्वामी १६ होवें॥ ६१॥

आच्या जानु॑ दक्षिण॒तो नि॒षद्ये॒मं य॒ज्ञम॒भि गृ॑णीत॒ विश्वे॑। मा हि॑ꣳसिष्ट पितरः॒ केन॑ चिन्नो॒ यद्व॒ आ

गः पुरुषता करांम ॥ ६२॥

पितरः। विश्वे। जानुः। स्रोः। आच्य। दक्षिणतः। निषद्य। इमम्। यज्ञम्। अभिगृणीत। केन। चित्। नः। मा। हिंसिष्ट। यत्। पुरुषता। वः। आगः। वयम्। करांम॥ ६२॥

ॐआच्याज्यन्वित्यस्य (शंखऋषिः निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः पितरो देवताः) १

पदार्थः– १ हे पितरो २ तुम सब ३ जानु को ४,५ गिरा कर ६ दक्षिण मुख ७ बैठक ८ इस ९ यज्ञ को १० सरा हो ११ किसी अपराध से १२ हम को १३ मत १४ पीड़ा दो १५ जिस कारण १६ पुरुष भाव से १७ तुम्हारे १८ अपराध को १९ हम २० करते हैं। ६२

आसीनासो अरुणीनामुपस्थे रयिन्धत्त दाशुषे मर्त्याय। पुत्रेभ्यः पितरस्तस्य वस्वः प्रयच्छत त इहोर्जन्दधात॥ ६३॥

पितरः। अरुणीनाम्। उपस्थे। आसीनासः। दाशुषे। मर्त्याय। रयिम्। धत्त। पुत्रेभ्यः। तस्य। वसुनः। प्रयच्छत। ते। इह। ऊर्जं। दधात॥ ६३॥

ॐआसीनास इत्यस्य (शंखऋषिः ब्राह्म्युष्णिक् छन्दः पितरो देवताः) १

पदार्थः– १ हे पितरो २ अरुण वर्णऊन के आसनों अथवा सूर्य्य की किरणों के ३ ऊपर वा गोद में ४ बैठे हुए तुम ५ हवि के दाता ६ यजमान के लिये ७ धन को ८ दो ९,१० उस के पुत्रों के लिये ११ धन का १२ दान करो १३ वे तुम १४ इस यज्ञ में १५ रस को १६ स्थापन करो॥ ६३॥

यमग्ने कव्यवाहन त्वञ्चिन्मन्यसे रयिम्। तन्नो गीर्भिः श्रवाय्यन्देवत्रा पनया युजम्॥ ६४॥

कव्यवाहन। अग्ने। त्वम्। चित्। यम्। रयिम्। मन्यसे। नः। तम्। गीर्भिः। श्रवाय्यं। युजं। देवत्रा। आपनय॥ ६४॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

ॐ यमग्न इत्यस्य (शंखऋषिः आर्ची पंक्तिश्छन्दः अग्निर्देवता) १

**पदार्थः** १ हे पितरों के अन्न को प्राप्त कराने वाले २ अग्ने ३ तुम ४ भी ५ जिस ६ हवि रूप धन को ७ उत्तम जानते हो ८ हमारे ९ उस १० वचनों से ११ श्रवण योग्य १२ हवि रूप धन को १३ देवताओं के मध्य १४ सब ओर से दो॥ ६४॥

**योऽअग्निः कव्यवाहनः पितॄन्यक्षदृतावृधः। प्रेदु हव्यानि वोचति देवेभ्यश्च पितृभ्यऽआ॥ ६५**

यः। कव्यवाहनः। अग्निः। ऋतावृधः। पितॄन्। यक्षत्। ऊं इति। इत्। देवेभ्यः। च। पितृभ्यः। हव्यानि। आ। प्र। वोचति ६५

ॐ यो अग्निरित्यस्य (शंखऋषिः आर्ष्यनुष्टुप्छन्दः अग्निर्देवता) १

**पदार्थः**—१ जिस २ कव्य वाहन नाम ३ अग्नि ने ४ सत्य वा यज्ञ के वृद्धि देने वाले ५ पितरों को ६ यजन किया ७,८ वही अग्नि ९ देवताओं १० और ११ पितरों के लिये १२ हवियों को १३ सब ओर से १४ जतलाता है॥ ६५॥

**त्वमग्नऽईडितः कव्यवाहनावाड्ढव्यानि सुरभीणि कृत्वी। प्रादाः पितृभ्यः स्वधया ते अक्षन्नद्धि त्वन्देव प्रयता हवींषि॥ ६६॥**

कव्यवाहन। अग्ने। ईडितः। त्वम्। हव्यानि। सुरभीणि। कृत्वी। अवाट्। स्वधया। पितृभ्यः। प्र। अदाः। ते। अक्षन्। देव। त्वम्। प्रयता। हवींषि। अद्धि॥ ६६॥

ॐ त्वमित्यस्य (शंखऋषिः निचृत्त्रिष्टुप्छन्दः अग्निर्देवता) १

**पदार्थः**—१ हे कव्य वाहन नाम २ अग्ने ३ देवताओं अथवा ऋत्विजों से स्तुति किये हुए ४ तुमने ५ हवियों को ६ सुगन्धित ७ करके ८ धारण किया ९ पितृ मंत्र से १० पितरों के लिये ११ दिया १२ उन पितरों ने १३ भक्षण किया १४ हे अग्नि देवता १५ तुम भी १६ शुद्ध १७ हवियों को १८ भक्षण करो॥ ६६॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

**येचेह पितरो येचनेह यांश्च विद्मयाँ२॥ उंचनप्र विद्म। त्वं वेत्थ यति तेजात वेदः स्वधाभिर्यज्ञं सुकृतंजुषस्व ६७**

च[1]। ये[2]। पितरः[3]। इह[4]। च[5]। ये[6]। इह[7]। न[8]। च[9]। यान्[10]। विद्म[11]। च[12]। यान्[13]। उं[14]। न[15]। प्रविद्म[16]। जातवेदः[17]। ते[18]। यति[19]। त्वम्[20]। उं। वेत्थ[21]। स्वधाभिः[22]। सुकृतं[23]। जुषस्व[24]॥ ६७॥

ओं येचेहेत्यस्य(शंख ऋषिः ब्राह्म्युष्णिक् छन्दः अग्निर्देवता) १

**पदार्थः**- १ और २ जो ३ पितर ४ इस लोक में देह को धारण करके वर्त्तमान हैं ५ और ६ जो ७ इस लोक में ८ नहीं हैं अर्थात् स्वर्ग में हैं ९ और १० जिन पितरों को ११ हम जानते हैं १२ और १३ जिन पितरों को १४,१५ नहीं जानते स्मरण न होने से १६ हे सर्वज्ञ अग्नि १७ वे पितर १८ जितने हैं १९ तुम २० ही २१ उनको जानते हो २२ पितरों के अन्नों से २३ शुभ यज्ञ को २४ सेवन करो॥ ६७॥

**इदमिपितृभ्यो नमो अस्त्वद्य ये पूर्वासो य उपरास ईयुः। ये पार्थिवे रजस्या निषत्ता ये वा नूनं सुवृजनासु विक्षु॥ ६८॥**

अद्य[1]। इदम्[2]। नमः[3]। पितृभ्यः[4]। अस्तु[5]। ये[6]। पूर्वासः[7]। ये[8]। उपरासः[9]। ईयुः[10]। ये[11]। पार्थिवे[12]। रजसि[13]। निषत्ताः[14]। वा[15]। ये[16]। नूनं[17]। सुवृजनासु[18]। विक्षु[19]॥ ६८॥

ओं इदमित्यस्य(शंख ऋषिः ब्राह्म्युष्णिक् छन्दः पितरो देवता) १

**पदार्थः**- १ अब २ यह ३ अन्न ४ पितरों के लिये ५ हो ६ जो ७ पूर्व ऋषि हैं ८ जो ९ कृतकृत्य १० सगुण ब्रह्म को प्राप्त हुए ११ जो १२,१३ स्वर्गादि लोकों में १४ विराजमान हैं १५ अथवा १६ जो १७ निश्चय १८ धर्म बलरूप बल से युक्त १९ प्रजाओं अर्थात् मनुष्य लोक में देह धारण करके वर्तमान हैं॥ ६८॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

अधा॒य यथा॑नः पि॒तरः॒ परा॑सः प्र॒त्नासो॑ऽअग्नऽऋ॒त
मा॑शुषा॒णाः। शुची॒दय॒न्दीधि॑तिमुक्थ॒शासः॒
क्षामा॑ भि॒न्दन्तो॑ऽअरु॒णीरप॑व्रन् ६९

अग्ने। नः। परा॑सः। प्र॒त्नासः॑। ऋ॒तम्। आ॒शु॒षा॒णाः। पि॒तरः॑। यथा॑। अधा॑। शुचि॑। दीधि॑तिम्। इत्। अ॒य॒न्। उ॒क्थ॒शासः॑। क्षामा॑। भि॒न्दन्तः॑। अ॒रु॒णीः। अप॑। व्र॒न्॥ ६९॥

ओं अधेत्यस्य (शंख ऋषिः। आर्ची त्रिष्टुप् छन्दः। अग्निर्देवता) १

**पदार्थः** – १ हे अग्ने २ हमारे ३ उत्कृष्ट ४ सनातन ५ यज्ञ को ६ प्राप्त करने वाले ७ पितरों ने ८ जिस प्रकार ९ अधोलोक से १० निर्मल ११ सूर्य मंडल को १२ ही १३ प्राप्त किया उसी प्रकार १४ यज्ञों में शस्त्र नाम स्तोत्रों को पढ़ने १५ और वेदी आदि के खोदने से भूमि को १६ भेदते हम १७ सूर्य्य ज्योति को १८ प्राप्त करें॥ ६९॥

उ॒शन्त॑स्त्वा नि॒धीम॑ह्यु॒शन्तः॒ समि॑धीमहि। उ॒
शन्नु॑श॒तऽआव॑ह पि॒तॄन्ह॒विषे॒ऽअत्त॑वे॥ ७०॥

उ॒शन्तः॑। त्वा॒। नि॒धी॒म॒हि॒। उ॒शन्तः॑। सम्। इ॒धी॒म॒हि॒। उ॒शन्। उ॒श॒तः। पि॒तॄन्। ह॒विषे॑। अत्त॑वे। आ। व॒ह॒॥ ७०॥

ओं उशन्त इत्यस्य (शंख ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। अग्निर्देवता) १

**पदार्थः** – हे अग्ने १ कामार्थी हम २ तुझे ३ स्थापन करते हैं ४ कामार्थी हम तुझे ५ प्रज्वलित करते हैं ६ हवि चाहने वाले ७ हवि चाहने वाले ८ पितरों को ९, १० हवि भक्षण करने को ११ लाओ॥ ७०॥

अ॒पां फेने॑न॒ नमु॑चेः॒ शिर॒ऽइन्द्रोद॑वर्त्तयः। विश्वा॒
यदज॑य॒ः स्पृध॑ः॥ ७१

इन्द्र॑। यत्। विश्वाः॑। स्पृधः॑। अज॑यः। अ॒पाम्। फेने॑न।

नमुचेः[८]। शिरः[९]। उदवर्तयः[१०]॥ ७१॥

ओं अपा मित्यस्य (शंखऋषिः गायत्री छन्दः इन्द्रो देवता) १

**पदार्थः** – १ हे इन्द्र २ जब तुमने ३ सब ४ संग्रामों को ५ जीता तब ६, ७ जल के फेन से ८ नमुचि असुर के ९ शिर को १० काटा॥ ७१॥

**अथाध्यात्मम्** १ हे आत्मारूप यजमान २ जिस कारण तुमने ३, ४ कामआदि के सब संग्रामों को ५ जीता उस कारण ६ कमलान्त रिक्षों के ७ कामजनित मल से ८ पाप के ९ शिर को १० काटा॥ ७१॥

**सोमो राजा मृत थं सुत ऋजीषेणा जहान्मृत्युम्**
**ऋतेन सत्य मिन्द्रिय थं विपानं शुक्र मन्धस इन्द्र**
**स्येन्द्रिय मिदम्पयो मृतुम्मधु॥ ७२॥**

सुतः[१]। राजा[२]। सोमः[३]। अमृतम्[४]। ऋजीषेण[५]। मृत्युम्[६]। अजहात्[७]। ऋतेन[८]। इन्द्रस्य[९]। इदम्[१०]। अन्धसः[११]। शुक्रम्[१२]। इन्द्रियम्[१३]। विपानम्[१४]। इन्द्रियम्[१५]। अमृतम्[१६]। मधु[१७]। पयः[१८]। सत्यम्॥ ७२

अध्वर्यु आठ ऋचा के अनुवाक् से समान काल पर ही पयोग्रह और सुरा ग्रहों का उपस्थान करता है उस का पहिला मंत्र १

ओं सोम इत्यस्य (अश्वि सरस्वतीन्द्र ऋषयः महाबृहती छन्दः सोमो देवता) १

**पदार्थः** – जिस कारण १ अभिषुत २, ३ राजा सोमने ४ अमृत रूप हो कर ५ निरस सोमलता चूर्ण से ६ स्थूल भाव को ७ त्याग किया उस कारण ८ यज्ञ द्वारा ९ इन्द्र का १० यह ११ सोम सम्बन्धी १२ शुद्ध १३ वल दाता १४ पान तथा १५ वल दाता १६ अमृत तुल्य १७ मधुर १८ दुग्ध १९ सत्य होता है॥ ७२॥

**अथाध्यात्मम्** – जिस कारण १ देहाभिमान से पृथक् किये हुए २ शोभा मान ३ आत्म प्रति विंव ने ४ अमृत रूप हो कर ५ देह द्वारा ६ मृत्यु को ७ त्यागा उस कारण ८ योग यज्ञ द्वारा ९ आत्मा का १० यह ११ आत्म प्रति विंव-

CC-0. In Public Domain. Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

सम्बंधी १२ शुद्ध १३ योग बल दाता १४ विपान तथा १५ योग बल का दाता १६ अमृत तुल्य १७ मधुर १८ प्राण १९ सत्य रूप होता है॥७२॥

अद्भ्यः क्षीरं व्यपिबत्क्रुङ्ङाङ्गिरसो धिया। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ॥७३॥

क्रुङ्। आङ्गिरसः। धिया। अद्भ्यः। क्षीरम्। व्यपिबत्॥७३॥

ओं अद्भ्य इत्यस्य (अश्वि सरस्वतीन्द्रा ऋषयः महा बृहती छन्दः ग्रहा देवताः) १

पदार्थः – तिस कारण १ हंस रूप २ आत्माने ३ बुद्धि द्वारा ४ कमलांतरिक्षों से ५ दुग्ध रूप आत्म प्रतिबिंब को ६ पान किया उस कारण॥७३॥

सोममद्भ्यो व्यपिबच्छन्दसा हंसः शुचिषत्। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ७४

शुचिषत्। हंसः। अद्भ्यः। छन्दसा। सोमम्। व्यपिबत्॥७४॥

ओं सोममित्यस्य (अश्वि सरस्वतीन्द्रा ऋषयः महा बृहती छन्दः ग्रहा देवताः) १

पदार्थः १ ब्रह्माग्नि में स्थित २ आत्माने ३ कमलान्तरिक्षों से ४ महा वाक् द्वारा ५ आत्म प्रतिबिंब को ६ पान किया उस कारण॥७४॥

अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ७५

प्रजापतिः। परिस्रुतः। अन्नात्। रसम्। सोमम्। क्षत्रम्। पयः। ब्रह्मणा। व्यपिबत्॥७५॥

ओं अन्नादित्यस्य (अश्वि सरस्वतीन्द्रा ऋषयः अति जगती छन्दः ग्रहा देवताः) १

पदार्थः १ आत्माने २ देह रूप ३ अन्न से ४ रस रूप ५ आत्म प्रतिबिंब ६ आण ७

और श्रोत्र आदि शिर के प्राणों को ८ महावाक् द्वारा ९ पान किया उस कारण॥३५॥

रेतो मूत्रं विजहाति योनिम्प्रविशदिन्द्रियम्। गर्भो जरायुणावृत उल्वञ्जहाति जन्मना। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतम्मधु॥७६॥

इन्द्रियम्। योनिम्। प्रविशत्। रेतः। मूत्रम्। विजहाति। जरायुणा। आवृतः। गर्भः। जन्मना। उल्वम्। जहाति।०७६॥

ओंरेत इत्यस्य (अश्वि सरस्वतीन्द्रा ऋषयः अति शक्वरी छन्दः ब्रह्मा देवता)१

**पदार्थः** १ इन्द्रिय समूहों के साथ २ ब्रह्म में ३ प्रवेश करता ४ आत्म प्रतिबिंब को ५ और लिङ्ग शरीर को ६ त्यागता है तथा ७ पराशक्ति से ८ ब्रह्म का ९ आत्मप्रतिबिंब १० मोक्ष सम्बंधी संस्कार द्वारा ११ देह रूप जरायु को १२ त्याग करता है उस कारण॥७६॥

दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत्सत्यानृते प्रजापतिः। अश्रद्धामनृते दधाच्छ्रद्धां सत्ये प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतम्मधु॥७७॥

प्रजापतिः। सत्यानृते। रूपे। दृष्ट्वा। व्याकरोत्। प्रजापतिः। अनृते। अश्रद्धाम्। अदधात्। सत्ये। श्रद्धाम्। अदधात्॥७७॥

ओंदृष्ट्वेत्यस्य (अश्वि सरस्वतीन्द्रा ऋषयः अति शक्वरी छन्दः ब्रह्मा देवता)१

**पदार्थः**— १ ब्रह्म ने २,३ परा अपरा नाम प्रकृतियों को ४ देख कर ५ पृथक् किया ६ फिर ब्रह्म ने ७ अपरा में ८ अश्रद्धा को ९ स्थापन किया १० परा में ११ श्रद्धा को १२ स्थापन किया उस कारण०॥७७॥

वेदेन रूपे व्यपिवत्सुतासुतौ प्रजापतिः। ऋतेन सत्य

मिन्द्रियं विपानं छं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रिय मिदम्पयोमृतम्मधु॥ ७८॥

प्रजापतिः। सुतो सुतो। रूपे। वेदेन। व्यापिवत्॥ ७८॥

ओं वेदेनेत्यस्य (आश्विसरस्वतीन्द्रा ऋषयः महाबृहती छन्दः ग्रहा देवताः) १

**पदार्थः** १ आत्मा ने २ परा और अपरा नाम ३ रूपों को ४ स्नान से ५ पान कियाउस कारण॥ ७८॥

दृष्ट्वा परिस्रुतो रसं छं शुक्रेण शुक्रं व्यपिवत्पयः सोमम्प्रजापतिः। ऋतेनेन सत्यमिन्द्रियं विपानं छं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रिय मिदम्पयोमृतम्मधु ७९

प्रजापतिः। परिस्रुतः। रसम्। दृष्ट्वा। शुक्रेण। पयः। सोमम्। शुक्रं। व्यापिवत्॥ ७९॥

ओं दृष्ट्वेत्यस्य (आश्विसरस्वतीन्द्रा ऋषयः अतिजगती छन्दः ग्रहा देवताः) १

**पदार्थः** १ ब्रह्म ने २ देह के ३ रस अर्थात भूतात्मा को ४ देख कर ५ सूर्य रूपसे ६ प्राण ७ और अमृत रूप ८ मानस सूर्य को ९ पान कियाउस कारण ७९

सीसेन तन्त्रम्मनसा मनीषिण ऊर्णासूत्रेण कवयो वयन्ति। अश्विना यज्ञं छं सविता सरस्वती न्द्रस्य रूपं वरुणो भिषज्यन् ८०

अश्विना। सविता। सरस्वती। वरुणः। मनीषिणः। कवयः। इन्द्रस्य। रूपम्। भिषज्यन्। यज्ञम्। वयन्ति। सीसेन। ऊर्णासूत्रेण। मनसा। तन्त्रम्॥ ८०॥

बत्तीस सुरा ग्रहों को होमता है उसका पहिला मंत्र

ओं सीसेनेत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः जगती छन्दः आश्विसरस्वतीन्द्रा देवताः) १

**पदार्थः** १ अश्विनी कुमारों २ सूर्य ३ सरस्वती ४ वरुण ५ ये सब बुद्धिमान

६ सर्वज्ञ देवता ७ इन्द्र के ८ रूप को ९ रोग रहित करते १० सौत्रामणी यज्ञ को ११ सिद्ध करते हैं जिस प्रकार १२ सीसा धातु १३ ऊन के सूत्र १४ और मन के द्वारा १५ अंगद वा पट को बुनते हैं॥ ८०॥

**अथाध्यात्मम्** १ नरनारायण २ सूर्य ३ वागाधिष्ठात्री देवता ४ महानारायण ५ ये सब बुद्धिमान ६ और सर्वज्ञ ७ यजमान के ८ रूप को ९ संसार रोग से रहित करते १० योग यज्ञ को ११ सिद्ध करते हैं जिस प्रकार १२ सीसा धातु १३ ऊन के सूत्र १४ मन के द्वारा १५ अंगद वा पट को बनाते हैं॥ ८०॥

**तदस्य रूपममृतꣳ शचीभिस्तिस्रो दधुर्देवताः संरराणाः। लोमानि शष्पैर्बहुधा न तोक्मभिस्त्वगस्य माꣳसमभवन्न लाजाः॥ ८१॥**

तिस्रः। देवताः। संरराणाः। अस्य। तत्। अमृतम्। रूपम्। शचीभिः। सन्दधुः। अस्य। लोमानि। शष्पैः। न। त्वक्। तोक्मभिः। बहुधा। न। मांसम्। लाजाः। सम्भवन्॥ ८१॥

ऊँ तदस्येत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः जगती छन्दः अश्विसरस्वतीन्द्रा देवताः) १

**पदार्थः** १, २ तीन देवता अश्विनी कुमार सरस्वती ने ३ भले प्रकार रमण करते हुए ४ इस इन्द्र के ५ उस ६ अविनाशी ७ रूप को ८ परिमाणुओं से ९ प्राप्त कराया उस को कहते हैं १० इस इन्द्र के ११ बालों को १२ विरूढ़ चांवलों से उत्पन्न किया १३ और १४ त्वचा को १५ विरूढ़ यवों से १६ बहुत प्रकार से प्रकट किया १७ और १८, १९ खील मांस रूप २० हुई॥ ८१॥

**अथाध्यात्मम्**– १, २ तीन देवता अर्थात् वागाधिष्ठात्री देवी और नरनारायण ने ३ भले प्रकार रमण करते हुए ४ इस यजमान के ५ उस ६ अमृत ७ रूप को ८ महावाक्य द्वारा ९ यज्ञांग रूप नियत किया इस को कहते हैं १० इस यजमान के ११ रोम शरीर १२ शष्प रूप हुए १३ और १४ त्वचा १५ विरूढ़ यव

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

रूप १६ वहुत प्रकार से फूई १७ और १८ शरीर का मांस १९ खील २० फूई॥ ८१॥

**तदश्विना भिषजा रुद्रवर्त्तनी सरस्वती वयति पेशो अन्तरम्। अस्थि मज्जानं मासरैः कारोतरेण दधतो गवान्त्वचि॥ ८२॥**

गवाम्। त्वचि। दधतुः। रुद्रवर्तिनी। भिषजा। अश्विना। सरस्वती। अन्तरम्। पेशः। वयति। अस्थि। मासरैः। न। मज्जानम्। कारोतरेण॥ ८२॥

ओंतदश्विनेत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः जगती छन्दः अश्वि सरस्वतीन्द्रा देवताः) १

**पदार्थः** १,२ गोचर्म पर ३ सुरा को स्थापन करते ४ रुद्र की समान मार्ग वाले ५ वैद्य ६ अश्विनी कुमार ७ और सरस्वती ८,९ इन्द्र के शरीर मध्य वर्त्तमान रूप को १० परिपूर्ण करते हैं उसी को कहते हैं ११ प्राणों को १२ मासरों से १३ और १४ मज्जा को १५ कारोतर से सिद्ध करते हैं॥ ८२॥

**अथाध्यात्मम्**—१ इन्द्रियों के २ गोलक में ३ अविद्या को स्थापन करते ४ प्राण मार्ग में वर्त्तमान ५ संसार रोग के नाशक ६ नरनारायण ७ और महावाक् भी ८,९ यजमान के यज्ञ स्वरूप को १० सिद्ध करते हैं उसी को कहते हैं ११ हाड़ों को १२ मासरूप १३ और १४ मज्जा को १५ कारोतर रूप से नियत करते हैं ८२

**सरस्वती मनसा पेशलं वसु नासत्याभ्यां वयति दर्शतं वपुः। रसं परिस्रुता न रोहितं नग्नहुर्धीरस्तसरं न वेम॥ ८३॥**

नासत्याभ्याम्। सरस्वती। मनसा। पेशलम्। वसु। दर्शतम्। वपुः। वयति। न। रसम्। परिस्रुता। रोहितम्। धीरः। नग्नहुः। न। तसरम्। वेम॥ ८३॥

ओंसरस्वतीत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः जगती छन्दः अश्वि सरस्वतीन्द्रा देवताः) १

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

**पदार्थः** १ अश्विनी कुमारों के साथ २ सरस्वती ३ मन से विचार कर इन्द्र के ४ चांदी सोना रूप ५ धन को तथा ६ दर्शनीय ७ रूप को ८ उत्पन्न करते हैं ९ और १० रस को ११ सुरा के साथ स्थापन करते हैं तब १२ रुधिर १३, १४ मादक सुरा कन्द १५ और १६ सूत्र १७ वाप दंड हुआ॥ ८३॥

**अथाध्यात्मम्** १ अविनाशी नरनारायण सहित २ वागाधिष्ठात्री देवी ३ मन से विचार कर यजमान के ४ विष्णु सम्बंधी ५ योगैश्वर्य तथा ६ सूर्य तुल्य ७ रूप को ८ उत्पन्न करती है ९ तब १० देह में वर्त्तमान अन्न रस ११ सुरा रूप हुआ १२ रुधिर १३ मादक १४ सुरा कन्द १५ और १६ सूत्र १७ वाप दंड हुआ॥ ८३॥

**पयसा शुक्रममृतञ्जनित्रꣳ सुरया मूत्राज्जनयन्त रेतः। अपामतिन्दुर्मतिम्बाधमाना ऊवध्यं वातꣳ सब्वन्तदारात्॥ ८४॥**

**पयसा। शुक्रम्। अमृतम्। जनित्रम्। रेतः। जनयन्त। आरात्। अमतिम्। दुर्मतिम्। बाधमानाः। तत्। ऊवध्यम्। वातम्। सुरया। सब्वम्। अपमूत्रात्॥ ८४॥**

ॐ पयसेत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः जगती छन्दः अश्विसरस्वतीन्द्रा देवताः) १

**पदार्थः** तीनों देवताने १ दुग्ध से इन्द्र के २ शुद्ध ३ अमृत रूप ४ जनन शील ५ वीर्य को ६ उत्पन्न किया ७ तथा समीप में ८ अज्ञान ९ और दुर्बुद्धि को १० निवृत्त करते तीनों देवताने ११ उस १२ आमाशय गत अन्न सम्बंधी १३ माण को १४ सुरा से तथा १५ पक्काशय में विद्यमान वायु को १६ गतसार सोम से उत्पन्न किया ८४

**अथाध्यात्मम्**– तीनों देवताने १ माण से यजमान के २ शुद्ध ३ अमृत ४ मोक्षजनक ५ योग वल को ६ उत्पन्न किया तथा ७ समीप में ८ अज्ञान ९ और दुर्बुद्धि को १० निवृत्त करते तीनों देवताने ११ उस १२ आमाशय में विद्यमान अन्न सम्बंधी १३ वायु को १४ सुरा रूप से तथा १५ पक्काशय में विद्यमान वायु को

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

१६ गात सार सोम रूप से कल्पना किया ॥ ८४ ॥

**इन्द्रः सुत्रामा हृदयेन सत्यम् पुरोडाशेन सविता जजान । यकृत्क्लोमानं वरुणो भिषज्यन्मतस्नेवा यव्यैर्न मिनाति पित्तम् ॥ ८५ ॥**

सुत्रामा । इन्द्रः । हृदयेन । सविता । पुरोडाशेन । सत्यम् । जजान । भिषज्यन् । वरुणः । यकृत् । क्लोमानं । मतस्ने । न । पित्तं । वायव्यैः । मिनोति ॥ ८५ ॥

ॐ इन्द्रस्येत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः जगती छन्दः अश्वि सरस्वतीन्द्रा देवताः) १

**पदार्थः** १ श्रेष्ठ रक्षक २ महा नारायण ने ३ हृदय से तथा ४ विराट् पुरुष ने ५ मानस सूर्य से इन्द्र के ६ सत्य को ७ उत्पन्न किया ८ इन्द्र की चिकित्सा करता ९ वरुण १० काल खंड ११ गल नाडि का १२ हृदय के दोनों पार्श्व के हाड़ १३ और १४ पित्त को १५ सोम यज्ञ के पात्रों से १६ रचता है ॥ ८५ ॥

**अथाध्यात्मम्** १ श्रेष्ठ रक्षक २ महानारायण ने ३ हृदय से तथा ४ सूर्य्य ने ५ आत्म प्रति विंब से ६ सत्य को ७ प्रकट किया ८ और यजमान की चिकित्सा करता ९ ईश्वर १० काल खंड ११ गल नाडि का १२ हृदय के दोनों पार्श्व के हाड़ १३ और १४ पित्त को १५ पात्र रूप १६ कल्पना करता है ॥ ८५ ॥

**आन्त्राणि स्थाली र्म्मधु पिन्वमाना गुदाः पात्राणि सुदुघा न धेनुः । श्येनस्य पत्रन्न प्लीहा शचीभिरासन्दी नाभिरुदरन्न माता ८६**

मधु । पिन्वमानाः । स्थालीः । आन्त्राणि । सुदुघा । धेनुः । न । पात्राणि । गुदाः । न । श्येनस्य । पत्रम् । प्लीहा । न । माता । आसंदी । शचीभिः । नाभिः । उदरं ॥ ८६ ॥

ॐ आन्त्राणीत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः जगती छन्दः अश्वि सरस्वतीन्द्रा देवताः) १

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

**पदार्थः** १,२ मधु सींचती ३ थालि यां ४ आती हुई ५,६ अच्छा दूध देने वाली गौ के ७ समान ८ यज्ञ पात्र ९ प्राण हुए १० और ११ श्येन का १२ पंख १३ हृदय के वाम भाग में स्थित मांस पिंड हुआ १४ और १५ अभिषेक की स्थान माता की समान १६ मंचिका १७ कर्मों के द्वारा १८ नाभि १९ और उदर हुई॥ ८६॥

**अथाध्यात्मम्**- १,२ मधु सींचने वाली ३ स्थालियां वे नियत हुई ४ जो कि शरीर की आंत हैं ५ अच्छा दूध देने वाली ६ गौ के ७ तुल्य ८ पात्र वे नियत हुए ९ जिन को प्राण कहते हैं १० और ११,१२ श्येन का पंख १३ वह हुआ जिसे हृदय के वाम भाग में स्थित शिथिल मांस पिंड कहते हैं १४ और १५ माता की समान १६ मंचिका १७ कर्म कारणों से वह हुई जिसे १८ नाभि १९ और उदर कहते हैं ८६

**कुम्भो वनिष्ठुर्ज्जनिता शचीभिर्य्यस्मिन्नग्रे योन्याङ्गर्भोऽअन्तः। प्लाशिर्व्यक्तः शतधारऽउत्सो दुहे न कुम्भी स्वधाम्पितृभ्यः॥ ८७**

जनिता। कुम्भः। शचीभिः। वनिष्ठुः। यस्मिन्। योन्याम्। अन्तः। अग्रे। गर्भः। शतधारः। उत्सः। व्यक्तः। प्लाशिः। न। कुम्भी। पितृभ्यः। सुधां। दुहे॥ ८७॥ **अथाधिदेवम्**

ओं कुम्भ इत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः जगती छन्दः अश्विसरस्वतीन्द्रा देवताः) १

**पदार्थः** १,२ सुरा का घड़ा ३ कर्म्मों के द्वारा ४ स्थूल आंत हुआ ५ जिस ६ कुम्भ के मध्य ८ प्रथम ९ सुरा रूप गर्भ वसा वह १०,११ कूप तुल्य कुम्भ १२ प्रत्यक्ष में १३ लिङ्ग हुआ १४ और १५ सुराधानी ने १६ पितरों के लिये १७ अन्न को १८ प्रकट किया॥ ८७॥

**अथाध्यात्मम्** – १,२ सुराधान कुम्भ ३ योग यज्ञ के कारणों से वह हुआ जिसे ४ स्थूल आंत कहते हैं ५ जिस ६ कुंभ के ७ बीच ८ प्रथम ९ सुरा रूप गर्भ वसा वह १०,११ कूप तुल्य १२ वही हुआ जिसे १३ लिङ्ग कहते हैं १४ और १५

सुरापात्र देहने १६ पितरों के लिये १७ अन्न को १८ प्राप्त किया॥ ८७॥

**मुखꣳ सदस्य शिर इत्सतेन जिह्वा पवित्रमश्विनासन्त्सरस्वती। चप्यन्न पायुर्भिषगस्य वालो वस्तिर्न शेपो हरसा तरस्वी ८८**

सत्। अस्य। मुखम्। सतेन। इत्। शिरः। पवित्रं। जिह्वा। अश्विना। सरस्वती। आसन्। न। चप्यम्। पायुः। वालः। अस्य भिषक्। वस्तिः। न। हरसा। तरस्वी। शेपः॥ ८८॥

ओं मुखमित्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः जगती छन्दः अश्विसरस्वतीन्द्रा देवताः) १

**पदार्थः** १ सत नाम पात्र २ इस इन्द्र का ३ मुख हुआ ४,५ और उसी पात्र से ६ शिर हुआ ७ पवित्रा ८ जिह्वा हुआ ९ अश्विनी कुमार १० और सरस्वती ११ मुख में स्थित हुए १२ और १३ चप्य १४ पायु इन्द्रिय हुआ १५ सुरागलन वस्त्र १६ इस इन्द्र का १७ वैद्य १८ गुदा १९ और २० वीर्य से २१ वेगवान २२ लिङ्ग हुआ अर्थात् एक से तीनों उत्पन्न हुए॥ ८८॥

**अथाध्यात्मम्** १ सत नाम पात्र वही हुआ जो कि २ इस यजमान का ३ मुख है ४,५ सत्पात्र रूपसे ही ६ शिर कल्पित हुआ ७,८ जिह्वा पवित्रा हुई ९ नरनारायण १० और महा वागभिमानी देवी ११ जप्य रूप से मुख में विराजमान हुए १२ और १३ चप्य वही हुआ १४ जो कि पायु इन्द्रिय है १५ सुरागलन वस्त्र वे हुए जो कि १६ इस यजमान के १७ वैद्य रूप १८ गुदा १९ तथा २० बल से २१ वेगवान २२ लिङ्ग हैं॥ ८८॥

**अश्विभ्याञ्चक्षुरमृतङ्ग्रहाभ्याञ्छागेन तेजो हविषा शृतेन। पक्ष्माणि गोधूमैः कुवलै रुतानि पेशो न शुक्रमसितं वसाते ८९**

अश्विभ्याम्। ग्रहाभ्याम्। अमृतम्। चक्षुः। शृतेन। छागेन।

[7]हविषा। [8]तेजः। [9]गोधूमैः। [10]पक्ष्माणि। [11]कुवलैः। [12]उतानि। [13]शुक्लं। [14]न। [15]असितम्। [16]पेशः। [17]वसाते॥ ८९॥

ओं अश्विभ्या मित्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः जगती छन्दः अश्वि सरस्वतीन्द्रा देवताः) १

**पदार्थः** १ जिन के देवता अश्विनी कुमार हैं उन २ ग्रहों से इन्द्र का ३ अविनाशी ४ चक्षु उत्पन्न हुआ ५,६ छाग रूप ७ हवि से ८ चक्षु सम्बंधी तेज प्रकट हुआ ९ गोधूमों से १० नीचे के पलक ११ और वेरों से १२ ऊपर के पलक उत्पन्न हुए जो दोनों १३ श्वेत १४ और १५ श्याम १६ नेत्रों के रूप को १७ आच्छादन करते हैं॥ ८९॥

**अथाध्यात्मम्** १,२ ग्रह रूप नर नारायण से यजमान की ३ अविनाशी ४ चक्षु इन्द्रिय कल्पित हुई ५,६ छाग रूप ७ हवि वही हुआ जो कि ८ चक्षु तेज है ९ गोधूम वे हुए जो कि १० नीचे के पलक हैं ११ वेर वे हुए १२ जो कि ऊपर के पलक हैं जो दोनों १३ श्वेत १४ और १५ श्याम १६ रूप नेत्र में विद्यमानों को १७ ढकते हैं ८९

**अविर्न मेषो नसि वीर्य्याय प्राणस्य पन्था अमृतो ग्रहाभ्याम्। सरस्वत्युपवाकैर्व्यानन्नस्यानि बर्हिर्वदरैर्जजान॥ ९०॥**

[1]अविः। [2]न। [3]मेषः। [4]नसि। [5]वीर्य्याय। [6]ग्रहाभ्याम्। [7]प्राणस्य। [8]अमृतः। [9]पन्था। [10]सरस्वती। [11]उपवाकैः। [12]व्यानम्। [13]जजान। [14]वदरैः। [15]बर्हिः। [16]नस्यानि॥ ९०॥

ओं अविर्नेत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः जगती छन्दः अश्वि सरस्वतीन्द्रा देवताः) १

**पदार्थः**—१ भेड़ २ और ३ मेंढ़ा ४ नासिका में ५ वल प्राप्ति के लिये कारण हुए ६ सारस्वत ग्रहों से ७ प्राण का ८ अविनाशी ९ मार्ग प्राप्त हुआ १० सरस्वती ने ११ जौ के अंकुरों से १२ व्यान वायु को १३ उत्पन्न किया १४ वेरों के साथ १५ कुशा १६ नासिका के वाल हुई॥ ९०॥

**अथाध्यात्मम्**—१ भेड़ २ और ३ मेष ४,५ प्राणायाम वल के लिये वे क-

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

ल्पित ऊए जो कि नासिका के छिद्र कहाते हैं ६ सारस्वत नाम दोनों ग्रह वह ऊआ जो ७ प्राण का ८ अविनाशी ९ मार्ग है १० सरस्वती ने ११ यवाङ्कुर रूप से १२ स्तान वायु को १३ कल्पित किया १४ वेरों के साथ १५ कुशा वे ऊए १६ जो कि नासिका के वाल हैं ९०॥

इन्द्रस्य रूपमृषभो वलाय कर्णाभ्या श्रोत्रममृतङ्ग्रहाभ्याम्। यवा न वर्हिर्भुवि केसराणि कर्कन्धु यज्ञे मधु सारघम्मुखात् ९१

वलाय। इन्द्रस्य। रूपम्। ऋषभः। कर्णाभ्याम्। ग्रहाभ्याम्। अमृतम्। श्रोत्रम्। यवाः। न। वर्हिः। भुवि। केसराणि। मुखात्। कर्कन्धु। सारघम्। मधु। जज्ञे॥ ९१॥

ओंइन्द्रस्येत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः जगती छन्दः अश्विसरस्वतीन्द्रा देवताः) १

**पदार्थः** १ सामर्थ्य के लिये २ इन्द्र का ३ रूप ४ श्रेष्ठ किया गया ५ श्रोत्र सम्बंधी ६ ग्रहों से ७ भूत भविष्यत वर्त्तमान के शब्द को ग्रहण करने वाली ८ श्रोत्रेन्द्रिय प्रकट ऊई ९ जो १० और ११ कुशा १२,१३ भौं के वाल ऊए १४ मुख से १५ वेर ही १६ शहत की तुल्य १७ राल कफ़ आदि १८ प्रकट ऊए॥ ९१॥

**अथाध्यात्मम्** १ योग वल के लिये २ यजमान का ३ रूप ४ श्रेष्ठ ऊआ ५,६ ऐन्द्र ग्रह वे ऊए जो कि ७ भूत भविष्य वर्त्तमान शब्द के ग्रहण करने वाले ८ श्रोत्र हैं ९ जो १० और ११ कुशा वे ऊए जो कि १२,१३ भौं के वाल हैं १४ मुख से १५ वे वेर १६,१७,१८ कल्पित ऊए जो कि शहत की तुल्य राल और कफ़ आदि कहाते हैं॥ ९१॥

आत्मन्नुपस्थे न वृकस्य लोम मुखे श्मश्रूणि न व्याघ्रलोम। केशा न शीर्षन्यशसे श्रियै शिखा सिंहस्य लोम त्विषिरिन्द्रियाणि। ९२॥

उपस्थे। नः। आत्मन्। लोम। वृकस्य। न। मुखे। श्मश्रूणि। व्याघ्रलोम। न। शीर्षन्। यशसे। केशाः। श्रियै। शिखा। कान्तिः। इन्द्रियाणि। सिंहस्य। लोम॥ ९२॥

ओं आत्मन्नित्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः जगती छन्दः अश्विसरस्वतीन्द्रा देवताः) १

**पदार्थः**—१ उपस्थ २ और ३ देह के अधो भाग में ४ जो वाल होते हैं वे ५ वृक के वालों से उत्पन्न हुए ६ और ७ मुख पर ८ डाढ़ी मूंछ के जो वाल होते हैं वे ९ व्याघ्र के वालों से उत्पन्न हुए १० और ११ शिर पर १२ यश के लिये जो १३ केश हैं १४ शोभा के लिये १५ जो शिखा है १६ जो कान्ति है जो १७ इन्द्रियां हैं वे सब १८ सिंह के १९ वालों से उत्पन्न हुए॥ ९२॥

**अथाध्यात्मम्**—१ उपस्थ २ और ३ देह के अधोभाग में ४ जो वाल हैं वे ही ५ वृक के लोम कल्पित हुए ६ और ७ मुख ८ और डाढ़ी मूंछ के जो वाल हैं वे ९ व्याघ्र के वाल कल्पित हुए १० और ११ शिर पर १२ यश के लिये जो १३ केश हैं तथा १४ शोभा के लिये १५ जो शिखा है १६ जो कान्ति है १७ जो इन्द्रियां हैं वे सब १८ सिंह के १९ वाल कल्पित हुए॥ ९२॥

**अङ्गान्यात्मन्भिषजा तदश्विनात्मानमङ्गैः सम धात्सरस्वती। इन्द्रस्य रूपं शतमानमायुश्च न्द्रेण ज्योतिरमृतं दधानाः ९३**

इन्द्रस्य। रूपम्। शतमानम्। अमृतम्। आयुः। चन्द्रेण। ज्योतिः। दधानाः। भिषजा। अश्विना। सरस्वती। आत्मन्। अङ्गानि। तत्। आत्मानम्। अङ्गैः। समधात्॥ ९३॥

ओं अङ्गानीत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः जगती छन्दः अश्विसरस्वतीन्द्रा देवताः) १

**पदार्थः**—१ इन्द्र के २ रूप को ३ शत संख्या परिमाण वाला ४,५ अल्प रहित आयु वाला और ६,७ आल्हादक ज्योति के साथ ८ संपादन करते ९ वैद्य १० अ

श्विनी कुमारौ ११ और सरस्वती ने १२ आत्मा में १३ अंगों को १४ और उस १५ आत्मा को १६ उन्हीं के साथ १७ युक्त किया ॥ ९३ ॥

**अथाध्यात्मम्**- १ यजमान के २ रूप को ३ शतवर्ष वाला ४ अल्प रहित ५ आयु वाला और ६ वैष्णवों की आल्हादक ७ ज्योति के साथ ८ संपादन करते ९ संसार रोग के नाशक १० नरनारायण ११ और वागधिष्ठात्री देवी ने १२ आत्मा में १३ अंगों को १४ और उस १५ आत्मा को १६ अंगों के साथ १७ युक्त किया ॥ ९३ ॥

**सरस्वती योन्याङ्गर्भमन्तरश्विभ्याम्पत्नी सुकृतम्बिभर्त्ति। अपा थं रसेन वरुणो न साम्नेन्द्रं थं श्रियै जनयन्नप्सु राजा ॥ ९४ ॥**

अश्विभ्याम्। पत्नी। सरस्वती। सुकृतं। गर्भम्। योन्याम्। अन्तः। बिभर्त्ति। न। अप्सु। राजा। वरुणः। अपाम्। रसेन। साम्ना। इन्द्रम्। श्रियै। जनयन् ॥ ९४ ॥

ओं सरस्वती त्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः जगती छन्दः अश्विसरस्वतीन्द्रा दे०) १

**पदार्थः** १ नरनारायण की २ पत्नी ३ महावाक् ४ शुभ कर्म ५ इन्द्र वा यजमान को ६,७ योनि के मध्य ८ धारण करती है ९ और १० कमलान्त रिक्षों में ११ उनके देवता रूप से शोभा मान १२ परमेश्वर १३ ब्रह्मांश रूप जलों के १४ रस १५ और महावाक् १६ इन्द्र वा यजमान को १७ राज लक्ष्मी वा योगैश्वर्य के लिये १८ संस्कार करता पालन करता है ॥ ९४ ॥

**तेजः पशूना थं हविरिन्द्रियावत्परिस्रुता पयसा सारघम्मधु। अश्विभ्यान्दुग्धम्भिषजा सरस्वत्या सुतासुताभ्याममृतः सोम इन्दुः ९५**

भिषजा। अश्विभ्याम्। सरस्वत्या। इन्द्रियावत्। सारघम्। मधु। पशूनाम्। तेजः। हविः। परिस्रुता। पयसा। दुग्धम्।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

[13]सुता [14]सुताभ्याम् । अ[14]मृतः । [15]इन्दुः । [16]सोमः ॥ ९५॥

ओं तेज इत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः जगती छन्दः अश्वि सरस्वतीन्द्रा देवताः) १

**पदार्थः** १ संसार रोग के वैद्य २ नर नारायण ३ और महावाक् द्वारा ४ योग बल वाला ५,६ मक्खी के मधु की तुल्य ७ इन्द्रियों का ८ तेज ९ हवि १० देह ११ और प्राण के साथ १२ निकाला गया तथा १३ देह प्राण के सकाश से १४ अमृत रूप १५ ऐश्वर्य का दाता १६ आत्म प्रति विंब निकाला गया ॥ ९५॥ श्री हरिः

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्म्म कृते यजुर्वेदीय ब्रह्म भाष्ये सुरादीन्द्राभिषे कान्तो नवदशोऽध्यायः १९॥

## क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि । मा त्वा हिंसीन्मा मा हिंसीः ॥ १॥

[1]क्षत्रस्य । [2]योनिः । [3]असि । [4]क्षत्रस्य । [5]नाभिः । [6]असि । [7]त्वा । [8]मा । [9]हिंसीः । [10]मा । [11]मा । [12]हिंसीः ॥ १॥

**अथाधिदेवम्**- आसन्दी को दक्षिणोत्तर वेदी के मध्य स्थापन करता है उसका मंत्र । आसन्दी पर मृगचर्म को विछाता है उस का मंत्र

ओं क्षत्रस्येत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः द्विपदा विराड्गायत्री छन्दः आसन्दी देवता) १

ओं मा त्वेत्यस्य ( तथा प्राजापत्या गायत्री छन्दः कृष्णाजिनं दैवतम्) २

**पदार्थः**– हे आसन्दी तुम १ यजमान का २ स्थान ३ हो ४ यजमान के ५ भोग सम्वंधी लोक की उत्पत्ति का स्थान ६ हो हे मृगचर्म आसन्दी ७ तुम को ८,९ पीड़ा मत दो और तुम १० मुझ को ११,१२ पीड़ा मत दो ॥ १॥

**अथाध्यात्मम्**- हे मन तुम १ जीवात्मा का २ स्थान ३ हो ४ जीवात्मा के ५ ब्रह्म प्राप्ति का द्वार ६ हो हे हृदय यह मन ७ तुझे ८,९ पीड़ा मत दो और तुम १० मुझ यजमान को ११,१२ संसार वंधन से मत पीड़ा दो ॥ १॥

## निषसाद धृतव्रतो वरुणः पस्त्यास्वा । साम्राज्या

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

यसुक्रतुः। मृत्योः पाहि विद्योत्पाहि ॥२॥

[1]मृत्योः। [2]पाहि। [3]विद्योत्। [4]पाहि ॥२॥

यजमान मृगचर्म पर वैठता है उसका मंत्र, आसन्दी के ऊपर यजमान के वैठ जाने पर उसके दाहिने पांव के नीचे सुनहरी और वायें पांव के नीचे रुपहरी मंडलाकार रुक्म नाम भूषणों को रखता है उसके मंत्र

ओं निषसादेत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः आर्च्युष्णिक् छन्दः यजमानो देवता) १

**पदार्थः**– पहले मंत्र की व्याख्या हो चुकी है हे रुक्म वा माण १ अकाल मृत्यु से मुझ को २ रक्षा करो हे सौवर्ण वा मन ३ वज्रपात से ४ रक्षा करो ॥२॥

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्। अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि ॥३॥

[1]सवितुः। [2]देवस्य। [3]प्रसवे। [4]अश्विनोः। [5]बाहुभ्याम्। [6]पूष्णः। [7]हस्ताभ्याम्। [8]अश्विनोः। [9]भैषज्येन। [10]तेजसे। [11]ब्रह्मवर्चसाय। [12]त्वा। अभिषिञ्चामि। [13]सरस्वत्यै। [14]भैषज्येन। [15]वीर्याय। [16]अन्नाद्याय। [17]अभिषिञ्चामि। [18]इन्द्रस्य। [19]ऐन्द्रियेण। [20]बलाय। [21]श्रियै। [22]यशसे। [23]अभिषिञ्चामि ॥३॥

**अथाधिदैवम्**· अध्वर्यु यजमान को अभिषेक करता है उसके मंत्र १,२,३

ओं देवस्येत्यस्य (अश्विना ऋषी· प्राजापत्या बृहती छन्दः लिङ्गोक्त देवता) १

ओं सरस्वत्या इत्यस्य (अश्विना ऋषी· आर्ची गायत्री छन्दः तथा) २

ओं इन्द्रस्येत्यस्य ( तथा तथा तथा ) ३

**पदार्थः**– हे यजमान १,२ सविता देवता की ३ आज्ञा होने पर ४ अश्विनी कुमार

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

की ५ भुजा ६ और पूषा देवता के ७ हाथों से ८ अश्विनी कुमार की ९ चिकित्सा द्वारा १० कांति ११ और ब्रह्म तेज के लिये १२ तुझे १३ अभिषेक करता हूं १४ सरस्वती की १५ चिकित्सा द्वारा १६ पराक्रम १७ और अन्न भक्षण की सामर्थ्य के लिये १८ अभिषेक करता हूं १९ इन्द्र की २० इन्द्रिय सामर्थ्य द्वारा २१ वल २२ समृद्धि २३ और यश के लिये २४ अभिषेक करता हूं॥३॥

**अथाध्यात्मम्**– हे यजमान १,२ गुरु देवता की ३ प्रेरणा होने पर ४ हृदय-मन की ५ भुजाओं ६ और मानस सूर्य के ७ हाथों से ८ नरनारायण की ९ चिकित्सा द्वारा १० कान्ति ११ और ब्रह्म तेज के लिये १२ तुझे १३ अभिषेक करता हूं १४ महावाक् की १५ चिकित्सा द्वारा १६ योग वल १७ सव उपाधि को आत्मा में लय करने के लिये १८ अभिषेक करता हूं १९ महानारायण की २० शक्ति द्वारा २१ योग वल २२ योग लक्ष्मी २३ और कीर्त्ति के लिये २४ अभिषेक करता हूं॥३॥

**कोऽसि कतमोऽसि कस्मै त्वा काय त्वा। सुश्लोक सुमङ्गल सत्य राजन्॥ ४॥**

अध्वर्यु यजमान को स्पर्श करता है उसका मंत्र, अध्वर्यु से स्पर्श किया हुआ यजमान आह्वान करता है उसका मंत्र,

ओं को सीत्यस्य (प्रजापति ऋषिः उष्णिग्गर्भा प्राजापत्या गायत्री छन्दः यजमानो दे०)

**पदार्थः** हे यजमान तुम १ ब्रह्मा या शिव के अंश २ हो ३ विष्णु के अंश ४ हो ५ ब्रह्मा वा शिव के लिये ६ तुझे अभिषेक कराया, यजमान कहता है ९ हे राजमान १०,११ श्रेष्ठ कीर्त्ति और मंगल वाले १२ महानारायण॥ ४॥

[७ विष्णु के लिये ८ तुझे अभिषेक कराया]

**शिरो मे श्रीर्यशो मुखं त्विषिः केशाश्च श्मश्रूणि। राजा मे प्राणोऽअमृतं सम्राट् चक्षुर्विराट् श्रोत्रम्॥ ५॥**

मे। शिरः। श्रीः। मुखम्। यशः। केशाः। च। श्मश्रूणि। त्विषिः

मे। राजा। प्राणः। अमृतम्। चक्षुः। सम्राट्। श्रोत्रम्। विराट्॥

यजमान अपने अंगों को स्पर्श करता है उसका पहिला मंत्र

ओंशिरोम इत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः इन्द्र शरीरावयवादेवता) १

**पदार्थः** १ मेरा २ शिर ३ प्रभा रूप है ब्रह्म तेज के लाभ से ४ और मुख ५ यश रूप है वेद पाठ से ६ शिर के वाल ७ और डाढ़ी मूंछ ८ दीप्ति रूप हैं हृदय में ब्रह्माग्नि के प्रज्वलित होने से १० मेरा ११ तेजस्वी १२ प्राण १३ अमृत है समाधिलाभ से १४ चक्षु इन्द्रिय १५ भले प्रकार शोभा मान है दिव्य दृष्टि के लाभ से १६ श्रोत्रेन्द्रिय १७ बहुत प्रकार से शोभा मान है दूर श्रवण शक्ति के लाभ से॥ ५॥

जिह्वा मे भद्रं वाङ्महो मनो मन्युः स्वराड् भामः मोदाः प्रमोदा अङ्गुलीरङ्गानि मित्रम्मे सहः॥ ६॥

मे। जिह्वा। भद्रम्। वाक्। महः। मनः। मन्युः। भामः। स्वराट्। अङ्गुलयः। मोदाः। अङ्गानि। प्रमोदाः। मे। मित्रम्। सहः॥ ६॥

ओंजिह्वाम इत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः इन्द्र शरीरावयवादेवता) १

**पदार्थः** १ मेरी २ जिव्हा ३ कल्याण रूप है ४ वाणी ५ पूजित है वैदिक सिद्धांत के कहने से ६ मन ७ अहंकार रूप है अहं ब्रह्मास्मि के उच्चारण से ८ मानस सूर्य ९ स्वयं प्रकाश है समष्टि भाव के लाभ से १० अंगुलियां ११ आनंद रूप हैं कर न्यास से १२ अङ्ग १३ परमानंद रूप हैं अङ्गन्यास से १४ मेरा १५ ज्ञान १६ संसार उपाधि का नाशक है॥ ६॥

बाहू मे बलमिन्द्रियꣳ हस्तौ मे कर्म्म वीर्य्यम्। आत्मा क्षत्रमुरो मम॥ ७

मे। बाहू। इन्द्रियम्। बलम्। मे। हस्तौ। कर्म्म वीर्यम्। मम। आत्मा। उरो। क्षत्रम्॥ ७॥

ओंबाहूम इत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः गायत्री छन्दः इन्द्र शरीरावयवादेवता) १

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

**पदार्थः** १ मेरी २ भुजा ३ इन्द्रिय ४ आधि दैवाध्यात्म बल रूप हैं ५ मेरे ६ दोनों हाथ ७ देवाधीन बल रूप हैं ८ मेरा ९ आत्मा १० और आत्मा का स्थान हृदय ११ संसार से रक्षा करने वाला है॥ ७॥

**पृष्टीर्मे राष्ट्रमुदरमंसौ ग्रीवाश्च श्रोणी। ऊरूऽ अरत्नी जानुनी विशो मेऽङ्गानि सर्वतः॥ ८॥**

पृष्टीः। मे। राष्ट्रम्। उदरम्। अंसौ। ग्रीवाः। श्रोणी। ऊरूऽअरत्नी। जानुनी। च। सर्वतः। अङ्गानि। मे। विशः॥ ८॥

ओं पृष्टी रित्यस्य (प्रजापति र्ऋषिः निचृदनुष्टुप् छन्दः इन्द्र शरीरावयवा देवताः) १

**पदार्थः**– १ सुषुम्ना नाड़ी २ मेरा ३ वास स्थान है ४ उदर ५ कंधे ६ ग्रीवा ७ श्रोणि ८ ऊरू ९ हस्त देश १० दोनों जानु ११ और १२ सब १३ अङ्ग १४ मेरी १५ प्रजा हैं न कि काम देव की॥ ८॥

**नाभिर्मे चित्तं विज्ञानम्पायुर्मेऽपचितिर्भसत्। आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यम्पसः। जङ्घाभ्याम्पद्भ्यान्धर्मोऽस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः ९**

मे। नाभिः। चित्तं। मे। पायुः। विज्ञानम्। भसत्। अपचितिः। मे। आण्डौ। आनन्दनन्दौ। पसः। भगः। सौभाग्यं। जंघाभ्याम्। पद्भ्याम्। धर्मः। अस्मि। विशि। प्रतिष्ठितः। राजा॥ ९॥

ओं नाभिर्म इत्यस्य (प्रजापति र्ऋषिः निचृज्जगती छन्द इन्द्र शरीरावयवा देवताः) १

**पदार्थः** १ मेरी २ नाभि ३ ज्ञान रूप है उस में लक्ष्मी नारायण के ध्यान से ४ मेरी ५ पायु इन्द्रिय ६ विज्ञान रूप है श्री गणेश के ध्यान से ७ भग इन्द्रिय ८ ऋतु काल के सिवाय मैथुन से रहित है ९ मेरे १० वृषण ११ ब्रह्मानंद में मग्न हैं न कि विषयानंद में १२ लिङ्ग १३ योगैश्वर्य १४ और योग सम्पत्ति से सम्पन्न है १५ जंघाओं १६ और पैरों से १७ मैं धर्म रूप १८ हूं न कि विषयों में आसक्त १९ प्राण-

मैं २० प्रतिष्ठित में २१ राजमान हूं॥ ९॥

प्रति क्षत्रे प्रति तिष्ठामि राष्ट्रे प्रत्यश्वेषु प्रति तिष्ठामि गोषु। प्रत्यङ्गेषु प्रति तिष्ठाम्यात्मन्प्रति प्राणेषु प्रतितिष्ठामि पुष्टे प्रति द्यावा पृथिव्योः प्रति तिष्ठामि यज्ञे॥ १०॥

क्षत्रे। प्रति तिष्ठामि। राष्ट्रे। प्रति। अश्वेषु। प्रति। गोषु। प्रति। अङ्गेषु। प्रति। आत्मन्। प्रति। प्राणेषु। प्रति। पुष्टे। प्रतितिष्ठामि। द्यावा पृथिव्योः। प्रति तिष्ठामि। यज्ञे। प्रतितिष्ठामि। १०

यजमान आसन्दी से मृगचर्म पर उतरता है उसका मंत्र-

ओं प्रति क्षत्र इत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः अति शक्करी छन्दः विश्वे देवा देवताः) १

**पदार्थः**—मैं १ क्षत्री जाति में २ प्रतिष्ठित होता हूं ३ देश में ४ प्रतिष्ठित होता हूं ५ घोड़ों में ६ प्रतिष्ठित होता हूं ७ गौ में ८ प्रतिष्ठित होता हूं ९ अङ्गों में १० प्रति० होता हूं आरोग्यता से ११ चित्त में १२ प्रतिष्ठित होता हूं १३ प्राणों में १४ प्रति० १५ धन समृद्धि में १६ प्रति० होता हूं १७ पृथिवी स्वर्ग के मध्य १८ कीर्त्ति से प्रति० होता हूं १९ यज्ञ में २० प्रति० होता हूं धन लाभ के लिये॥ १०॥

**अथाध्यात्मम्** मैं १ मन में २ प्रतिष्ठित होता हूं ३ ब्रह्म देश हृदय में ४ प्रति० ५ कर्मेन्द्रियों में ६ प्रति० ७ ज्ञानेन्द्रियों में ८ प्रति० ९ देहाङ्गों में १० प्रति० ११ चित्त में १२ प्रति० १३ प्राणों में १४ प्रति० १५ योगैश्वर्य में १६ प्रति० १७ ब्रह्म पुर शरीर में १८ प्रति० १९ यज्ञ पुरुष में २० प्रतिष्ठित होता हूं॥ १०॥

त्रया देवा एकादश त्रयस्त्रिंशाः सुराधसः। बृहस्पति पुरोहिता देवस्य सवितुः सवे। देवा देवैरवन्तु मा॥ ११॥ सुराधसः। बृहस्पति पुरोहिताः। त्रयः। एकादश। देवाः। त्रयस्त्रिंशाः। देवाः। सवितुः। देवस्य। सवे। देवैः।

मा। अवन्तु॥ ११॥

शस्त्र नाम स्तोत्र के अंत में होम करता है उसका पहिला मंत्र

ओं त्रया देवेत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः त्र्यवसान पंक्तिश्छन्दः विश्वे देवादेवताः) १

**पदार्थः** १ श्रेष्ठ धन वाले २ ब्रह्म को ही आगे हित कारी रखने वाले ३ तीनों देवता ४ ग्यारह रुद्र ५,६ तेतीस देवता* ७,८ महा नारायण की ९ आज्ञा में वर्त्तमान होते १० अग्र मंत्र कथित सत्य आदि के साथ ११ मुझ को १२ रक्षा करो॥ ११॥

**प्रथमा द्वितीयैर्द्वितीयास्तृतीयैस्तृतीयाः सत्येन सत्यं यज्ञेन यज्ञो यजुर्भिर्यजूꣳषि सामभिस्सामान्यृग्भिर्ऋचः पुरोनुवाक्याभिः पुरोनुवाक्या याज्याभिर्याज्या वषट्कारैर्वषट्कारा आहुतिभिराहुतयो मे कामान्त्समर्द्धयन्तु भूः स्वाहा॥ १२॥**

प्रथमाः। द्वितीयैः। द्वितीयाः। तृतीयैः। तृतीयाः। सत्येन। सत्यं। यज्ञेन। यज्ञः। यजुर्भिः। यजूंषि। सामभिः। सामानि। ऋग्भिः। ऋचः। पुरोनुवाक्याभिः। पुरोनुवाक्याः। याज्याभिः। याज्याः। वषट्कारैः। वषट्काराः। आहुतिभिः। आहुतयः। मे। कामान्। समर्द्धयन्तु। भूः। स्वाहा॥ १२॥

ओं प्रथमेत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः प्रकृतिश्छन्दः विश्वे देवा देवताः) १

**पदार्थः** पूर्व मंत्र में कहे हुए १ पहिले देवता २ दूसरे देवताओं के साथ ३ दूसरे देवता ४ तीसरे देवताओं के साथ ५ तीसरे देवता ६ ब्रह्म के साथ ७ ब्रह्म ८ यज्ञ के साथ ९ यज्ञ १० यजुर्मन्त्रों के साथ ११ यजुर्वेद के मंत्र १२ सामऋचाओं के साथ १३ साम वेद के मंत्र १४ ऋग्वेद के मंत्रों के साथ १५ ऋग्वेद के मंत्र १६ पुरोनुवाक्या नाम विशेष ऋचाओं के साथ १७ पुरोनुवाक्या १८ याज्या नाम ऋ

* ३३ देवता ये हैं ८ वसु ११ रुद्र १२ आदित्य, इन्द्र और प्रजापति ११

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

चाओं के साथ १९ याज्या २० हवि दानों के साथ २१ हवि दान २२ आहुति यों के साथ २३ और आहुति यां २४ मेरी २५ कामनाओं को २६ पूर्ण करो २७ वे ब्रह्मावतार रूप हैं उन के लिये २८ श्रेष्ठ होम हो॥ १२॥

**लोमानि प्रयतिर्म्मम त्वङ्म आनतिरागतिः। मांसम्म उपनतिर्वस्वास्थि मज्जा मऽआनतिः॥ १३॥**

[1]प्रयतिः। ममे। लोमानि। आनतिः। आगतिः। मे। त्वक्। उपनतिः। मे। मांसं। वसु। अस्थि। आनतिः। मे। मज्जा॥ १३॥

यजमान ग्रह शेष को भक्षण करता है उस का मंत्र १

ओं लोमानीत्यस्य (प्रजापति ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः लिङ्गोक्त देवता) १

**पदार्थः** १ स्नान २ मेरे ३ रोम शरीर हैं ४ यश ५ और वीर्य ६ मेरी ७ त्वचा है ८ ऐश्वर्य ९ मेरा १० मांस है ११ पूर्ण सम्पत्ति मेरे १२ हाड़ हैं १३ वैराग्य १४ मेरी १५ मज्जा है अर्थात् षट् ऐश्वर्य रूप हूं॥ १३॥

**यद्देवा देवहेडनन्देवासश्चकृमा वयम्। अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्व थं हसः॥ १४॥**

[1]देवाः। देवासः। वयम्। यत्। देवहेडनं। आचकृम। अग्निः तस्मात्। एनसः। विश्वात्। अंहसः। मा। मुञ्चतु॥ १४

इस से आगे अवभृथ का वर्णन है साढ़े चार मंत्र के अनुवाक से मासर कुंभ को निराता है उस का पहिला मंत्र १

ओं यद्देवा इत्यस्य (प्रजापति ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः अग्नि र्देवता) १

**पदार्थः** १ नाना प्रकार के अवतारों से क्रीड़ा करने वाले २ हे ब्रह्म परम महानारायणो ३ हमने ४ जो ५ देवताओं का अपराध ६ किया ७ अग्नि देवता ८ उस ९ पाप १० और सब ११ विघ्न से १२ मुझ को १३ मुक्त करो॥ १४॥

**यदि दिवा यदि नक्त मेनांथं सि चकृमा वयम्। वायु**

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

म्मातस्मा देनसो विश्वान्मुञ्चत्व थं हसः १५

ई। वयम्। दिवा। नक्तं। यत्। यत्। एना थं सि। स्रञ्च क्रम वायुः। तस्मात्। एनसः। विश्वात्। स्र थं हसः। मां। मुञ्चतु

ओं यदीत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः वायुर्देवता) १

**पदार्थः** १ हे देवी २ हमने ३ दिन ४ रात में ५, ६ जो जो ७ पाप ८ किये ९ वायु देवता १० उस ११ पाप १२ और सब १३ विघ्न से १४ मुझ को १५ छुटाओ॥ १५

यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एनां थं सि चक्रमा वयम्। सूर्यो मातस्मा देनसो विश्वान्मुञ्चत्व थं हसः। १६

ई। वयम्। जाग्रत्। स्वप्ने। यत्। यत्। एना थं सि। स्राच क्रम। सूर्यः। तस्मात्। एनसः। विश्वात्। स्र थं हसः। मा। मुञ्चतु १६

**पदार्थः** १ हे देवी २ हमने ३ मनुष्यों ४ पितरों में ५, ६ जो जो ७ पाप ८ किये ९ सूर्य देवता १० उस ११ पाप १२ और सब १३ विघ्न से १४ मुझ को १५ मुक्त करो १६

यद्ग्रामे यदरण्ये यत्सभायां यदिन्द्रिये। यच्छूद्रे यदर्ये यदेनश्चकृमा वयं यदेकस्याधिधर्म्मणि· तस्यावयजनमसि १७

यत्। वयम्। यत्। एनः। ग्रामे। यत्। अरण्ये। यत्। सभायाम्। यत्। इन्द्रिये। यत्। शूद्रे। यत्। अर्ये। यत्। एकस्य। अधिधर्म्मणि। स्राञ्च क्रम। तस्य। अव यजनम्। असि १७

ओं यद्ग्राम इत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः निचृदनुष्टुप् छन्दः लिङ्गोक्त देवता) १

**पदार्थः** १ हे वायु, अग्नि, सूर्यरूप महानारायण २ हमने ३ जो ४ पाप ५ ग्राम में किया ६ जो ७ मन में किया ८ जो ९ सभा में किया १० जो ११ इन्द्रिय समूह में किया १२ जो १३ दास वर्ग में किया १४ जो १५ स्वामी के साथ किया १६ जो १७ १८ भक्ति योग आदि धर्म विषय में १९ किया तुम २० उस सब पाप के २१ नाश·

ॐ यदीत्यस्य (प्रजापति ऋर्षिः - अनुष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता) १

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

के कारण २२ हों ॥ १७॥

यदापोऽअघ्न्या इति वरुणेति शपामहे ततो वरुण नो मुञ्च। अवभृथ निचुम्पुण निचेरुरसि निचुम्पुणः। अव देवैर्देवकृतमेनोऽयक्ष्यव मर्त्यैर्मर्त्यकृतम्पुरुराव्णो देव रिषस्पाहि ॥ १८॥

अर्द्ध मंत्र से सुराकुम्भ को जल में डुबाते हैं, इस मंत्र की व्याख्या अध्याय ६ मंत्र २२ और अध्याय ३ मंत्र ४८ में हो गई ॥ १८॥

समुद्रे ते हृदयमप्स्वन्तः सन्त्वा विशन्त्वोषधीरुतापः। सुमित्रिया नऽआपऽओषधयः सन्तु दुर्म्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यञ्च वयन्द्विष्मः॥ १९॥

यजमान अवभृथ देश से दौड़ उत्तर दिशा में जा कर जलाञ्जलि ले कर जिस दिशा में शत्रु है उसमें छोड़ता है, इसकी व्याख्या अध्याय ६ मंत्र २२ में हो गई ॥ १९॥

द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव। पूतम्पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः ॥ २०॥

आपः[1]। मा[2]। एनसः[3]। शुन्धन्तु[4]। द्रुवं[5]। द्रुपदात्[6]। मुमुचानः[7]। द्रुवा[8]। स्विन्नः[9]। स्नातः[10]। मलात्[11]। वा[12]। पवित्रेण[13]। पूतं[14]। आज्यम्[15]॥२०

जल में स्थित स्त्री पुरुष सौमिक अवभृथ की समान स्नान करके कर्म काल पर धारण किये हुए वस्त्र को जल में छोड़ते हैं उसका मंत्र १

ओं द्रुपदादित्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः आपो देवता) १

**पदार्थः** १ जल वा ब्रह्माम्बु रूप जल २ मुझ को ३ पाप से ४ पृथक् करो ५ जैसे ६ खड़ाऊं से ७ रहित होता ८ अथवा जैसे ९ स्वेदयुक्त पुरुष १० स्नान करता ११ मल से १२ अथवा जैसे १३ कंबल के पवित्रा से १४ पवित्र किया हुआ १५ घृत शुद्ध होता है ॥ २०॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

ओं ऋच इत्यस्य देवश्रवा देववात ऋषि रार्षी जगती छन्द आत्मा देवता १ ओं ये अग्नय इत्यस्य देवश्रवोदेवात ऋषि रार्ष्यनुष्टुप् छन्दो ऽग्निर्देवता २ **मंत्रार्थः** (ऋचः) ऋग्वेदः (नाम) (अस्मि) (यजूंषि) यजुर्वेदः (नाम) (अस्मि) (सामानि) साम वेदः (नाम) (अस्मि) हे चित्याग्ने आत्माग्ने वा (अस्याम्) (पृथिव्याम्) पृथिव्यां देहे वा (अधि) उपरि मध्ये वा (ये) (पाञ्चजन्याः) पंच मनुष्येभ्यः पञ्च चितिभ्यः पञ्च प्राणेभ्यो वाहिताः। प्राणो मनुष्याः श० (अग्नयः) अग्नय इन्द्रियात्मप्रतिबिंबरूपा वावर्त्तन्ते (तेषाम्) (त्वम्) (उत्तमः) श्रेष्ठः (असि) अतः (नः) अस्मान्वागा द्यात्विजः (जीवातवे) चिरजीवनाय अमृत त्वाय (प्रसुव) प्रेरय ॥ ६७॥

**वार्त्रहत्याय शवसे पृतनाषाह्याय च। इन्द्र त्वा वर्त्तयामसि॥ ६८॥ सहदानुम्पुरुहूत क्षियन्त महस्त मिन्द्र सम्पिणक्कुणारुम्। अभि वृत्रं वर्द्धमानम्पियारुम पाद मिन्द्र तवसा जघन्थ॥ ६९॥**

मृत्पूरणानन्तर मेतां चिति मुपतिष्ठते सप्तभिरष्टाभिरेकेषां मते दशभिर्वा का० १७।७।१२ ओं वार्त्र हत्या येत्यस्य विश्वा मित्र ऋषिर्निचृद् गायत्री छन्द इन्द्रो देवता १ **मंत्रार्थः** ईश्वरोपस्थानं हे (इन्द्र) ईश्वर। इद ऐश्वर्ये (वार्त्र हत्याय) पाप घात समर्थाय। पाप्मा वै वृत्रः श० (च) (पृतना षाह्याय) शत्रु सेना पराभव समर्थाय (शवसे) बलाय (त्वा) त्वां (आवर्त्त यामसि) आवर्त्त यामः उपतिष्ठामहे। इदन्तो मसि॥ ६८॥

द्वितीयो मंत्रः ओं सहदानुमित्यस्य विश्वा मित्र ऋषि रार्षी त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता १ हे (पुरुहूत) बहुभिराहूत

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

(इन्द्र) परमेश्वर (क्षियन्तं) निकटे वसन्तं। क्षि निवास गत्योः तुदादिः शतृप्रत्ययः (कुणारुम्) कुणाति दुर्वचो वदति तं कुण शब्दे औणादिक आरु प्रत्ययः धातोः सम्प्रसारणञ्च (सहदानुम्) शत्रुं कामं वा (अहस्तम्) हस्त हीनं कृत्वा (सम्पिणक्) साम्पिड्ढि चूर्णय। पिष्लृ संचूर्णने लङि मध्यमैकवचनं रुधादित्वात् श्नम् संपूर्वः अड भावस्त्वा र्षः षस्य कुत्व मार्षम् हे (इन्द्र) परमेश्वर (वर्धमानं) (पियारुं) हन्तारं पियति हिंसा कर्मा निघ० २।१९। १७ (वृत्रं) पापं (अपादं) पाद हीनं कृत्वा (तवसा) बलेन (अभिजघन्थ) जहि सम्यक् नाशय। छन्दसि लुङ् लङ् लिट इति लोडर्थे लिट्। ॥६९॥ शास दृष्टानुष्टुप् व्याख्याता (८, ४४) - ॥७०॥ चतुर्थो मंत्रः ओं विन इन्द्रेत्यस्य जय ऋषि-

विन इन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः। यो अस्माँ२॥ अभिदासत्यधरं गमया तमः ॥७०॥ मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आ जगन्था परस्याः। सृकं सꣳशाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून्ताढि वि मृधो नुदस्व ॥७१॥

त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता१ **मंत्रार्थः** - हे (इन्द्र) परमेश्वर (मृगः) वराह नृसिंह रूपाभ्यां मृग स्वरूपः (भीमः) राम कृष्ण परशु राम कल्कि रूपैर सुराणां भयङ्करः (कुचरः) मत्स्य कूर्म रूपाभ्यां जल एव चरति सः (न) च (गिरिष्ठाः) वामन रूपेण वेद वाचि स्थितस्त्वं (अपरस्याः) अपरायाः छन्दस्य कारस्य सत्वं (परावतः) परा शक्ति र्वर्त्तते यस्मिं स्तस्मा द्ब्राह्मणः (आ जगन्थ) प्रादुर्भूतोऽसि (सृकम्) सरति शत्रु शरीरे गच्छति तं (तिग्मम्) उत्साह वन्तं (पविम्) असुराणां वधेऽपि शुद्धं सुदर्शन परश्वादि शस्त्र समूहं। पृशोधे (सꣳशाय)-



CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

तीक्ष्णी कृत्य (शत्रून्) (वि ताढि) विशेषेण ताडय (मृधः) पाप्मानं (विनुदस्व) विशेषेण प्रेरय दूरी कुरु ॥७१॥

पञ्चमो मंत्रः ओं वैश्वानर इत्यस्य जयऋषिर्गायत्री छन्दो वैश्वानरो देवता १

**मंत्रार्थः** – (वैश्वानरः) सर्वनरेभ्योहितः (अग्निः) (नः) अस्माकं (सुष्टुतीः) शोभनाः स्तुतीः (उप) उपश्रोतु (नः) अस्माकं (ऊतये) रक्षणाय (परावतः) परा शक्ति र्वर्त्तते यस्मिंस्तस्मा द्ब्रह्मणः (प्रयातु) प्रादुर्भवतु ॥ ७२॥

षष्ठो मंत्रः ओं पृष्ट इत्यस्य कुत्सऋषि स्त्रिष्टुप् छन्दो वैश्वानरो देवता १ **मंत्रार्थः** – (वैश्वानरः) सर्वनरेभ्यो हितः अग्निः (दिवि) द्युलोके (पृष्टः) मुमुक्षुभिः कोऽयमादित्यात्मना तपतीति (पृथिव्याम्) अन्तरिक्ष लोके

**वैश्वानरो न ऊत य आ प्र यातु परावतः। अग्निर्नः सुष्टुतीरुप ॥७२॥ पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः पृथिव्याम्पृष्टो विश्वा ओषधीरा विवेश। वैश्वानरः सहसा पृष्टो अग्निस्स नो दिवा स रिषस्पातु नक्तम् ॥७३॥**

(पृष्टः) कोऽयं विद्युदात्मनास्थित इति यः (विश्वाः) सर्वाः (ओषधीः) (आविवेश) (सः) (पृष्टः) कोऽयं प्रजानां जीवन हेतुस्तापपाक प्रकाशैरूप करोति यः (सहसा) बलेनाध्वर्युणा मन्थमानः सन् (पृष्टः) जनैः कोऽयं मथ्यत इति (सः) (अयम्) ब्रह्म रूपो वैश्वा नरोग्निः (दिवा) (नक्तं) (नः) अस्मान् (रिषः) पापात्। रिषतिर्हिंसा कर्मा निघ ३। १४। ३५ (पातु) यथा श्रुतिः एतद्वै देवा वैश्वानरेण पाप्मानं दग्ध्वापहत पाप्मान एतत्कर्मा कुर्वत तथैवैत द्यजमानो वैश्वानरेण पाप्मानं दग्ध्वा पहत पाप्मैतत्कर्म कुरुते ९।५।२।६॥ —॥७३॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

सप्तमो मंत्रः ॐ अस्यामेत्यस्य भरद्वाज ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दोऽग्निर्देवता १

**मंत्रार्थः** – हे [1](अग्ने) आत्मान्ने वा [2](तवे) [3](ऊती) ऊत्या अवनेन पालनेन वयं [4](तम्) [5](कामम्) अभिलाषं [6](अश्याम) प्राप्नुयाम। अश्नूङ् व्याप्तौ विकरणा व्यत्ययेन लोटि श्यन् प्रत्ययः हे [7](रयिवः) धनवन् षडैश्वर्य युक्त वा [8](सुवीरं) पुत्र सहितं महाबलं [9](रयिम्) धनम् योग धनं वा [10](अश्याम) [11](वाजयन्तः) त्वामर्चयन्तो वयं। वाजयति रर्चतिकर्मा नि० ३। १४। ३५ [12](वाजम्) अन्नं [13](अभि) समन्तात् [14](अश्याम) प्राप्नुयाम हे [15](अजर) जरा रहित [16](ते) [17](अजरम्) अक्षीणं [18](द्युम्नम्) यशः [19](अश्याम) सर्वदा यशस्विनो भवाम यथा श्रुतिः एतद्वै देवाः षड्ढृचेन पाप्मानमपहत्यैकया-

**अश्यामतङ्कामंमग्नेतवोतीऽअश्यामरयिंᳬंरयिवःस्सुवीरम्। अश्याम**
**वाजमभिवाजयन्तोऽश्यामद्युम्नमजराजरन्ते॥ ७४॥ वयन्तेऽअद्यररिमा**
**हिकाममुत्तानहस्तानमसोपसद्य। यजिष्ठेनमनसायक्षिदेवानस्रेधता**
**मन्मनाविप्रोऽअग्ने॥ ७५॥**

कामवत्यैकधान्ततः सर्वान्कामानात्मन्न कुर्वत तथैवैतद्यजमानः षड्ढृचेन पाप्मानमपहत्यैकया कामवत्यैकधान्ततः सर्वान्कामानात्मन्कुरुते ९। ५। २। ७ – ॥ ७४॥ अष्टमो मंत्रः ॐ वयन्त इत्यस्योत्कील ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता १ **मंत्रार्थः** – हे [1](अग्ने) अग्ने आत्मान्ने वा [2](उत्तानहस्ताः) अवद्ध मुष्टिका त्यक्त कार्पण्याः [3](वयम्) भूतात्मानः [4](नमसा) नमस्कारेण [5](उपसद्य) निकटमागत्य [6](अद्य) [7](यजिष्ठेन) यागतत्परेण। यजती



CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

तियष्टृ। अतिशयेन यष्टृ यजिष्ठं। तुरिष्ठे मेयः स्वितितृचो लोपः (अस्ने धर्ता) अनन्य गतेन। स्निधगतौ (मन्मना) देवता याथात्म्यज्ञेन (मनसा) (कामं) (हविः) हविरात्ममति विंवं वा (ते) तुभ्यं (हि) (रश्मि) दक्षः (विप्रः) वेदाधारस्त्वं (देवान्) देवान् ब्रह्म परा महानारायणान्वा (यक्षि) यजतर्पय ॥ ७५॥

नवमो मंत्रः ॐ धामच्छदित्यस्योत्कील ऋषिरनुष्टुप्छन्दो विश्वे देवा देवताः१ **मंत्रार्थः** (धामच्छत्) लोकानामाच्छादकः (देवः) (अग्निः) (इन्द्रः) (ब्रह्मा) (बृहस्पतिः) (सचेतसः) मन्त्रया सहिताः (विश्वे) (देवाः) (नः) अस्माकं (यज्ञं) (शुभे) इष्टे स्थाने स्वर्गे (प्रावन्तु) प्रकर्षेण रक्षंतु॥ ७६॥

## धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः। सचेतसो विश्वे देवा यज्ञम्प्रावन्तु नः शुभे॥ ७६॥ त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄः पाहि शृणुधी गिरः। रक्षा तोकमुत त्मना॥ ७७॥

**अथाध्यात्मम्**- वागाद्यृत्विजः प्रार्थयन्ति (धामच्छत्) स्वतेजसा ब्रह्माण्डस्याच्छादकः (देवः) नानावतारैः क्रीडनशीलः (अग्निः) ब्रह्माग्निः (इन्द्रः) ईश्वरः। इदि ऐश्वर्ये (ब्रह्मा) (बृहस्पतिः) ब्रह्माण्डस्य पतिर्विष्णुः (सचेतसः) समानं चेतो येषान्ते (विश्वे) सर्वे (देवाः) (नः) अस्माकं (यज्ञम्) यजमानं। यजमानो यज्ञः श० १३।२।२।१ (शुभे) ब्रह्मलोके परमे धाम्नि वा (प्रावन्तु)॥ ७६॥ व्याख्याता (१३-५२)—॥ ७७॥ इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्म्मकृते शुक्लयजुर्वेदीयब्रह्मभाष्ये वसोर्धारादिचित्युपस्थानान्तनामाष्टादशोऽध्यायः॥ १८॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

ॐनारायणंनमस्कृत्यनरञ्चैवनरोत्तमम् देवीं सरस्वतीं व्यासंततोजय मुदीरयेत् १ अथसौत्रामणी मंत्राश्त्रिभिरध्यायैः कथ्यन्ते॥ **अथाधिदैवम्**- ओदनौ चूर्णमासरैः संस्टज्य स्वाद्वींत्वा थंभुनेति मंत्राभ्यां त्रिरात्रंनिद धाति तस्य मंत्रः का. १९।१।२२ ॐस्वादीमित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप् छन्दः सुरा रूपः सोमो देवता १ ॐ सोमोसीत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिर्दैव्युष्णिक् छन्दः सुरादेवता २ ॐ अश्विभ्यामित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्री छन्दः सुरा देवता ३ ॐ सरस्वत्याइत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिरुष्णिक् छन्दः सुरादेवता ४ ॐ इन्द्रायेत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिर्बृहती छन्दः सुरादेवता ५

**मंत्रार्थः** हे सुरे (स्वादीम्[1]) मिष्टांमिष्टरसाम् (तीव्राम्[2]) कटुं शीघ्रमदजनिकां। तीव्रशब्दः कटुवचनः (अमृताम्[3]) अ-

**स्वादीन्त्वा स्वादुनातीव्रान्तीव्रेणामृताम् मृतेन मधुमतीम्मधुमता स्टज्जामि स थं सोमेन। सोमोस्यश्विभ्याम्पच्यस्वसरस्वत्यै पच्यस्वेन्द्राय सुत्राम्णे पच्यस्व॥ १॥**

मृततुल्यां (मधुमतीं[4]) मधुरस्वादोपेतां (त्वा[5]) त्वां (स्वादुना[6]) मृष्टेन (तीव्रेण[7]) कटुरसेन (अमृतेन[8]) सुधातुल्येन (मधुमता[9]) मधुरस्वादेन (सोमेन[10]) (संस्टजामि[11]) संयोजयामिहे सुरे त्वं (सोमः[12]) (असि[13]) (अश्विभ्याम्[14]) (पच्यस्व[15]) विपरिणम। पाको विपरिणामः (सरस्वत्यै[16]) (पच्यस्व[17]) (सुत्राम्णे[18]) रक्षकाय (इन्द्राय[19]) (पच्यस्व[20]) ॥ १॥

**अथाध्यात्मम्** - यद्युत्थानावस्थायामात्मप्रतिविंबस्तमो ग्रस्तो भवेत् तस्य प्रायश्चित्त माह हेतमो रूपात्मप्रतिविंबशक्ते। यथा श्रुतिः ज्योतिः सोमो तमः सुरा ५।१।५।२८ तस्य शीर्षं च्छिन्नेलोहितमिश्राः सोमो ऽति;

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

षत् १२।७।३।४ [1](स्वादीम्) मिष्टां [2](तीव्राम्) अहं ब्रह्मास्मीति मदजनिकां [3](अमृताम्) अमृततुल्यां [4](मधुमतीम्) ब्रह्मज्ञानयुतां श० १४।५।५।१६ [5](त्वा) त्वां [6](स्वादुना) मृष्टेन [7](तीव्रेण) तीव्रप्रकाशयुक्तेन [8](अमृतेन) अविनाशिना [9](मधुमता) ज्ञानवता [10](सोमेन) समष्टि सूर्येण। सोमो वै भ्राट् श० ३।२।४।९ [11](संसृजामि) त्वं [12](सोमः) सूर्यरूपः [13](असि) [14](अश्विभ्याम्) नरनारायणाभ्यां। अमू व्यासौ [15](पच्यस्व) शुद्धो भव [16](सरस्वत्यै) महावाचे। वाग्वै सरस्वती वाचा वा एतदश्विनौ यज्ञस्य शिरः प्रत्यधत्ताम् श० १४।२।१।१२ [17](पच्यस्व) [18](सुत्राम्णे) रक्षकाय [19](इन्द्राय) महानारायणाय। इन्द्रो वै सर्वे देवाः श० १३।७।१।४ [20](पच्यस्व) शुद्धो भव॥ १॥

## परीतो षिञ्चता सुतꣳ सोमो य उत्तमꣳ हविः। दधन्वा यो नर्यो अप्स्वन्तरा सुषाव सोममद्रिभिः॥ २॥

**अथाधिदैवम्**—एकस्याः पयस्यायाः कृतेनाश्विनेन परिषिञ्चति परीतो षिञ्चतेति शष्पचूर्णानि चावपति सारस्वतेन द्वयोः प्रातस्तोक्मचूर्णानि चैन्द्रेणोत्तमेति स्वर्णं लाजचूर्णानि च का० १९।१।२३–२८ ओं परीत इत्यस्य भरद्वाज ऋषि बृहती छन्दः सोमो देवता १॥

**मंत्रार्थः**—हे ऋत्विजः [1](यः) [2](सोमः) [3](उत्तमम्) [4](हविः) सर्वेषां हविषां श्रेष्ठः [5](वा) [6](यः) [7](नर्यः) नरेभ्यो हितः सन् [8](दधन्) यजमानं धारितवान्। धन शब्दे क्वसु प्रत्ययः [9](अप्सु) [10](अन्तः) जलेषु वर्त्तमानं यं [11](सोमम्) [12](अद्रिभिः) ग्रावभिः [13](आसुषाव) अध्वर्युरभिषुतवान् तं [14](सुतम्) अभिषुतं सोमं [15](इतः) गोसकाशाद्गृहीतेन दुग्धेन [16](परिषिञ्चत)

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

**अथाध्यात्मम्** – हे वागा घृत्विजः (यः) (सोमः) आत्मप्रतिविंबः (उत्तमम्) (हविः) (वा) (यः) (नर्यः) (न) शिवः (अ) विष्णुः (र) ब्रह्मा सायुज्ये तेषां योग्यः (दधत्) देहं धारितवान् (अप्सु) देहान्तरिक्षेषु (अन्तः) मध्ये (सोमम्) (अद्रिभिः) प्राणैः। प्राणा वै ग्रावाणः श० १४।२।२।३३ (आसुषाव) त्वान्चक्ष्व ध्वर्युरभिषुतवान्। चक्षुर्वै यज्ञस्याध्वर्युः श० १४।६।१।६ (सुतम्) तमभिषुतमात्मप्रतिविंबं (इतः) इन्द्रियशक्त्या। प्राणाः पयः शीर्षंस्त त्राणां श० ६।५।४।१५ परिषिञ्चत)॥ २॥ **अथाधिदैवम्** – पालाशपात्रे गोऽश्ववाल पवित्रेण सुरां पुनाति तस्य मंत्रो का० १९।२।८ ॐ वायोरिति मंत्रयोराभूति ऋषि गायत्री छन्दः सोमो देवता १

**वायोः पूतः पवित्रेण प्रत्यङ्क्सोमो अतिद्रुतः। इन्द्रस्य युज्यः सखा।**
**वायोः पूतः पवित्रेण प्राङ्क्सोमो अतिद्रुतः। इन्द्रस्य युज्यः सखा॥ ३॥**

**मंत्रार्थः** (प्रत्यङ्) अधोमुखः (अतिद्रुतः) निर्गतः (सोमः) (वायोः) (पवित्रेण) (पूतः) शुद्धः। यः (इन्द्रस्य) (युज्यः) योगार्हः (सखा) प्रियः (प्राङ्) प्राङ्मुखः (अतिद्रुतः) निर्गतः (सोमः) (वायोः) (पवित्रेण) (पूतः) यः (इन्द्रस्य) (युज्यः) (सखा)॥ ३॥ **अथाध्यात्मम्** – (प्रत्यङ्) सुषुम्नया पश्चिममुखः (अतिद्रुतः) आत्मानमतिक्रम्य गतः (सोमः) आत्मप्रतिविंबः (वायोः) (पवित्रेण) प्राणपवित्रेण। पवित्रं वै प्राणोदानौ व्यानश्च श० १।१।३।२ (पूतः) शुद्धः यः (इन्द्रस्य) आत्मनः इन्द्रो वै यजमानः श० २।१।२।११ आत्मा वै यज्ञस्य यजमानः ९।५।२।१६ (युज्यः) योगार्हः (सखा) (प्राङ्) पूर्वमुखः (अतिद्रुतः) (सोमः) आत्मप्रतिविंबः (वायोः) (पवित्रेण) (पूतः) यः (इन्द्रस्य)



CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

अन्तर्यामिन ईशस्य (युज्यः) योगार्हः (सखा) यथा श्रुतिः यत्रवैसोम इन्द्रमत्य पवतसय तित्तृन गच्छन्त्ययो वैपितरस्तेनैवै न मेतत्समर्धयति कृत्स्नं करोति॥ ३॥ तृतीयो मंत्रः ॐ पुनातीत्यस्य विनियोगः पूर्ववत्॥ १॥

**मंत्रार्थः**- हे यजमान (सूर्यस्य) (दुहिता) पुत्री श्रद्धा (ते) तव (परिस्रुतम्) सुरारूपं (सोमं) (शश्वता) शाश्वतिकेना नादिना (तना) धनेन धनोत्पत्तिनिमित्तेन (वारेण) वालेन गोऽश्ववाल पवित्रेण (पुनाति) शोधयति॥ ४॥

**अथाध्यात्मम्**- हे आत्मरूप यजमान (सूर्यस्य) महानारायणस्य। सूर्यो वै सर्वे देवाः श० १३।७।१।५ (दुहिता) महावाक् (ते) तव (परिस्रुतम्) नमोरूपं (सोमम्) आत्मप्रतिविंवं (शश्वता) अनादिना (तना) योग धनोत्पत्तिनि-

पुनाति ते परिस्रुतꣳ सोमꣳ सूर्यस्य दुहिता। वारेण शश्वता तना॥ ४॥
ब्रह्म क्षत्रम्पवते तेज इन्द्रियꣳ सुरया सोमः सुत आसुतो मदाय। शुक्रेण देव देवताः पिपृग्धि रसेनान्नं यजमानाय धेहि॥ ५॥

मित्तेन (वारेण) (व) प्राण वायुः (आ) यज्ञक्रिया (र) ज्ञानाग्निस्तेषां समूहेन (पुनाति) शोधयति॥ ४॥

अजमेषलोमकृत पवित्रेण वेतसपात्रे उत्तरदिशि पयः पुनाति तस्य मंत्रः का० १९।२।२० ॐ ब्रह्मक्षत्रमित्यस्या भूतिर्ऋषि-स्त्रिष्टुप्छन्दः सुरासोमौ देवते॥ **मंत्रार्थः**- हे (देव) सोम त्वं (शुक्रेण) शुद्धेन वीर्येण (देवताः) अग्न्याद्याः (पिपृग्धि) प्रीणीहि (रसेन) घृतादिना सहितं (अन्नम्) (यजमानाय) (धेहि) देहि यतः (सोमः) (सुतः) अभिषुतः सन् (ब्रह्म) ब्राह्मणं (क्षत्रं) क्षत्रियं (तेजः) कान्तिं (इन्द्रियं) सामर्थ्यं (पवते) जनयति। पवतिर्जननार्थः (सुरया)

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

[17](आसुतः) अभिषुतः [18](मदाय) भवति॥५॥ **अथाध्यात्मम्** — [1]हे (देव) आत्मप्रतिबिंबत्वं [2](शुक्रेण) शुद्धेन स्ववीर्येण [3](देवताः) ब्रह्मपरा महानारायणान् [4](पिपृग्धि) प्रीणीहि [5](रसेन) अमृतरसेन सह [6](अन्नम्) विराड्रूपान्नं। अन्नं वै विराट् श० १२।२।४।५ [7](यजमानाय) आत्मरूपयजमानाय। आत्मा वै यज्ञस्य यजमानः श० ९।५।२।१६ [8](धेहि) यतः [9](सोमः) आत्मप्रतिबिंबः [10](सुतः) अभिषुतः सन् [11](ब्रह्म) मनः। मनो वै ब्रह्म श० १४।६।१०।१४ [12](क्षत्रं) प्राणं। प्राणो वै क्षत्रं श० [13](तेजः) कान्तिं [14](इन्द्रियं) इन्द्रियसमूहं [15](पवते) शोधयति [16](सुरया) तमसा [17](आसुतः) पृथक्कृत आत्मप्रतिबिंबः

कुविदङ्ग यवमन्तो यवञ्चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय। इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नमउक्तिं यजन्ति। उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यां त्वा सरस्वत्यै त्वेन्द्राय त्वा सुत्राम्ण एष ते योनिस्तेजसे त्वा वीर्याय त्वा बलाय त्वा॥६॥

[18](मदाय) अहं ब्रह्मास्मीति मदाय भवति॥५॥ एवं सुरापयसोः पावनं कृत्वा त्रीन्पयोग्रहान् गृह्णाति तस्य मंत्रः ओं कुविदित्यस्य काक्षीवतसुकीर्त्तिर्ऋषिर्विराट्प्रकृतिश्छन्दः सोमो देवता १ [1]हे (कुवित्) यज्ञभूमिं प्राप्त [2](अङ्ग) मनसा देवार्पित [3](चित्) चैतन्यविशिष्ट सोम [4](यथा) [5](इह) अस्मिन् लोके [6](यवमन्तः) बहुयवसम्पन्नाः कृषीवलाः [7](यवम्) [8](अनुपूर्वं) आनुपूर्व्येण [9](वियूय) पृथक्कृत्य [10](दान्ति) लुनन्ति तथा [11](इह) अस्मिन्यज्ञे [12](एषाम्) ऋत्विजां [13](भोजनानि) भोज्यानि वस्तूनि [14](कृणुहि) कुरु [15](ये) ऋत्विजः [16](बर्हिषः) उपरिस्थिताः [17](नमः) हविर्लक्षणमन्नं



CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

(उक्तिं) मंत्रपूर्वकं (यजन्ति) यागं कुर्वन्ति हे सोम त्वं (उपयाम गृहीतः) उपयाम पात्रेण गृहीतः (असि) (अश्विभ्याम्) (त्वा) त्वां गृह्णामि (सरस्वत्यै) (त्वा) त्वां गृह्णामि (सुत्राम्णे) रक्षकाय (इन्द्राय) (त्वा) त्वां गृ० (एष) (ते) (योनिः) स्थानं (तेजसे) तेजोऽर्थं (त्वा) त्वां सादयामि (वीर्याय) वीर्यार्थं (त्वा) त्वां सादयामि (वलाय) वलार्थं (त्वा) त्वां सादयामि एतेषां क्रमादश्वत्थोदुम्बरन्यग्रोध पात्रे ग्रहणम् ॥ ६॥ अथाध्यात्मम् — हे (कुवित्) योम भूमिवित् (अङ्ग) महानारायणार्पित (चित्) चिद्धात्वात्म प्रतिविंव (यथा) (इह) अस्मिन् लोके (यवमन्तः) कृषीवलाः (यवम्) (अनुपूर्वं) आनुपूर्व्येण (वियूय) पृथक् कृत्य (दान्ति) लुनन्ति तथा (इह) अस्मिन् योग यज्ञे (एषाम्) वागादिवृत्ति

**नाना हि वां देव हितꣳ सदस्कृतम्मा सꣳसृक्षाथाम्परमे व्योमन्। सुरा त्वमसि शुष्मिणी सोम एष मा मा हिꣳसीः स्वां योनिमाविशन्ती ७**

जां (भोजनानि) महा वाग्रूपाणि (कृणुहि) कुरु (ये) वागादयः (वर्हिषः) स्वालये स्थिताः (नमः) हविर्लक्षणं (उक्तिं) वाचं (यजन्ति) ब्रह्म यज्ञं कुर्वन्ति हे आत्म प्रतिविंव त्वं (उपयाम गृहीतः) परा शक्त्या गृहीतः (असि) (अश्विभ्याम्) नरनारायणाभ्यां (त्वा) त्वां गृ० (सरस्वत्यै) महा वागाभिमानिन्यै देव्यै (त्वा) त्वां गृ० (सुत्राम्णे) श्रेष्ठ रक्षकाय (इन्द्राय) महानारायणाय (त्वा) त्वां गृ० (एष) परा शक्तिः (ते) (योनिः) स्थानं (तेजसे) (त्वा) त्वां सादयामि (वीर्याय) योग वीर्याय (त्वा) त्वां सादयामि (वलाय) योग वलाय (त्वा) त्वां सादयामि ॥ ६॥

मृन्मय स्थाली भिस्त्रीन् सुरा ग्रहान् गृह्णाति तस्य मंत्रः का० १९।२।२० ॐ नाना हीत्यस्या भूति ऋर्षिर्जगती छ०

न्दः सुरासोमौ देवते १ **मंत्रार्थः** हे सुरासोमौ (हि) यस्मात् कारणात् (वाम्) युवयोः (देवहितं) देवैः स्थापितं (नाना) पृथक् (सदः) स्थानं (कृतम्) सुरा सोमयो र्द्वेवेदी भवतः। अतः कारणात् (परमे) उत्कृष्टे (व्योमन्) व्योम्नि व्योम वद्धिशाले हवनस्थाने युवं (मा) (संसृक्षाथां) संसर्गं माकुरुत आहवनीये पयो हूयते दाक्षिणाग्नौ सुरा हूयते अतोन संसर्गः। सृजविसर्गे लुङ् एवं द्वौ प्रत्युक्त्वा सुरा माह हे सुरे (त्वम्) (शुष्मिणी) बलवती (सुरा) (असि) (एषः) (सोमः) (मा) मायारूपा त्वं (स्वाम्) (योनिम्) (आविशन्ती) सती (सोमम्) (मा) (हिंसीः) ॥ ७ ॥

**अथाध्यात्मम्**- हे देह सहात्मप्रतिबिंब यथा श्रुतिः माणा वै पयो ग्रहाः शरीरं सुराग्रहाः नानाहि सोमश्च

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतोऽस्याश्वि॒नन्तेजः॑ सार॑स्व॒तं वी॒र्य्य॑मै॒न्द्रम्बल॑म्। ए॒ष ते॒ योनि॒र्मोदा॑य त्वा॒ऽऽनन्दा॑य त्वा॒ महसे त्वा। ८।**

सुराच १२।७।३।१४– १६ (हि) यस्मात्कारणात् (वाम्) युवयोः (देवहितं) ईशस्य स्थापितं (नाना) पृथक् (सदः) स्थानं (कृतम्) अतः कारणात् (परमे) (व्योमन्) गगनमंडले (मा) (संसृक्षाथां) हे देह (त्वम्) (शुष्मिणी) बलवती (सुरा) विषयमदजनकः (असि) (एष) आत्मप्रतिबिंबः (सोमः) अमृतः (मा) मायारूपस्त्वं (स्वाम्) (योनिम्) उत्पत्तिस्थानं (आविशन्ती) (सोमम्) आत्मप्रतिबिंबं (मा) (हिंसीः) संसारबंधनेन यथा श्रुतिः सुरामेव सुरां करोति सोममेव सोमं करोत्येनां व्यावर्त्तयत्यात्मनो गृहिं सायै १२।७।३।१४—— ॥ ७ ॥

ॐ उपयाम गृहीत इत्यस्या भूतिर्ऋषिर्निचृदार्षी पंक्तिश्छन्दः सोमो देवता १



CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

**मंत्रार्थः** – हे सुरासोम समूह (आश्विनं) (तेजः) (सारस्वतम्) सरस्वती सम्बंधि (वीर्यम्) सामर्थ्य (ऐन्द्रम्) इन्द्र सम्बन्धि (वलम्) त्वं (उपयाम गृहीतः) उपयाम पात्रेण गृहीतः (असि) (एष) (ते) (योनिः) स्थानं (मोदाय) प्रमोदाय (त्वा) त्वां सादयामि (आनन्दाय) हर्षाय (त्वा) त्वां सा० (महसे) महत्त्वाय (त्वा) त्वां सादयामि ॥७॥

**अथाध्यात्मम्** – हे प्राण युक्त देह (आश्विनं) नरनारायण सम्बन्धि (तेजः) (सारस्वतम्) महावाग भिमानि देवि सम्बन्धि (वीर्यम्) सामर्थ्य (ऐन्द्रम्) महानारायण सम्बन्धि (वलम्) त्वं (उपयाम गृहीतः) परा शक्त्या गृहीतः (असि) (एष) परा शक्तिः (ते) (योनिः) स्थानं (मोदाय) संसार दुःखनिवृत्तये (त्वा) त्वां सादयामि (आनन्दा

**तेजोऽसि तेजो मयि धेहि वीर्य्यमसि वीर्य्यं मयि धेहि वलमसि वलम्मयि धेह्योजोऽस्योजो मयि धेहि मन्युरसि मन्युं मयि धेहि सहोऽसि सहो मयि धेहि ॥९॥**

य) ब्रह्मानन्दाय (त्वा) त्वां सा० (महसे) योगैश्वर्याय (त्वा) त्वां सादयामि यथा श्रुतिः प्राणा वै पयोग्रहाः शरीरं सुराग्रहा व्यतिषक्तान्गृह्णाति शरीरमेव प्राणैः संदधाति प्राणाञ्च शरीरेणायोऽऽयुरेवास्मिन्दधाति तस्मात्सौत्रामण्येजानः सर्वमायुरेत्यथो य एवमेतद्वेद १२।७।३।१६—॥८॥ अस्यां कंडिकायां षट्मंत्रास्सन्तितानाह आश्विन ग्रहणानन्तरं सादनात्प्राक् द्वे दर्भतृणे प्रागग्रे पात्रे परिक्षिप्त्वा गोधूमस्थूल वदरीफल योश्चूर्णानि सहैव पयसि क्षिपति तस्य मंत्रः का० १९।२।१६ इन्द्र यव सूक्ष्म वदरी फल योश्चूर्णानि सारस्वते पयो ग्रहे क्षि-

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

पति तस्य मंत्रः का० १९।२।१७ यवातिस्थूल वदर फल योश्चूर्णान्यैन्द्रे पयो ग्रहोक्षिपति तस्य मंत्रः का० १९।२।१९ वृकादीनां मिश्रैः केशैःप्रति मंत्रं सुराग्रहान्मिश्रयति तस्य मंत्राः काः १९।२।२२।-२३ ऊों १,६ मंत्रयोरा भूतिर्ऋषिरासुरीजगती छन्दः सुरासोमौ देवते १ ऊों २,३,५ मंत्राणामाभूतिर्ऋषिरासुरीत्रिष्टुप् छन्दः सुरासोमौ देवते १ ऊों अजो सीत्यस्या भूतिर्ऋषिः प्राजापत्याऽनुष्टुप् छन्दः सुरा देवता १

**मंत्रार्थः** हे पयः प्राणवात्वं (तेजः) (असि) (मयि) (तेजः) (धेहि) स्थापय १ (वीर्यम्) (असि) (मयि) (वीर्यं) सामर्थ्यं (धेहि) (वलम्) (असि) (मयि) (वलम्) (धेहि) हे सुरे शरीरवात्वं (ओजः) कान्तिः (असि) (मयि) (ओजः) (धेहि) (मन्युः) अहंकारः (असि) (मयि) (मन्युं) अहंकारं (धेहि) (सहः) वलं (असि) (मयि) (सहः) वलं (धेहि) ॥ ९॥

**याव्याघ्रंविषूचिकोभौवृकंञ्च रक्षति। श्येनम्पतत्रिणꣳसिꣳहꣳसेमम्पात्वꣳहसः॥ १०॥**

अध्वर्यु प्रतिप्रस्थातारौ सहैवन्तः पात्येऽवास्थितं प्राङ्मुखं यजमानं श्येनपिच्छाभ्यां नामेरूर्ध्वमधश्च पावयतस्तस्य मंत्रः का० १९।२।२६ ऊोंया व्याघ्रमित्यस्य हैमवर्चिर्ऋषिरनुष्टुप् छन्दो विष्भूचिका देवता १

**मंत्रार्थः**–(या) (विष्भूचिको) विषु सर्वत्र अञ्चति गच्छति विष्भूचीसैव विषूचिका रोगविशेषः (व्याघ्रं) (च) (वृकं म्) (उभौ) (रक्षति) पाति तथा (श्येनम्) (पतत्रिणꣳ) पक्षिणं (सिंहं) रक्षति (सा) विष्भूचिका (इमम्) यजमानं (अंहसः) व्याधि हेतु भूतात्पापात् (पातु) रक्षतु ॥ १०॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

**अथाध्यात्मम्** – (या) (विषूचिका) सर्व व्यापिनी परा शक्तिः (व्याघ्रं) प्राणं यथा श्रुतिः यान्य रसि लोमा नि-
यानिच निकक्षयोस्तानि व्याघ्रलोमानि १२।८।३।६ (च) (वृकम्) अपानं। यान्युपस्थेलोमानि यानिचा धस्ता नि-
वृकलोमानि श० १२।८।३।६ (उभौ) (रक्षति) तथा (श्येनम्) (पतत्रिणं सिंहं) जीवात्मानं। श्येन पत्राभ्या मूर्ध्वंचा-
वाञ्च पाव यतः प्राणोदान योस्तद्रूपं श० १२।७।३।२२ (सिंहम्) उदानं रक्षति केशाश्च श्मश्रूणिच सिंहस्य लो
मानि श० १२।८।३।६ (सा) पराशक्तिः (इमम्) आत्म प्रतिबिंबं (अंहसः) संसार बंधन रूपात्पापात् (पातु) ॥ १०॥

अग्निं प्रेक्षस्वेति प्रैषेणाध्वर्युर्यजमानमग्निं दर्शयति सप्रेषित औत्तर वेदिकमग्नि मीक्षते तस्य मंत्रः का० १९

**यदापिपेषमातरम्पुत्रः प्रमुदितो धयन्। एतत्तदग्नेऽअनृणोभवाम्य हतौ पितरौमया। सम्पृचस्थ सम्मा भद्रेण पृङ्क्त विपृचस्थ विमा पाप्मना पृङ्क्त॥११॥**

२।२७ यजमानः सहैव पयोग्रहाणां स्पर्शं करोति तस्य मंत्रः का० १९।२।२८ ॐ यदेत्यस्य हैमवर्चिर्ऋषिर्बृहतीछ-
न्दोऽग्निर्देवता १ ॐ सम्पृच स्थेत्यस्य हैमवर्चिर्ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः पयो ग्रहो देवता २

**मंत्रार्थः** (प्रमुदितः) प्रहृष्टः (धयन्) स्तन पानं कुर्वन् (अहम्) (यत्) (मातरम्) जननीं (आपिपेष) पिष्टवान्-
पद्भ्यां पीडितवान् पिषेर्लिट उत्तमैक वचनम् हे (अग्ने) (तत्) (एतत्) अहं (अनृणः) ऋणत्रय रहितः (भवामि)
(मया) (पितरौ) मातापितरौ (अहतौ) न पीडितौ यः पुत्रः प्रत्युप कर्त्तुमशक्तः सएव पित्रोर्हन्ता हे पयोग्रहाः यूयं

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

[१५](सम्पृचः) स्थतएवसंयोजकाः [१६](स्थ) भवत [१७]अतः(मा) मां [१८](भद्रेण) कल्याणेन [१९](सम्पृङ्क्त) मां कल्याणयुक्तं
कुरुत। सम्पूर्वात् पृचेः क्विप्। पृचे रौधिकाल्लोट् हे सुराग्रहा यूयं [२०](विपृचः) वियोजकाः [२१](स्थ) अतः [२२](मा) मां [२३](पाप्मे
ना) [२४](विपृङ्क्त) निष्पापं कुरुत सुरात्यागेन यथा श्रुतिः अना द्यावै ब्राह्मणेन परिस्रुत्स एतस्मादनाद्याज्ज्ञायते श०
१२।७।३।१ — ॥ ११॥ **अथाध्यात्मम्** [१](प्रमुदितः) संसारमध्ये प्रहृष्टः [२](धयन्) विषयरूप दुग्धपानं कुर्वन् [३](अह
म्) जीवः [४](यत्) [५](मातरम्) प्रकृतिं [६](आपिपेष) पीडितवान् हे [७](अग्ने) ब्रह्माग्ने [८](तत्) [९](एतत्) अहं [१०](अनृणः) ऋणात्र
यरहितः [११](भवामि) [१२](मया) [१३](पितरौ) प्रकृति पुरुषौ [१४](अहतौ) न पीडितौ यत्नैः पूजितौ तस्मात् हे प्राणाः। प्राणा वै प

**देवा यज्ञमतन्वत भेषजम्भिषजाश्विना। वाचा सरस्वती भिषगिन्द्रायेन्द्रियाणि दधतः॥ १२॥**

यो ग्रहाः श० १२।७।३।१६ यूयं [१५](सम्पृचः) संयोजकाः [१६](स्थ) [१७](मा) मां [१८](भद्रेण) मोक्षेण [१९](सम्पृङ्क्त) हे देहावयवाः
शरीरं सुराग्रहाः श० १२।७।३।१६ यूयं [२०](विपृचः) वियोजकाः [२१](स्थ) [२२](मा) [२३](पाप्मनो) [२४](विपृङ्क्त) ॥ ११॥

**अथाधिदैवम्** देवा यज्ञमित्यादि कण्डिका विंशति [१]ब्राह्मणरूपा [२]तो विनियोगाभावः ब्राह्मणानुवाको [३]विं
शतिरनुष्टुभः सौत्रामण्याः सोमसाम्यमतिपादिकाः [४](देवाः) [५](भेषजम्) इन्द्रस्यौषधरूपं [६](यज्ञम्) [७](अतन्वत)
विस्तारयामासुः तदा [८](अश्विना) अश्विनौ [९](भिषजा) भिषजौ वैद्यौ (सरस्वती) च [१०](वाचा) (इन्द्रियाणि) वीर्याणि-
(दधतः) धारयन्त आसन् यथा श्रुतिः त्वष्टा हतपुत्रोऽभिचरणीयमपेन्द्रं सोममाहरत्तस्येन्द्रो यज्ञवेशसंकु



CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

त्वामासहासोममपिबत्स विष्वङ् व्यार्च्छत्तस्य मुखात्प्राणेभ्यः श्रीर्यशसान्यूर्ध्वान्युदक्रामँस्तानि पशून्प्राविशँस्तस्मा-
त्पशवो यशो ह भवति य एवं विद्वान्त्सौत्रामण्याभिषिच्यते तेनतो ऽस्मा एतमश्विनौ च सरस्वती च यज्ञꣳ सम भरन्त्सौत्राम-
णीं भेषज्याय तयैनमभ्यषिञ्चंस्ततो वै स देवानाꣳ श्रेष्ठो ऽभवच्छ्रेष्ठः स्वानां भवति य एनया मिषिच्यते १२। ८।३।१-२॥१२॥

**अथाध्यात्मम्** (देवाः)[1] वागाद्यृत्विजः (भेषजम्)[2] आत्मप्रतिविंबरूपस्य यजमानस्यौषधरूपं (यज्ञम्)[3] देहात्म-विवेकरूपं यज्ञं (अतन्वत)[4] तदा (भिषजा)[5] संसाररोगस्य वैद्यौ (अश्विना)[6] नरनारायणौ (सरस्वती)[7] वागधिष्ठात्री देवता च (वाचा)[8] महावाचा (इन्द्रियाणि)[9] योगबलानि (दधतः)[10] धारयन्त आसन् ॥ १२॥

**दीक्षायै रूपꣳ शष्पाणि प्रायणीयस्य तोक्मानि। क्रयस्य रूपं सोमस्य लाजा सोमाꣳशवो मधु ॥ १३॥ आतिथ्यरूपम्मासरम्महावीरस्य नग्नहुः। रूपमुपसदामेतत्तिस्रो रात्रीः सुरासुता ॥ १४॥**

इदानीं सौत्रामण्याः सोमसम्पत्तिं निरूपयति (शष्पाणि)[1] नवप्ररूढव्रीहिरूपाणि (दीक्षायै)[2] दीक्षणीयेष्टेः षष्ठ्यर्थे-चतुर्थी (रूपꣳ)[3] (तोक्मानि)[4] नवप्ररूढयवाः (प्रायणीयस्य)[5] प्रायणीयेष्टे रूपम् (लाजाः)[6] (क्रयस्य)[7] (सोमस्य)[8] (रूपम्)[9] (मधु)[10] मधुरस्वादा लाजाः (सोमांशवः)[11] सोमखण्डाः ॥ १३॥

**अथाध्यात्मम्** इदानीमात्मप्रतिविंबस्य सम्पत्तिं निरूपयति (शष्पाणि)[1] लोमानि। यथा श्रुतिः एतस्माद्वै यज्ञा-त्पुरुषो जायते स यद्ध वा ऽअस्मिँल्लोके पुरुषो ऽन्नमत्ति तदेनममुष्मिँल्लोके प्रत्यत्ति स वा ऽएष परिस्रुतो यज्ञस्तायते ऽ

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

ना घावै ब्राह्मणेऽपरिस्रुत्स एतस्मादनाद्याज्जायतेत थं हा मुष्मिं लोकेऽन्नं प्रत्यत्ति तस्मादेष ब्राह्मण यज्ञ एव यत्सौत्रा
मणी तस्य लोमान्येव शष्पाणि १२।८।३।१-२ (दीक्षायै) दीक्षणीयेष्टेः (रूपम्) (तोक्मानि) त्वक्। त्वक् तोक्मानिश०
१२।८।३।२ (प्रायणीयस्य) प्रायणीष्टे रूपम् (लाजाः) मांसं। मांसं लाजाः १२।८।३।२ (क्रयस्य) (सोमस्य) (रूपम्) (मं
धुः) मांसमेव (सोमांशवः) ॥ १३॥ (मासरम्) व्रीहिश्यामाकौदनाचामयोः शष्पतोक्मलाजनग्नहुःचूर्णैः संसर्गो मा
सरं (आतिथ्यरूपम्) आतिथ्येष्टेः स्वरूपम् (नग्नहुः) सर्जत्वगादिषड्विंशति वस्तून्येकीकृतानि नग्नहुः (महावीरस्य)
घर्मस्य रूपम् (तिस्रः) (रात्रीः) त्रिरात्र पर्यन्तं (सुरा) (आसुता) अभिषुता (एतत्) (उपसदाम्) उपसत्संज्ञाना मिष्टीनां

**सोमस्य रूपङ्क्रीतस्य परिस्रुत्परिषिच्यते। अश्विभ्यान्दुग्धम्भेषजमिन्द्रा**
**यैन्द्रथं सरस्वत्या १५**

(रूपम्) ॥ १४॥ **अथाध्यात्मम्-** (मासरम्) मज्जा। मज्जा मासरं श० १२।८।३।२ (आतिथ्यरूपम्) आति
थ्येष्टेः स्वरूपम् (नग्नहुः) लोहितं। नग्नहुर्लोहितं श० १२।८।३।२ (महावीरम्) रूपम् (तिस्रः) (रात्रीः) (सुरा) देहः (आ
सुता) अभिषुता (एतत्) भूतात्मा (उपसदाम्) उपसत्संज्ञाना मिष्टीनां (रूपम्) ॥ १४॥
(इन्द्राय) (ऐन्द्रथं) इन्द्रसम्बन्धि (भेषजम्) औषधं (सरस्वत्या) सरस्वत्यै (अश्विभ्याम्) (दुग्धम्) रसं (परिस्रुत्) सु
रा रूपं यत् (दिनत्रये (परिषिच्यते) तत् (क्रीतस्य) (सोमस्य) (रूपम्) ॥ १५॥
**अथाध्यात्मम्-** (इन्द्राय) आत्मरूपयजमानाय (ऐन्द्रथं) तस्य सम्बन्धि (भेषजम्) औषधं (सरस्वत्या) महावा



CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

ने (अश्विभ्याम्) नरनारायणाभ्यां (दुग्धम्) पान योग्यं यत् (परिस्रुत) रसं (परिषिच्यते) तत्क्रीतस्य) (सोमस्य) मानस सूर्यस्य (रूपम्) ॥ १५॥ (आसन्दी) यजमानाभिषेकाय मञ्चिका (राजासन्द्यै) सोमासन्द्याः (रूपमे) (सुराधानी) सुरास्थाप्यते यस्यां सा (कुम्भी) (वेद्यै) सोमक्या वेदेः रूपम् (अन्तरः) वेदिद्वय मध्यभागः (उत्तर वेद्याः) (रूपम्) (कारोतरः) सुरापावनचालनी (भिषक्) इन्द्रस्य यजमानस्यौषधम् ॥ १६॥ **अथाध्यात्मम्** (आसन्दी) नाभिः। आसन्दीनाभिः श० १२। ८।३।३ (राजासन्द्यै) आत्म प्रति विंबा सन्द्याः (रूपम्) (सुराधानी) तमोरूपात्म प्रति विंबस्य धारकं

**आसन्दीरूपꣳ राजासन्द्यै वेद्यै कुम्भी सुराधानी। अन्तर उत्तरवेद्या रूपं कारोतरो भिषक् ॥ १६॥ वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रियम्। यूपेन यूप आप्यते प्रणीतो अग्निरग्निना ॥ १७॥**

(कुम्भी) मानस कमलं (वेद्यै) आत्मप्रतिविंब सम्बन्धिन्या वेदेः रूपम् (अन्तरः) मनो भ्रकुटि वेदिद्वयमध्यगं हृदयं (उत्तर वेद्याः) (रूपम्) (कारोतरः) अस्थि रूप आत्म प्रति विंबपावनचालनी। अस्थि कारोतरः श० १२। ८। ३। २ (भिषक्) आत्मप्रतिविंबरूपस्य यजमानस्यौषधम् ॥ १६॥ (वेद्या) वर्त्तमानया (वेदिः) सोमिकी (समाप्यते) सम्यक् प्राप्यते (बर्हिषा) अन्नत्येन (बर्हिः) सौमिकं तथा (इन्द्रियं) वीर्यं समाप्यते (यूपेन) अन्नत्येन (यूपः) (आप्यते) (अग्निना) अन्नत्येन (प्रणीतः) (अग्निः) प्राप्यते ॥ १७॥ **अथाध्यात्मम्** (वेद्या) मनोरूपया वेद्या। द्वे वेदी भवतः द्वौ वा व लोकौ देव लोकश्चैव पितृ लोकश्च १२।७।३।७ (वेदिः) सौत्रामणि यज्ञ सम्बन्धिनी (समाप्यते) (बर्हिषा) प्राणेन·

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

प्रजा वै बर्हिः २।६।१।२३ प्राणाः प्रजा १४।४।३।१४ (बर्हिः) सौमिकं तथा (इन्द्रियं) योगवलं समाप्यते (यूपेन) नासिकया। यथा वैनासिकै वं यूपः ४।२।१।२५ (यूपः) (आप्यते) (अग्निना) आत्मना। आत्मै वाग्निः श० ६।७।१।१० (प्रणीतः) (अग्निः) ब्रह्माग्निः प्राप्यते॥१७॥ (यत्) (अश्विनो) आश्विनौ तत् (हविर्धानं) (यत्) (सरस्वती) तत् (आग्नीध्रं) तथा (इन्द्राय) यत् (ऐन्द्रम्) इन्द्रदेवत्यं (सदः) (पत्नीशालं) (कृतम्) तत् (गार्हपत्यः) ज्ञेयः॥१८॥ **अथाध्यात्मम्**–(यत्) (अश्विनो) अक्ष्योः पुरुषौ। तद्योह वा इमौ पुरुषाविवाक्ष्योः एतावेवाश्विनौ १२।८।३।१२ तत् (हविर्धानं) सौमिकं (यत्) (सरस्वती) महावाक्। वाक् सरस्वती श० १२।८।३।१३ तत् (आग्नीध्रं) सौमिकं तथा (इन्द्राय) यजमानाय यत् (ऐन्द्रम्) यजमानस-

**हविर्द्धानं यदश्विनाग्नीध्रं यत्सरस्वती। इन्द्रायैन्द्रꣳ सदस्कृतम्पत्नीशालङ्गार्हपत्यः॥ १८॥ प्रैषेभिः प्रैषानाप्नोत्याप्रीभिराप्रीर्य्यज्ञस्य। प्रयाजेभिरनुयाजान्वषट्कारेभिराहुतीः॥ १९॥**

न्धि (सदः) उदरं। उदरमेवास्य सदः यदस्मिन्विश्वे देवा असीदंस्तस्मात्सदो नाम श० ३।५।३।५ (पत्नीशालं) हृदयं। अथैतद्वामे ऽक्षिणि पुरुषरूपम्। एषास्य पत्नी विराट् तयोरेष संस्तावो य एषो ऽन्तर्हृदय आकाशः श० १४।६।११।३ (कृतम्) संस्कृतं तत् (गार्हपत्यः) सौमिकः॥१८॥ (प्रैषेभिः) प्रैषैः (प्रैषान्) (आप्नोति) (आप्रीभिः) प्रयाजयाज्याभिः (यज्ञस्य) (आप्रीः) आप्नोति (प्रयाजेभिः) प्रयाजैः प्रयाजानाप्नोति। अनुयाजैः (अनुयाजान्) (वषट्कारेभिः) वषट्कारान्। आहुतिभिः (आहुतीः) आप्नोति प्रैषादीनामुभयत्र सद्भावात्। प्रयाजेभिरित्यादिवाक्यचतुष्टयस्योत्तरपदलोपश्छन्दसः॥१९





CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

९०१ **अथाध्यात्मम्** - [१](प्रैषेभिः) प्राणानां प्रेषणैः [२](प्रैषान्) [३](आप्नोति) [४](आप्रीभिः) प्राणसम्बन्धि मंत्रैः। प्राणा वै प्रयाजाः श० ११।२।७।२७ अन्तरिक्ष लोकं याज्य याजयति श० १४।६।२।१२ [५](यज्ञस्य) [६](आप्रीः) प्रयाज याज्यान् आप्नोति [७](प्रयाजेभिः) प्राणैः। पञ्च प्रयाजाः इमेऽ एवास्यतेशीर्षण्याः ११।२।६।४ प्रयाजानाप्नोति। अवाञ्च प्राणैः। त्रयोऽनुयाजाः इमऽ एवास्यतेऽ वाञ्चस्त्रयः प्राणाः ११।२।६।९ [८](अनुयाजान्) [९](वषट्कारेभिः) प्राणप्रदानैः। प्राणो वै वषट्कारः प्राणो वै भक्षस्तत्प्राणं पुनरात्मन्धत्ते श० ४।२।१।२९ वषट्कारानाप्नोति। प्राणादीनामाहुतिभिः [१०](आहुतीः) आप्नोति॥ १९॥

[१](पशुभिः) कृत्वा [२](पशून्) [३](आप्नोति) [४](पुरोडाशैः) हविभिः [५](हवींषि) [६](आप्नोति) [७](छन्दोभिः) छन्दांस्याप्नोति। सामधेनीभिः

## पशुभिः पशूनाप्नोति पुरोडाशैर्हवींष्या। छन्दोभिः सामिधेनी

## र्याज्याभिर्वषट्कारान्॥ २०॥

[८](सामधेनीः) आप्नोति [९](याज्याभिः) याज्या आप्नोति वषट्कारैः [१०](वषट्कारान्) आप्नोति पश्वादीनामुभयत्र सद्भावात्। अत्राप्युत्तरार्धलोपः पूर्ववत्॥ २०॥ **अथाध्यात्मम्** - [१](पशुभिः) प्राणहृदयात्मभिः। प्राणो वै पशुः हृदयमु वै पशुः ३।८।३।१५-१६ एतावान्वै पशुर्यावान्प्राण आत्मा च ६।६।२।७ [२](पशून्) [३](आप्नोति) [४](पुरोडाशैः) आत्मसहेन्द्रियैः। जीवमेव देवानाम् हविर्भवत्यमृतम मृतानाम् श० १।२।१।२० [५](हवींषि) [६](आप्नोति) [७](छन्दोभिः) देहांगैः। छंदांसि देहांगानि श० ८।५।२।३-६ छन्दांस्याप्नोति— अग्न्यन्तरिक्षवायुस्वर्गादित्यचन्द्र मनो वाक्तपो ब्रह्मे [८]कादश सामधेनीभिः यथा श्रुतिः अग्नि वाय्वादिभिरिदꣳ सर्वं समिद्धं तस्मात्सामधेन्यो नाम ११।२।७।६ (सामधेनीः) आप्नोति-

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

[९](याज्याभिः) ऋग्विशेषैः। याज्या आप्नोति वषट्कारैः प्राणप्रदानैः [१०](वषट्कारान्) आप्नोति ॥२०॥

[१](धानाः) भ्रष्टधान्यम् [२](करम्भः) उदमन्थः [३](सक्तवः) प्रसिद्धाः [४](परीवापः) हविष्पंक्तिः [५](पयः) [६](दधि) एतानि [७](सोमस्य) [८](रूपम्)—[९](आमिक्षा) उष्णे दुग्धे दध्निक्षिप्ते घनभाग आमिक्षा [१०](मधु) मधुरं [११](वाजिनम्) आमिक्षानिःसृतं जलं [१२](हविषः) रूपम् ॥२१॥

## अथाध्यात्मम्

[१](धानाः) अहोरात्राणि। अहोरात्राणां वा ऽएतद्रूपं यद्धानाः १३।२।१४ [२](करम्भः) (क) कण्ठचक्रं (अ) विष्णोः स्थानं नाभिचक्रं (र) हृदयचक्रं (अ) ब्रह्मस्थानं नाभेरधश्चक्रं (म) मूलचक्रं (भ) भृकुटिचक्रं तेषां समूहः करम्भः [३](सक्तवः) इन्द्रियाणि। देवानां वा ऽएतद्रूपं यत्सक्तवः श० १२।२।१।३ [४](परीवापः)

**धानाः करम्भः सक्तवः परीवापः पयो दधि। सोमस्य रूपꣳ हविषऽआमिक्षा वाजिनम्मधु ॥२१॥ धानानाꣳ रूपङ्कुवलम्परीवापस्य गोधूमाः। सक्तूनाꣳ रूपम्बदरमुपवाकाः करम्भस्य ॥२२॥**

(प) पायुः (अ) श्रोत्रं (र) रेतोधारको लिङ्गः (इ) नासिका (इ) नेत्रं (व) वक्त्रं तेषामापोऽन्तरिक्षाणि [५](पयः) प्राणः। पयः प्राणः श० १२।८।१।२० [६](दधि) पृथिवी लोकः। दधि हैवास्य लोकस्य रूपम् श० ७।५।१।३ [७](सोमस्य) आत्मप्रतिबिंबस्य [८](रूपम्) [९](आमिक्षा) निरुद्धेन्द्रियाणि। प्राणः पयः शीर्षंस्तत्प्राणां श० ६।५।४।१५ [१०](मधु) प्राणः प्राणो वै मधु श० १४।१।३।३० [११](वाजिनम्) रागरूपरसः यथा भगवद्वाक्यं। विषया विनिवर्त्तन्ते निराहारस्य देहिनः रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्त्तते अ० २ श्लोक ५९ [१२](हविषः) रूपम् ॥२१॥ [१](कुवलम्) कोमलं बदरीफलं [२](धानानाम्) भृष्टधान्यानां [३](रूपम्)



CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

(गोधूमाः)(परीवापस्य) हविष्पंक्तेः रूपम्(वदरम्) सर्ववदरीफलं(सक्तूनाम्)(रूपम्)(उपवाकाः) यवाः(करम्भस्य) रूपंज्ञेयं॥२२॥ अथाध्यात्मम्–(कुवलम्) पक्ष्माणि। पक्ष्माणि कुवलसक्त वभ्र श० १२।८।३।५(धानानां) भृष्टधानानां(रूपम्)(गोधूमाः) पक्ष्माणि। पक्ष्माणि गोधूमसक्त वभ्र श० ५(परीवापस्य) हविष्पंक्ते रूपम्(वदरम्) नासिकयोर्लोमानि। यानि नासिकयोर्लोमानि तानि वदरसक्त वभ्र श० १२।८।३।५(सक्तूनाम्)(रूपम्)(उपवाकाः) नासिकयोर्लोमानि। यानि नासिकयोर्लोमानि तान्युपवाक्सक्त वभ्र श० ५(करम्भस्य) रूपम्॥२२॥

(यत्)(यवाः) ते(पयसः)(रूपम्)(कर्कन्धूनि) स्थूलवदराणि(दध्नः)(रूपम्)(वाजिनम्)(सोमस्य)(रूपम्)(आमिक्षा)

**पयसो रूपं यद्यवा दध्नो रूपङ्कर्कन्धूनि। सोमस्य रूपं वाजिनꣳ सौम्यस्य रूपमामिक्षा॥२३॥ आश्रावयेति स्तोत्रियाः प्रत्याश्रावो अनुरूपः। यजेति धाय्या रूपम्प्रगाथा येयजामहाः॥२४॥**

पयस्या(सौमस्य) चरोः(रूपम्) ज्ञेयम्॥२३॥ अथाध्यात्मम्–(यत्)(यवाः) कर्णयोर्लोमानि यानि कर्णयोर्लोमानि तानि यवसक्त वभ्र श० १२।८।३।६ ते(पयसः)(रूपम्)(कर्कन्धूनि) भ्रुवोर्लोमानि। यानि भ्रुवोर्लोमानि तानि कर्कन्धुसक्त वभ्र श० ६(दध्नः)(रूपम्)(वाजिनम्) रागरूपरसः(सोमस्य)(रूपम्)(आमिक्षाः) निरुद्धेन्द्रियसमूहः(सौम्यस्य) चरोः(रूपम्) ज्ञेयम्॥२३॥ शास्त्रसम्पत्तिमाह(आश्रावय)(इति) शब्दः(स्तोत्रियाः) स्तोत्रेप्रथमस्तृचो ऽनुवाकः ज्ञेयः(प्रत्याश्रावः) अस्तु श्रौषडिति शब्दः(अनुरूपः) उत्तरस्तृचः तद्रूपः(यज)(इति) शब्दः

(धय्या रूपम्) निष्केवल्यं स्तोत्रियानुरूपयोरनन्तरं धय्या शस्य ते सा ज्ञेया (येयजामहाः) ये यजामह इति शब्दः (प्रगाथाः) प्रगाथरूपत्वेन ध्येयः ॥ २४॥ **अथाध्यात्मम्** – (आश्रावय) महावागोपदेशं कुरु (इति) स्तुत्या सह गुरोः प्रार्थना (स्तोत्रियाः) (प्रत्याश्रावः) गुरूपदेशः (अनुरूपः) (यज) आत्म प्रति विंबं यज (इति) गुरो राज्ञा (धय्या रूपम्) (येयजामहाः) येयजामह इति संकल्पः (प्रगाथाः) ॥ २४॥ (अर्द्धऋचैः) अर्चत्यैरर्द्धर्चैः। पुंसि चेति पुंस्त्वम् ऋरत्यक इति ऋकारस्य सन्ध्यभावः (उकथानाम्) शस्त्रविशेषाणां (रूपम्) (आप्यते) (पदैः) (निविदः) न्यूङ्खान् मंत्रान् (आप्नोति) (प्रणवैः) ओङ्कारैः (शस्त्राणाम्) (रूपम्) (पयसा) दुग्धेन (सोमः) आप्यते ॥ २५॥

अर्द्धऋचैरुकथानाᳬं रूपम्पदैराप्नोति निविदः। प्रणवैः शस्त्राणाᳬं रूपम्पयसा सोम आप्यते ॥ २५॥ आश्विभ्याम्प्रातः सवनमिन्द्रेणैन्द्रम्माध्यन्दिनम्। वैश्वदेवᳬं सरस्वत्यातृतीयमाप्तᳬं सवनम् २६

**अथाध्यात्मम्** – (अर्द्धऋचैः) अर्द्धस्तुतियोग्यैरिन्द्रियैः (उकथानाम्) (रूपम्) (आप्यते) (पदैः) बुद्धेर्व्यवसायैः (निविदः) (आप्नोति) (प्रणवैः) (शस्त्राणां) (रूपम्) (पयसा) प्राणेन। प्राणः पयः ६।५।४।१५ (सोमः) आत्मप्रतिविंब आप्यते) २५॥ सवनसम्पत्तिमाह (अश्विभ्याम्) (प्रातः सवनम्) (इन्द्रेण) (ऐन्द्रम्) ऐन्द्रदेवत्यं (माध्यन्दिनम्) सवनं (सरस्वत्या) देवतया कृत्वा (वैश्वदेवम्) विश्वदेवदेवत्यं (तृतीयम्) (सवनम्) (आप्तᳬं) प्राप्तम् ॥ २६॥

**अथाध्यात्मम्** – (अश्विभ्याम्) नरनारायणाभ्याम् (प्रातः सवनम्) (इन्द्रेण) महाविष्णुना (ऐन्द्रम्)·



CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

महाविष्णुदेवत्यं (माध्यन्दिने) सवनं (सरस्वत्या) मह्या वाचा (वैश्व देवम्) विश्व देव देवत्यं (तृतीयं) (सवनम्) (आप्तम्) आप्तं भवति॥२६॥ (वायव्यैः) (वायव्यानि) पात्राणि (आप्नोति) (सतेन) वैतस पात्रेण (द्रोण कलशम्) कुम्भीभ्याम्) शत छिद्राभ्यां सुराधानीभ्यां (अम्भृणौ) पूतभृदाधवनीयौ (सुते) अभिषुते सोमेऽप्याप्नोति (स्थालीभिः) (स्थालीः) (आप्नोति)॥२७॥ **अथाध्यात्मम्**-(वायव्यैः) इन्द्रिय गोलकैः (वायव्यानि) पात्राणि (आप्नोति) (सतेन) हृदयेन (द्रोण कलशम्) (कुम्भीभ्याम्) लिंग गुदाभ्याम् (अम्भृणौ) (सुते) संस्कृते प्रति बिंबे। आप्नोति (स्थालीभिः) कमलैः (स्थालीः) (आप्नोति)॥२७॥ (यजुर्भिः) (ग्रहाः) (आप्यन्ते) (ग्रहैः) (स्तोमाः) (च) (विष्टुतीः) विविध स्तुतीः प्राप्यन्ते

**वायव्यैर्वायव्यान्याप्नोति सतेन द्रोण कलशम्। कुम्भीभ्यामम्भृणौ सुते स्थालीभिः स्थालीराप्नोति॥२७॥ यजुर्भिराप्यन्ते ग्रहा ग्रहैः स्तोमाश्च विष्टुतीः। छन्दोभिरुक्था शस्त्राणि साम्नावभृथ आप्यते २८**

(छन्दोभिः) (उक्था) उक्थानि (शस्त्राणि) चाप्यंते (साम्ना) (अवभृथः) (आप्यते)॥२८॥

**अथाध्यात्मम्**-(यजुर्भिः) मनो वृत्तिभिः। मनो यजुर्वेदः श॰ १४।४।३।१२ (ग्रहाः) चक्षुश्श्रोत्राद्यङ्गानि। अङ्गानि वै ग्रहाः श॰ ४।५।९।११ (आप्यन्ते) (ग्रहैः) वागादिभिः (स्तोमाः) (च) (विष्टुतीः) प्राप्यन्ते (छन्दोभिः) वाग्वृत्तिभिः। वागेवऋग्वेदः १४।४।३।१२ (उक्था) (शस्त्राणि) चाप्यन्ते (साम्ना) प्राणेन। प्राणः सामवेदः १४।४।३।१२ (अवभृथः) आत्मनद्यां स्नानं (आप्यते)॥२८॥ (इडाभिः) (भक्षान्) (आप्नोति) (सूक्तवाकेन) (आशिषः) (शम्युना) होम विशे

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

षेण (पत्नीसंयाजान्) (समिष्टयजुषा) (संस्थाम्) आप्नोति॥२८॥ **अथाध्यात्मम्** - (इडाभिः) प्राणैः। अन्नं हि प्राणः श० ३।८।४।८ (भक्षान्) (आप्नोति) (सूक्तवाकेन) परमेश्वरस्य स्तोत्रेण वा (आशिषः) प्रार्थनाः (शम्युना) विषय होमेन (पत्नीसंयाजान्) उरू वाहून् द्वौ वाहू द्वाऽउरू। तऽएव चत्वारः पत्नीसंयाजाः श० ११।१।६।३३ (समिष्टयजुषा) पद्भ्यां। द्वौ पादौ वेवास्य समिष्टयजुः श० ११।२।५। (संस्थाम्) आप्नोति॥२९॥

(व्रतेन) (दीक्षाम्) (आप्नोति) (दीक्षया) (दक्षिणाम्) (आप्नोति) (दक्षिणा) दक्षिणया। विभक्तिलोपः (श्रद्धाम्) आस्तिक्य वुद्धिं। श्रत् सत्यं धीयते यस्यां सा श्रद्धा (श्रद्धया) (सत्यम्) ज्ञानमनन्तं ब्रह्म (आप्यते) प्राप्यते॥३०॥

**इडाभिर्भक्षानाप्नोति सूक्तवाकेनाशिषः। शंयुना पत्नीसंयाजान्त्समिष्टयजुषा सꣳस्थाम्॥२९॥ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥३०॥**

(यज्ञस्य) (एतावत्) एतत्परिमाणं (रूपम्) (यत्) (देवैः) (ब्रह्मणा) प्रजापतिना (कृतम्) दृष्टम्। दर्शनकरणयोको भेदः सुप्तमति वुद्धन्यायो दर्शनं वुद्धिपूर्वं तु करणम् (सौत्रामणी) सौत्रामण्यां। सप्तम्येकवचनस्य पूर्वसवर्णदीर्घः (यज्ञे) (सुते) सुरासोमेऽभिषुते सति (तत्) (एतत्) सोमयागरूपम् (सर्वम्) (आप्नोति)॥३१॥

अध्वर्युस्त्रीनपि पयोग्रहान् सहैव जुहोति का० १९।३।८ ओं सुरावन्तमित्यस्य हैमवर्चिर्ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दोऽश्विसरस्वतीन्द्रा देवताः १ **मंत्रार्थः** - (नमोभिः) यज्ञैः। यज्ञो नमः श० १२।७।३।२ (दिवि) स्वर्गे (देवतासु)



CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

(महिषाः) महान्तः
(सोमम्) (दधानाः) धारयन्तः ऋत्विजः। ऋत्विजो वै महिषाः १२। ८। १। २ (बर्हिषदम्) बर्हिषि सीदन्तीति देवा यत्र सर्वर्हिषत्तम् (सुरावन्तं) सुरा विद्यते यत्र तं (सुवीरं) शोभनर्त्विजम् (यज्ञम्) सौत्रामणी संज्ञं (हिन्वन्ति) वर्धयन्ति प्रापयन्ति वा (स्वर्काः) शोभन मंत्राः शोभनान्ना वा तथा (इन्द्रम्) (यजमानाः) यजन्तो वयम् (मदेम) हृष्येम ॥ ३२॥

अथाध्यात्मम् — (नमोभिः) योग यज्ञैः (दिवि) गगन मंडले (देवतासु) ब्रह्म परा महानारायणेषु (सोमम्) आत्मप्रति बिंबं (दधानाः) (महिषाः) वागाद्यृत्विजः (बर्हिषदम्) मानस कमले विद्यमानं। अयं लोको बर्हिः श० १। ४। १। २४

एतावद्रूपम् यज्ञस्य यद्देवैर्ब्रह्मणा कृतम्। तदेतत्सर्वमाप्नोति यज्ञे सौत्रामणी सुते॥ ३१॥ सुरावन्तम्बर्हिषदꣳ सुवीरं यज्ञꣳ हिन्वन्ति महिषा नमोभिः। दधानाः सोमन्दिवि देवतासु मदेमेन्द्रं यजमानाः स्वर्काः॥ ३२॥ यस्ते रसः सम्भृत ओषधीषु सोमस्य शुष्मः सुरया सुतस्य। तेन जिन्व यजमानम्मदेन सरस्वतीमश्विनाविन्द्रमग्निम्॥ ३३॥

(सुरावन्तं) भूतात्म शक्त्या संयुक्तं। शरीरꣳ सुराग्रहाः १२। ७। ३। १६ (सुवीरं) निरुद्ध प्राणवन्तं। प्राणा वै दश वीराः श० १२। ८। १। २२ (यज्ञम्) आत्मरूप यजमानं। यजमानो यज्ञः श० १३। २। २। १ (हिन्वन्ति) वर्धयन्ति (स्वर्काः) शुभ यज्ञवन्ताः। अर्को वै देवानामन्नमन्नं यज्ञः श० १२। ८। १। २ तथा (इन्द्रम्) महाविष्णुं (यजमानाः) वयं वागाद्यृत्विजः (मदेम) ब्रह्मानन्दं प्राप्नुयाम ॥ ३२॥ प्रतिप्रस्थाता पालाशोलूखलैः सुराग्रहान्दक्षिणेऽग्नौ यजति तस्य मंत्रः का० १९

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

३।९ ओं यस्त इत्यस्य हैमवर्चिर्ऋषिरार्षी त्रिष्टुप् छन्दः सुरा देवता १ **मंत्रार्थः** – हे सुरे (ओषधीषु) वर्त्तमानः (ये) (ते) तव (रसः) (सम्भृतः) एकीकृतः (सुरया) सह (सुतस्य) अभिषुतस्य (सोमस्य) यः (शुष्मः) बलं (तेन) (मदेन) मदजनकेन (यजमानं) (सरस्वतीम्) (अश्विनौ) (इन्द्रम्) (अग्निम्) (जिन्व) प्रीणीहि॥ ३३॥

**अथाध्यात्मम्** – हे भूतात्मन् (ओषधीषु) इन्द्रियेषु वर्त्तमानः। ओषधयो वै देवानां पत्न्यः श० ६।५।४।४ (ये) (ते) (रसः) (सम्भृतः) एकीकृतः (सुरया) देहेन सह (सुतस्य) अभिषुतस्य (सोमस्य) आत्मप्रतिविंबस्य यः (शुष्मः) योगबलं (तेन) (मदेन) (यजमानम्) आत्मानं। आत्मा वै यज्ञस्य यजमानः श० ९।५।२।१६ (सरस्वतीम्) महावाचं-

यमश्विना नमुचेरासुरादधि सरस्वत्यसुनोदिन्द्रियाय। इमन्तꣳ शुक्रम्मधुमन्तमिन्दुꣳ सोमꣳ राजानमिह भक्षयामि॥ ३४॥

(अश्विनौ) नरनारायणौ (इन्द्रम्) महाविष्णुं (अग्निम्) ब्रह्माग्निं (जिन्व) प्रीणीहि॥ ३३॥

अध्वर्यु प्रतिप्रस्थाताग्नीध्रा आश्विनं पयोग्रहं क्रमेण द्विर्द्विर्भक्षयन्ति होत्र ब्रह्म मैत्रावरुणाः सारस्वतं पयोग्रहमदन्ति यजमान ऐन्द्रं पयोग्रहमत्ति तस्य मंत्रः का० १९।३।२०–२३ ओं यमित्यस्य हैमवर्चिर्ऋषिरार्षी त्रिष्टुप् छन्दोऽश्वि सरस्वत्यः देवताः **मंत्रार्थः** – (अश्विना) अश्विनौ (सरस्वती) (यम्) सोमं (आसुरात्) असुरपुत्रात् (नमुचेः) (अधि) सकाशात् (इन्द्रियाय) इन्द्रस्य वीर्य्याय भैषज्या यवा (असुनोत्) अभ्यषुणोत् (इमम्) (तम्) (शुक्रम्) शुद्धं सुरारूपेण पृथग्भूतं (मधुमन्तं) रसवन्तं (इन्दुम्) परमैश्वर्यप्रदं। इदि परमैश्वर्ये (राजानम्) (सोमम्) (इह) यज्ञे (भक्षयामि)॥ ३४॥





CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

**अथाध्यात्मम्** – (अश्विना) नरनारायणौ (सरस्वती) महावाक् (यम्) आत्मप्रतिबिंबं (आसुरात्) (नमुचेः) पापात् पाप्मावेन मुक्तिः श० १२।७।३।४ (अधि) सकाशात् (इन्द्रियाय) मम यजमानस्य बलाय (असुनोत्) अभ्यषुणोत् देहाभिमानरहितं कृतवान् (इमम्) (तम्) (शुक्रम्) शुद्धं (मधुमन्तं) ज्ञानवन्तं। इदम्वैतन्मधु दध्यङ्ङाथर्वणोऽश्विभ्यामुवाच श० १४।५।५।१६ (इन्दुम्) योगैश्वर्यप्रदं (राजानम्) दीप्तिमन्तं (सोमम्) आत्मप्रतिबिंबं (सोमी वै ब्रा॰) श० ३।२।४।९ (इह) यज्ञे ऽहमात्मा (भक्षयामि) ॥ ३४ ॥

प्राचीनावीतिनो दक्षिणे स्थिता अध्वर्य्यादय आश्विनं होत्रादयः सारस्वतं यजमान ऐन्द्रं सुराग्रहं भक्षयन्ति का० १९।३

**यदत्र रिप्तथं रसिनः सुतस्य यदिन्द्रो अपिबच्छचीभिः। अहन्तदस्यमनसा शिवेन सोमथं राजानमिह भक्षयामि ॥ ३५ ॥**

२४ ओं यदत्रेत्यस्य हैमवर्चिर्ऋषिर्ब्राह्म्युष्णिक् छन्दो यजमानो देवता १ **मंत्रार्थः** (रसिनः) रसवतः (सुतस्य) अभिषुतस्य सोमस्य (यत्) यो भागः (अत्र) सुरायाम् (रिप्तं) लिप्तं लग्नं (यत्) सुरालग्नं सोमांशं (शचीभिः) कर्मभिः शुद्धं कृत्वा (इन्द्रः) (अपिबत्) (अस्य) सोमस्य (तत्) सुरानिर्गतं (राजानम्) (सोमम्) (शिवेन) (मनसा) (इह) यज्ञे (अहम्) (भक्षयामि) यथा श्रुतिः इन्द्रस्य वै यत्र इन्द्रियाणि वीर्याणि व्युदक्रामंस्तानि देवा एतेनैव यज्ञेन पुनः समदधुर्युस्तयो ग्रहाश्च सुराग्रहाश्च गृह्यन्ते ऽ इन्द्रियाण्येवास्मिंस्तद्वीर्याणि पुनः संदधाति १८।८।१।१—॥ ३५ ॥

**अथाध्यात्मम्** – (रसिनः) ज्ञानरसवतः (सुतस्य) देहाभिमानरहितात्मप्रतिबिंबस्य (यत्) यो भागः (अत्र)

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

देहे[5](रिसम्) लिप्तं[6](यत्) देह लग्न मात्मप्रति विंबं[7](शचीभिः) योगक्रियाभिः शुद्धं कृत्वा[8](इन्द्रः) आत्मरूप यजमानः[9](आपिबत्) [10](अस्य) आत्मप्रति विंबस्य[11](तत्) देहाभिमान रहितं[12](सोमम्) अमृतं[13](शिवेन)[14](मनसा)[15](इह) यज्ञे[16](अहम्) आत्मा[17](भक्षयामि)॥३५॥ आह वनीयस्याङ्गारेषु परिधेर्वहिर्दक्षिणा दिक्स्थेषु होम शेषान् सुराग्रहान् पितृभ्य इति प्रति मन्त्रं जुहोति तदेवाह उत्तरेऽङ्गारे आश्विनं मध्यमे सारस्वतं दक्षिणा ऐन्द्रं सुराग्रहं जुहोति तस्य मंत्राः का० १९।३।१७ सौर ग्रह होम पात्र क्षालन जलेन यथास्व मङ्गारान् सिञ्चति तस्य मंत्रः का० १९।३।१८ जपमंत्रः का० १९।३।२० ओंपितृभ्य इत्यस्य हैम वर्चिर्ऋषि र्याजुषी गायत्री छन्दः पितरो देवताः१ ओंपितामहेभ्य इत्यस्य हैम वर्चिर्ऋषि रासुर्यनुष्टुप् छन्दः पितरो दे०२

**पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः**
**प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरो**
**ऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्॥३६॥**

ओंप्रपितामहेभ्य इत्यस्य हैम वर्चिर्ऋषिः साम्न्यनुष्टुप् छं० पितरो दे० ३ ओं अक्षन्नित्यस्य हैम वर्चिर्ऋषि र्दैवी पंक्तिश्छन्दः पि० ४ ओं अमी + अतीतृपन्तेति मंत्रयो र्हैम वर्चिर्ऋषि र्याजुष्यनुष्टुप् छन्दः पितरो देवताः५,६ ओंपितर इत्यस्य हैम वर्चिर्ऋषि र्याजुषी गायत्री छन्दः पितरो देवताः७ **मंत्रार्थः**– मनसा शिवेनेति[1] पूर्व मंत्रे कथितं तस्य मनसः शिवत्व मूते पितृ तर्पणाद सम्भवं मनः पितर इति श्रुतेस्तस्मात् पितृ यज्ञ माह(स्वधायिभ्यः) स्वधामन्नं प्रति यन्ति गच्छन्तीति स्वधायिनस्तेभ्यः[2](पितृभ्यः) बहु वचनं पितृ व्याप्त्य पेक्षं[3](स्वधा) स्वधासंज्ञकं[4](नमः) अन्नमस्तु स्वधावै पितॄणामन्न



CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

मिति श्रुतेः यद्वा स्वधाऽन्नं नमः नमस्कारश्चास्तु [5](स्वधायिभ्यः) [6](पितामहेभ्यः) [7](स्वधा) [8](नमः) [9](स्वधायिभ्यः) [10](प्रपितामहेभ्यः) [11](स्वधा) [12](नमः) अस्तु [13](पितरः) [14](अक्षन्) भक्षितवन्तः। घस्लृ अदने लङि रूपम् [15](पितरः) [16](अमीमदन्त) तृप्ताः। मद तृप्तौ [17](पितरः) [18](अतीतृपन्त) तर्पिता अस्माभिः यद्वाऽस्मान तीतृपन्त तर्पयन्ति तृप्ताः सन्तोऽभीष्टदानेन हे [19](पितरः) [20](शुन्धध्वं) यूयं स्वपाणिप्रक्षालनेन शुद्धा भवत॥३६॥ दक्षिणाहृक्नीयपार्श्वयोः स्तम्भद्वयोपरि दक्षिणाग्रं वंशं निधाय तत्रस्थे शिक्ये शतच्छिद्रां कुम्भीं निधाय कुम्भीतले गोऽश्ववालकृतं सुरागलनं वालं तथाऽजाविलोमकृतं पयोगलनं पवित्रं तथा शतमानमितं हिरण्यं निधाय तत्र सुराशेषं सिक्त्वाग्नेरुपरि स्रुवन्त्यां सुरायां नर्वर्चं यज

**पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषा। पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषा विश्वमायुर्व्यश्नवै।३७।**

मानं वाचयति तस्य मंत्रौ का० १९।३।३० ओं पुनन्त्वित्यस्य हैमवर्चिर्ऋषिरनुष्टुप् छन्दः पितरो देवताः १, २

**मंत्रार्थः** – [1](सोम्याः) सोमार्हाः [2](पितरः) [3](शतायुषा) पूर्णायुर्दात्रा [4](पवित्रेण) गोऽश्ववालकृतेन [5](मा) मां [6](पुनन्तु) शोधयन्तु [7](पितामहाः) [8](मा) [9](पुनन्तु) [10](प्रपितामहाः) [11](पुनन्तु) [12](पितामहाः) [13](शतायुषा) [14](पवित्रेण) [15](मा) [16](पुनन्तु) [17](प्रपितामहाः) [18](पुनन्तु) [19](विश्वम्) सर्वं [20](आयुः) [21](व्यश्नवै) व्याप्नवै प्राप्नुयाम्। अश्नूङ् व्याप्तौ लोट्। आदारार्थं पुनश्चिनम्॥३७॥ तृतीयो मंत्रः ओं अग्न इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता १

मंत्रार्थः - हे (अग्ने) त्वं (आयूंषि) त्वत एवायुः प्रापकाणि (पवसे) पावयसे चेष्टयसे। अनन्त भूत एयन्तः अतए-
व (नः) अस्मदर्थं (इषम्) व्रीह्यादि धान्यं (च) (ऊर्जम्) दध्यादि (आसुव) आपय देहि (आरे) दूरेऽपि स्थितानां (दु
च्छुनाम्) सारमेयप्रायान् दुर्जनान्। कर्मणि षष्ठी (बाधस्व) ताडय ॥ ३८॥ चतुर्थो मंत्रः ओं पुनन्त्वित्यस्य प्रजापति-
र्ऋषिरनुष्टुप् छन्दोऽग्न्याद्या देवताः१ मंत्रार्थः (देवजनाः) देवानुगामिनो जनाः (मा) मां (पुनन्तु) (मनसा)
सह (धियः) बुद्धिवृत्तयः मां (पुनन्तु) (विश्वा) विश्वानि सर्वाणि (भूतानि) मां (पुनन्तु) हे (जातवेदः) अग्ने त्वमपि

**अग्न आयूंषि पवस आसुवोर्जमिषञ्च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनाम्।३८**
**पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः**
**पुनीहि मा॥ ३९॥ पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत्। अग्ने क्रत्वा क्र**
**तूँ२॥ रनु॥ ४०॥ यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने विततमन्तरा। ब्रह्म तेन पुनातु मा।४१।**

(मा) मां (पुनीहि) ॥ ३९॥ ओं पवित्रेणेत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता१
मंत्रार्थः - हे (देव) (अग्ने) (दीद्यत्) दीप्यमानस्त्वं दिवि यड्लगन्तं रूपम् (शुक्रेण) शुक्लेन शुद्धेन (पवित्रेण)
(मा) मां (पुनीहि) (क्रतून्) यज्ञान् (अनु) अनु लक्ष्य (क्रत्वा) क्रतुना कर्मणा पुनीहि अस्माकं यज्ञान् सम्यक् कारय
॥ ४०॥ ओं यत्त इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्री छन्दो ब्रह्माग्निर्देवता १ मंत्रार्थः - हे (अग्ने) (ते) तव (अर्चि-
षि) ज्वालायां (अन्तरा) मध्ये (यत्) (ब्रह्म) परब्रह्मरूपं (पवित्रं) (विततम्) विस्तृतं प्रसारितं (तेन) पवित्रेण (मा)



CC-0. In Public Domain Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

मांभवान्(पुनातु)॥४१॥ ॐ पवमान इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्री छन्दो वायुर्देवता १

**मंत्रार्थः** (यः)(विचर्षणिः) विविधंचष्टेस द्रष्टा कृता कृतज्ञः(पवमानः) शोधकः(सः) वायुः(नः) अस्माकं(पोता) शोधकः(सः)(अद्य)(पवित्रेण) आत्म रूपेण(मा) मां(पुनातु)॥४२॥ ॐ उभाभ्यामित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता १ **मंत्रार्थः** – हे(देव)(सवितः)(उभाभ्याम्) प्रज्ञाविलोम निर्मितेन(पवित्रेण)(च)(सवेन) अभ्यनुज्ञया(विश्वतः) सर्वतः(माम्)(पुनीहि)॥४३॥ ॐ वैश्वदेवीत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो

पवमानस्सोऽअद्यनः पवित्रेण विचर्षणिः। यः पोता सपुनातुमा॥४२॥

उभाभ्यान्देव सवितः पवित्रेण सवेनचामाम्पुनीहि विश्वतः॥४३॥

वैश्वदेवी पुनती देव्यागाद्यस्यामिमा वह्व्यस्तन्वो वीतपृष्ठाः तयामदन्तस्सधमादेषु वयꣳस्याम पतयोरयीणाम्॥४४॥

वैश्वदेवी देवता १ **मंत्रार्थः** (देवी) नानावतारैः क्रीडनशीलस्य महानारायणस्य शक्तिः(पुनती) पावनं कुर्वती(वैश्वदेवी) सर्वेषां प्रकाशका परा शक्तिः(आगता) समन्तात्प्राप्ता(यस्याम्)(इमाः)(वह्व्यः) वहुसंख्याकाः(तन्वः) जीवात्मानः। आत्मा वैतनूरिति श्रुतेः(वीतपृष्ठाः) प्राप्तस्तोत्राभक्ताः(तया) परा शक्त्या(सधमादेषु) यज्ञस्थानेषु(मदन्तः) मोदमानाः सन्तः(वयम्)(रयीणाम्) धनानां योगैश्वर्याणाम्वा(पतयः)(स्याम) भवेम॥४४॥

स्रुचं गृहीत्वाज्यं दक्षिणेऽग्नौ प्राचीनावीती दक्षिणामुखो यजमानो जुह्वा जुहोति तस्य मंत्रः का० १९।३।२३

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

ओं येस माना इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप् छन्दः पितरो देवता॥ **मंत्रार्थः** (ये) (समानाः) सपिण्डाः (समनसः) समनस्काः (पितरः) (यमराज्ये) यमलोके सन्ति (स्वधा) स्वधाख्यं (नमः) अन्नं (तेषाम्) पितॄणां (लोकः) दर्शन गोचरं भवतु (यज्ञः) पितृयज्ञः (देवेषु) वसुरुद्रादित्यादिदेवेषु (कल्पताम्) आप्त्र्यताम्॥ ४५॥

उत्तर वेद्या हवनीये कृत सव्यो यजमान अग्निमयां स्रुचाज्यं जुहोति तस्य मंत्रः का० १९।३।२४ ओं येस माना इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप् छन्दः श्रीर्देवता॥ **मंत्रार्थः** (ये) (जीवेषु) प्राणिषु मध्ये (समानाः) समदर्शिनः (

**येसमानाः समनसः पितरो यमराज्ये। तेषांल्लोकः स्वधानमो यज्ञो देवेषु कल्पताम्॥ ४५॥ येसमानाः समनसोजीवाजीवेषु मामकाः। तेषाᳬं श्रीर्मयि कल्पतामस्मिंल्लोके शतᳬं समाः॥ ४६॥ द्वेस्रुतीऽअशृणवम्पितॄणामहन्देवानामुत मर्त्यानाम्। ताभ्यामिदं विश्वमेजत्समेति यदन्तरा पितरम्मातरञ्च॥ ४७॥**

(समनसः) समनस्काः (मामकाः) मदीयाः सपिण्डाः (जीवाः) प्राणिनः पितरः (तेषाम्) (श्रीः) धनसम्पत्तिः (अस्मिन्) (लोके) (शतᳬं) (समाः) (मयि) (कल्पताम्) मामाप्त्र्यताम् तर्पणादि कर्म कर्त्तुम्॥ ४६॥

ऋत्विग्यजमानेषु कृतान्वारम्भेष्वध्वर्युः पयो जुहोति तस्य मंत्रः का० १९।३।२५ ओं द्वेस्रुतीत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो देवयानपितृयानमार्गौ देवते॥ **मंत्रार्थः** (अहम्) (मर्त्यानाम्) मनुष्याणां (देवानाम्) (उत) अपि च (पितॄणाम्)





CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

(द्वे)(सृती) द्वौ मार्गौ (अशृणवम्) श्रुतवानस्मि श्रुतितः (यत्) विश्वं (पितरम्) (च) (मातरम्) (अन्तरा) भूलोक द्युलोकयोर्मध्ये वर्त्तते तत् (इदम्) (एजत्) क्रियावत् (विश्वम्) (ताभ्याम्) देवयान पितृयानाभ्यां (समेति) सङ्गच्छते ताभ्यां सृतिभ्यां सुकृतमस्तु ॥ ४७ ॥ उखास्थितं शेषं पयो यजमानो भक्षयति तस्य मंत्रः का० १९।३।२६।

ओं इदमित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिस्त्र्यवसाना ऽष्टिश्छन्दो यजमानाशीर्देवता १

मंत्रार्थः (इदम्) (प्रजननम्) प्रजोत्पादकं (दशवीरम्) दश प्राणानां स्वास्थ्य करं प्राणा वै दश वीराः श० १२।८

**इदꣳ हविः प्रजननम्मेऽअस्तु दशवीरꣳ सर्वगणं स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि। अग्निः प्रजाम्बहुलाम्मे करोत्वन्नम्पयो रेतोऽअस्मासु धत्त॥ ४८॥ उदीरतामवरऽउत्परासऽउन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुं यऽईयुरवृकाऽऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु॥ ४९॥**

।१।२२ (सर्वगणम्) सर्वाङ्ग स्वास्थ्य जनकं। अङ्गानि वै सर्वे गणाः श० १२।८।१।२२ (आत्मसनि) आत्मनो दातारं। षणु दाने तुदादिः (प्रजासनि) सन्तति दातारं (पशुसनि) पशु दातारं (लोकसनि) ऐहिक सुख दातारं (अभयसनि) स्वर्गस्य दातारं। स्वर्गो वै लोको ऽभयं श० १२।८।१।२२ (हविः) (मे) मम (स्वस्तये) कल्याणाय (अस्तु) एवं हविः प्रार्थ्याग्निं (प्रार्थयते) (अग्निः) (मे) मम (प्रजाम्) (बहुलाम्) प्रवृद्धां (करोतु) एवमग्निमुक्त्वा ऋत्विज आह हे ऋत्विजः (अस्मासु) (अन्नम्) व्रीह्यादि (पयः) दुग्धं (रेतः) वीर्यं वत्तां यूयं (धत्त) स्थापयत ॥ ४८॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

सोमवतां बर्हिषदामग्निष्वात्तानां मंत्रान्यजमानेन वाचयति तस्य प्रथमो मंत्रः का० १९।३।२१ ओं उदीरतामित्यस्य शङ्ख ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः पितरो देवताः १ **मंत्रार्थः** (अवरे) अस्मिँल्लोके ऽव स्थिताः (उत) अपि च (परासः) परस्मिन् लोके स्थिताः (उत) अपि च (मध्यमाः) मध्यलोकस्थाः (सोम्यासः) सोमार्हाः (पितरः) (उदीरताम्) ऊर्ध्वं क्रमन्ताम् ऊर्ध्वलोकं गच्छन्तु। ईर कम्पने अदादिः लोट् (ये) (असुम्) प्राणं (ईयुः) वातरूपं प्रापाः (ते) (अवृकाः) शत्रुरहिता उदासीनाः (ऋतज्ञाः) सत्यज्ञा यज्ञज्ञा वा स्वाध्यायनिष्ठा वा (पितरः) (हवेषु) आह्वानेषु (नः) अस्मान् (अवन्तु) रक्षन्तु।४९

द्वितीयो मंत्रः ओं अङ्गिरस इत्यस्य शंखऋषिर्विराट् त्रिष्टुप् छन्दः पितरो देवताः १

**अङ्गि॑रसो नः पि॒तरो॒ नव॑ग्वा॒ अथ॑र्वाणो॒ भृग॑वः सो॒म्यासः॑। तेषां॑ व॒य ᳪ सु॑म॒तौ य॒ज्ञिया॑ना॒मपि॑ भ॒द्रे सौ॑मन॒से स्या॑म॥५०॥ येन॑ः पूर्वे॑ पि॒तरः॑ सो॒म्यासो॑ऽनूहि॒रे सो॑मपी॒थं वसि॑ष्ठाः। तेभि॑र्य॒मः स ᳪ र॑रा॒णो ह॒वी ᳪ ष्यु॒शन्नु॒शद्भिः॑ प्रतिका॒मम॑त्तु॥**

**मंत्रार्थः** – ये (नवग्वाः) नूतनगतयः (सोम्यासः) सोमार्हाः (अङ्गिरसः) अङ्गिरसो ऽपत्यानि (अथर्वाणः) अथर्वणो मुनेरपत्यानि (भृगवः) भृगोरपत्यानि (नः) अस्माकं (पितरः) (तेषाम्) (यज्ञियानाम्) यज्ञार्हाणां (सुमतौ) शोभनबुद्धौ (भद्रे) कल्याणकारिणि (सौमनसे) शोभनमनस्त्वे (अपि) (वयम्) (स्याम) भवेम। अस्तेर्लिङ् ते ऽस्मासु सुमतिं कल्याणं मनश्च कुर्वन्त्वित्यर्थः॥५०॥ तृतीयो मंत्रः ओं येन इत्यस्य शंखऋषिर्निचृद्बृहत्युष्णिक् छन्दः पितरो देवताः १ **मंत्रार्थः** – (ये) (सोम्यासः) सोमार्हाः (वसिष्ठाः) वसिष्ठस्य गोत्रापत्यानि (नः) अस्माकं (पूर्वे)





CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

पितरः[७](सोमपीथं) सोमपानं [८](अनूहिरे) अनुवहन्तिस्म देवान् प्रापितवन्तः [९](उशन्) कामयमानः [१०](यमः) [११](तेभिः) तैः [१२](उशद्भिः) कामयमानैः पितृभिः। वश कान्तौ शतृ प्रत्ययः [१३](संरराणः) प्रीयमाणः सन् [१४](प्रतिकामम्) [१५](हवींषि) [१६](अत्तु) भक्षयतु ॥५१॥ तृतीयो मंत्रः ओं त्वमित्यस्य शंखऋषिर्ब्राह्म्युष्णिक् छन्दः पितरो देवताः१

**मंत्रार्थः** – हे[१](सोम) सोमाभिमानिन् देवते [२](त्वं) [३](प्रचिकितः) विशिष्टचैतन्ययुतोऽसि [४](त्वम्) [५](मनीषा) मनीषया। तृतीयैकवचने पूर्णसवर्णदीर्घः [६](रजिष्ठम्) रजसि ज्योतिर्मण्डले स्थितं निघ० [७](पन्थाम्) देवयानमार्गं [८](अनुनेषि) अनुनयसि प्रापयसि। नयतेः शपि लुसे गुणे लटि रूपम् हे[९](इन्दो) सोम [१०](नः) अस्माकं [११](धीराः) धीमन्तः यज्ञमन्तु॥५१॥

**त्वꣳ सोम प्रचिकितो मनीषा त्वꣳ रजिष्ठमनुनेषि पन्थाम्। तव प्रणीती पितरो न इन्द्रो देवेषु रत्नमभजन्त धीराः॥५२॥**

ज्ञानवन्तः [१२](पितरः) [१३](तव) [१४](प्रणीती) प्रणीत्या प्रणयेनाभ्यनुज्ञानेन [१५](देवेषु) विष्टये [१६](रत्नम्) रमणीयं यज्ञफलं [१७](अभजन्त) सिषेविरे सोमयागेनैव स्वर्गातेः॥ ५२॥ चतुर्थो मंत्रः ओं या हीत्यस्य शंखऋषिरार्षी त्रिष्टुप् छन्दः सोमो देवता१

**मंत्रार्थः** – हे[१](पवमान) शोधक [२](सोम) [३](नः) अस्माकं [४](धीराः) धीमन्तः [५](पूर्वे) [६](पितरः) [७](त्वया) [८](कर्माणि) यज्ञादीनि [९](चक्रुः) अतः प्रार्थये [१०](वन्वन्) अस्मिन्कर्मणि सम्भजमानः [११](अवातः) वाताद्युपद्रवरहितस्त्वं [१२](परिधीन्) उपद्रवकारिणः [१३](अपोर्णुहि) अपगमय। ऊर्णुञ् आच्छादने लोट् किञ्च [१४](वीरेभिः) वीरैः [१५](अश्वैः) तेजसा सूर्यरूपैः पितृभिर्युक्तस्त्वं। असौ वाऽआदित्य एषोऽश्वः श० ६।३।१।२९ [१६](नः) अस्माकं [१७](मघवा) धनवान् धनस्य दाता [१८](आभव)।५३।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

पञ्चमो मंत्रः ऊँत्वमित्यस्य शंखऋषिर्निचृद्‌ब्राह्मुष्णिक् छन्दः सोमो देवता १

**मंत्रार्थः** हे (सोम) (पितृभिः) (संविदानः) सम्वादं कुर्वाणः। समोगमित्यादिनात्मनेपदित्वाच्छानच् (त्वम्) (द्यावा पृथिवी) (अन्वाततन्थ) विस्तारितवान्। तनु विस्तारे लिट् वमुथा ततन्थेत्यादिना निपातः हे (इन्द्रो) (तस्मै) (ते) तुभ्यं वयं (हविषा) (आविधेम) हविर्दद्मः। विधति र्दानार्थः (वयम्) (रयीणाम्) (धनानां) (पतयः) (स्याम) भवेम ॥५४॥ सोमवतां पितृणां षड्ऋचः समाप्तः अतो वर्हिषदां पितृणां त्र्यृचः ऊँ वर्हिषद इत्यस्य शंखऋषिर्निचृद्‌ब्राह्म्युष्णि

त्वयाहिनः पितरः सोम पूर्वेकर्म्माणिचक्रुः पवमानधीराः। वन्वन्नवातः परिधीँरऽपोर्णुवीरेभिरश्वैर्म्मघवा भवानः॥५३॥ त्वꣳ सोम पितृभिः संविदानोऽनुद्यावा पृथिवीऽआततन्थ। तस्मैतऽइन्दोहविषा विधेम वयꣳस्यामपतयो रयीणाम्॥५४॥ वर्हिषदः पितर ऊत्यर्वागिमावोहव्याचकृमाजुषध्वम्। तऽआगताऽवसा शन्तमेनाथानः शंयोररपोदधात॥५५॥

क् छन्दः पितरो देवताः१ **मंत्रार्थः** हे (वर्हिषदः) वर्हिषि दर्भे सीदन्ति ते वर्हि॰ एषोदरादित्वादन्त्यलोपः (पितरः) (ते) यूयं (ऊत्या) अवनेन निमित्तेन (अर्वाक्) समीपं (आगत) आगच्छत (वः) युष्माकं (इमा) इमानि (हव्या) हव्यानि वयं (चकृम) कृतवन्तः करोतेर्लिट् (आजुषध्वं) तानि यूयं सेवध्वं (अथ) अनन्तरं (शन्तमेन) सुखयितृतमेन (अवसा) अन्नेन तर्पिताः सन्तः (नः) अस्माकं (शं) सुखं रोगशमनं (योः) भयपृथक्करणं (अरपः) पापाभावं च



CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

(दधात्) धन्नस्थापयत। ततनविति नवा देशात् श्नाभ्यस्तयो रात इति आलोपाभावः॥५५॥

ओं आह मित्यस्य शंखऋषिरार्षी त्रिष्टुप् छन्दः पितरो देवताः १ **मंत्रार्थः** – (अहम्) (सुविदत्रान्) सुष्टु विशेषेण कल्याण दानान् (पितॄन्) (आ) आभिमुख्येन (अवित्सि) वेद्मि विदितवान् विदेर्लुङि आत्मने पदेउत्तमैकवचन रूपम् (विष्णोः) व्यापन शीलस्य यज्ञस्य। यज्ञो वै विष्णुः श० १।१।३।१ (नपातं) नास्ति पातो यस्मात्तं देवयान मार्गं (च) (विक्रमणं) विविधं क्रमणं गमनागमनं यस्मात्तं देवयान मार्गं (च) वेद्मि (ये) (बर्हिषदः) पितरः (स्वधया) सवनीय लक्षणेनान्नेन सह (सुतस्य) अभिषुतस्य सोमस्य (पित्वः) पानं (भजन्त) सेवन्ते लङ् अडभा-

आहम्पितॄन्त्सुविदत्राँ२॥ अवित्सिन पातञ्च विक्रमणञ्च विष्णोः। बर्हिषदो येस्वधयासुतस्यमजन्तपित्वस्तऽइहागमिष्ठाः॥५६॥ उपहूताः पितरस्सोम्यासो बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु। तऽआगमन्तुतऽइहश्रुवन्त्वाधिब्रुवन्तुतेवन्त्वस्मान्॥५७॥

वश्वार्षः (ते) पितरः (इह) यज्ञे (आगमिष्ठाः) आगच्छन्तु। लोडर्थे लुङ् पुरुषवचनव्यत्ययः॥५६॥

ओंउपहूता इत्यस्य शंखऋषि र्भुरिगार्षी पंक्तिश्छन्दः पितरो देवताः १ **मंत्रार्थः** – हे (पितरः) (इह) यज्ञे (आगमन्तु) आगच्छन्तु। व्यत्ययेन शपो लुक् (प्रियेषु) अभिरुचितेषु (बर्हिष्येषु) बर्हिषि सादितेषु (निधिषु) निधिभूतेषु निधिवत्स्थापनीयेषु हविषु (उपहूताः) (सोम्यासः) सोम्याः (ते) पितरः (श्रुवन्तु) अस्मद्वचः श्रृण्वन्तु (ते)

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

(अधिब्रुवन्तु) पितृभिः पुत्राणां यदुक्तव्यं तद्वदन्तु (ते) (अस्मान्) (अवन्तु) पालयन्तु ॥५७॥

चतस्त्र ऋचोऽग्निष्वात्तानां पितृणाम् ओं आयन्त्वित्यस्य शंख ऋषिः स्वराट् ब्राह्मी गायत्री छन्दः पितरो देवताः १

**मंत्रार्थः** — (सोम्यासः) सोम्याः सोमपानार्हाः (अग्निष्वात्ताः) श्रौतस्मार्त्त कर्मानुष्ठायिनः (नः) अस्माकं (पितरः) (देवयानैः) (पाथिभिः) मार्गैः (आयन्तु) (अस्मिन्) (यज्ञे) (स्वधया) अन्नेन (मदन्तः) तृप्यन्तस्तुष्टाः सन्तोऽस्मान् (अधिब्रुवन्तु) अधिकान्वदन्तु तद्वाक्यात्तथैव वयमधिकाः स्यामेत्यर्थः (ते) पितरः (अस्मान्) (अवन्तु) पालयन्तु ॥५८॥

**आयन्तु नः पितरस्सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पाथिभिर्देवयानैः । अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् ॥५८॥ अग्निष्वात्ताः पितर एह गच्छत सदः सदः सदत सुप्रणीतयः । अत्ता हवींषि प्रयतानि बर्हिष्यथा रयिं सर्ववीरन्दधातन ॥५९॥**

ओं अग्निष्वात्ता इत्यस्य शंख ऋषिर्निचृद्ब्राह्म्यनुष्टुप् छन्दः पितरो देवताः १ **मंत्रार्थः** हे (अग्निष्वात्ताः) (पितरः) (इह) यज्ञे यूयं (आगच्छत) (सुप्रणीतयः) शोभना प्रणीतिः प्रणयनं येषान्ते (सदः) (सदः) प्रति गृहं (सदत) उपविशत मित्यवीप्सयो रिति द्वित्वम् (बर्हिषि) दर्भे (प्रयतानि) नियमपूर्वकं स्थापितानि (हवींषि) (आ) (अत्त) आदरपूर्वकं भक्षयत (अथ) अनन्तरं (सर्ववीरं) पुत्रपौत्रैर्युतं (रयिं) (आ) समन्तात् (दधातन) स्थापयत ॥५९॥

ओं ये अग्निष्वात्ता इत्यस्य शंख ऋषि र्ब्राह्म्युष्णिक् छन्दः पितरो देवताः १

॥ य० ॥ माध्य० शा० ॥ वाज० सं० ॥

॥ अ० १९ ॥ मं० ५८ ॥ पृ० ६२ ॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

**मंत्रार्थः** [१](ये) [२](अग्निष्वात्ताः) अग्निना दग्धाः विधिवदौर्ध्वदेहिकं प्राप्ताः [३](ये) [४](अनग्निष्वात्ताः) अदग्धाः श्मशानकर्मन प्राप्ताः पितरः [५](दिवः) स्वर्गस्य [६](मध्ये) [७](स्वधया) अन्नेन स्वकर्मोपार्जितेन [८](मादयन्ते) तृप्यन्ते सुखं सेवन्ते यस्मात् [९](स्वराट्) स्वेनैव राजते स ईश्वरः [१०](तेभ्यः) पितृभ्योऽर्थे [११](यथावशम्) वशोऽभिलाषः यथाकामं [१२](एताम्) [१३](असुनीतिम्) प्राणयुक्तं [१४](तन्वम्) शरीरं [१५](कल्पयति) ददाति ॥ ६० ॥ ओं अग्निष्वात्ता इत्यस्य शंख ऋषिः आर्षी त्रिष्टुप् छन्दः पितरो देवताः १ **मंत्रार्थः** [१](ऋतुमतः) ऋतुयुक्तान् [२](अग्निष्वात्तान्) पितृन्वयं [३](हवामहे) आह्वयामः [४](ये) पितरः [५](नाराशंसे) चमसे [६](सोमपीथं) सोमपानं [७](आभुः) अश्नन्ति स्म। अश भोजने लिट् [८](ते)

**येऽअग्निष्वात्ता येऽअनग्निष्वात्ता मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते तेभ्यः स्वराडसुनीतिमेतां यथावशन्तन्वङ्कल्पयाति ॥ ६० ॥ अग्निष्वात्तानृतुमतो हवामहे नाराशꣳसे सोमपीथं यऽआशुः। तेनो विप्रासः सुहवा भवन्तु वयꣳ स्याम पतयो रयीणाम्। ६१।**

[९](विप्रासः) पितरः [१०](नः) अस्माकं [११](सुहवाः) स्वाह्वानाः [१२](भवन्तु) अस्मदाहूताः शीघ्रमायान्तु [१३](वयम्) [१४](रयीणाम्) धनानां [१५](पतयः) [१६](स्याम) भवेम ॥ ६१ ॥ ओं आच्या जान्वित्यस्य शंख ऋषिर्निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः पितरो देवताः १

**मंत्रार्थः** – हे [१](पितरः) [२](विश्वे) सर्वे यूयं वाम [३](जानु) [४](आ) समन्तात् [५](आच्य) पातयित्वा [६](दक्षिणतः) [७](निषद्य) दक्षिणाभिमुखा उपविश्य [८](इमम्) [९](यज्ञम्) [१०](अभिगृणीत) अभिष्टुत स्वाध्वयं यज्ञ इति स्तुतिं कुरुत [११](केनचित्

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

केनाप्यपराधेन (नः) अस्मान् (मा) (हिंसिष्ट) हिंसां मा कुरुत। हिनस्तेर्लुङ् (यत्) यस्मात् (पुरुषता) पुरुषभावेन चलचित्त्वेन। विभक्तिलोपः (वः) युष्माकं (आगः) अपराधं (वयम्) (कराम) कुर्मः। करोतेः शपि लङि रूपम् अड भावः ॥ ६२ ॥ ओं आसीनास इत्यस्य शंखऋषि र्ब्राह्म्युष्णिक् छन्दः पितरो देवता १

**मंत्रार्थः** – हे (पितरः) (अरुणीनाम्) अरुणवर्णानामूर्णानां यद्वा अरुणवर्णानामादित्यरश्मीनां (उपस्थे) उपरिभागे उत्सङ्गे वा (आसीनासः) आसीनाः उपविष्टाः यूयं (दाशुषे) हविर्दत्तवते (मर्त्याय) मनुष्याय यजमानाय (रयिम्)

**आच्या जानु दक्षिणतो निषद्येमं यज्ञमभिगृणीत विश्वे। मा हिंसिष्ट पितरः केन चिन्नो यद्व आगः पुरुषता कराम ॥ ६२ ॥ आसीनासो अरुणीनामुपस्थे रयिं धत्त दाशुषे मर्त्याय। पुत्रेभ्यः पितरस्तस्य वस्वः प्रयच्छत त इहोर्जं दधात ॥ ६३ ॥ यमग्ने कव्यवाहन त्वं चिन्मन्यसे रयिम्। तन्नो गीर्भिः श्रवाय्यं देवत्रा पनया युजम् ॥ ६४ ॥**

धनं (धत्त) दत्त (पुत्रेभ्यः) (तस्य) (वसुनः) धनस्य (प्रयच्छत) दानं कुरुत (ते) यूयं (इह) यज्ञे (ऊर्जं) रसं (दधात) स्थापयत ॥ ६३ ॥ ओं यमग्न इत्यस्य शंखऋषिरार्षी पंक्तिश्छन्दोऽग्निर्देवता १ **मंत्रार्थः** – हे (कव्यवाहन) कव्यं पितृभ्यो देयमन्नं वहतीति क०। कव्यपुरीषपुरीष्येषु ञ्युडिति ञ्युट् प्रत्ययः (अग्ने) (त्वम्) (चित्) अपि (यम्) (रयिम्) हविर्लक्षणं धनं (मन्यसे) उत्तमं जानासि (नः) अस्माकं (तम्) (गीर्भिः) वाग्भिः पुरोऽनुवाक्यायाज्यावषट्



CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

कारलक्षणाभिः (अवाच्यं) श्रोतुं योग्यं। ऋदक्षिस्ए हि गृहि दयिभ्य आय्य इति श्रृणोते राय्य प्रत्ययः (युजं) योग्यं हविर्लक्षणं धनं युज्यत इति युक्तम् क्विप् चेति क्विप्रत्ययः (देवत्रा) देवेषु देवमनुष्य पुरुषेत्यादिना सप्तम्यर्थे देवात्त्रा प्रत्ययः (आपनय) समन्ताद्देहिपनति दूर्न कर्म॥ ६४॥ ओं यो अग्नि रित्यस्य शंखऋषि रार्ष्यनुष्टुप् छन्दः अग्निर्देवता।

**मंत्रार्थः**–(यः) (कव्य वाहनः) (अग्निः) (ऋतावृधः) ऋतं सत्यं यज्ञं वा वर्धयन्ति ते ऋत वृधः सूंहिता यां दीर्घः तान् (पितृन्) (यक्षत्) इष्टवान्। लेटोः डाटौ सिब्बहुलं लेटि इतोलोपः (उ) (इत्) सोऽग्निरेव (देवेभ्यः) (च) (पितृभ्यः)

**योऽअग्निः कव्यवाहनः पितॄन्यक्षदृतावृधः। प्रेदु हव्यानि वोचति देवेभ्यश्च पितृभ्य आ। ६५। त्वामग्न ईडितः कव्यवाहनावाड्ढव्यानि सुरभीणि कृत्वी। प्रादाः पितृभ्यः स्वधया तेऽअक्षन्नद्धि त्वन्देव प्रयता हवींषि ६६**

(हव्यानि) हवींषि (आ) समन्तात् (प्रवोचति) व्यत्ययेन वचेः शपि वच उमिति छान्दस उमागमः॥ ६५॥

ओं त्वमित्यस्य शंखऋषिर्निचृत् त्रिष्टुप् छन्दोऽग्निर्देवता।

**मंत्रार्थः**–हे (कव्य वाहन) (अग्ने) (ईडितः) देवैर्ऋत्विग्भिश्च स्तुतः (त्वम्) (हव्यानि) हवींषि (सुरभीणि) सुगन्धानि (कृत्वी) कृत्वा। स्नात्वादयश्चेति कृत्वीतिनिपातः (अवाट्) वहसिस्म। वहेर्लुङि इडागमाभावे सिचो लोपे रूपम वाट् (स्वधया) पितृमंत्रेण (पितृभ्यः) (प्रादाः) दत्तवानसि। ददातेर्लुङि रूपम् (ते) पितरः (अक्षन्) भक्षयन्तिस्म। घस्तृ अदने इत्य रूपम् हे (देव) अग्ने (त्वम्) अपि (प्रयता) प्रयतानि शुद्धानि (हवींषि) (अद्धि) भक्षय। अद भक्षणे॥ ६६॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

ॐ येचे हेत्यस्य शंखऋषिर्ब्राह्म्युष्णिक् छन्दोऽग्निर्देवता १ **मंत्रार्थः** (च)[1] (ये)[2] (पितरः)[3] (इह)[4] लोके देहं गृहीत्वावर्त्तन्ते (च)[5] (ये)[6] (इह)[7] अस्मिल्लोके (न)[8] सन्ति स्वर्गे वर्तन्ते (च)[9] (यान्)[10] पितॄन् (विद्म)[11] वयं जानीमः (च)[12] (यान्)[13] पितॄन् (न)[14] (प्रविद्म)[15] स्मरणाभावात् हे (जातवेदः)[16] सर्वज्ञाग्ने (ते)[17] पितरः (यति)[18] यावन्तस्तान् (उ)[19] एव (त्वम्)[20] (वेत्थ)[21] जानासि (स्वधाभिः)[22] पितॄणामन्नैः (सुकृतं)[23] शोभनं यज्ञं (जुषस्व)[24] सेवस्व ॥ ६७ ॥ ॐ इदमित्यस्य शंखऋषि ब्राह्म्युष्णिक् छन्दः पितरो देवताः १ **मंत्रार्थः** – (अद्य)[1] (इदम्)[2] (नमः)[3] अन्नं (पितृभ्यः)[4] (अस्तु)[5] (ये)[6] (पूर्वासः)[7] पूर्वे । ऋषयः

**येचे॒ह पि॒तरो॒ येच॒नेह यॉंश्च॑ वि॒द्मयाँ २॥ उ॑च॒न प्र॑वि॒द्म । त्वं वे॑त्थ॒ यति॒ ते जा॑त वे॑दः स्व॒धा भि॑र्य्य॒ज्ञ ꣳ सु॑कृ॒तञ्जु॑षस्व ॥ ६७ ॥ इ॒दम्पि॒तृ भ्यो॒ नमो॑ऽअस्त्व॒द्य ये पूर्वा॑सो॒ यऽउप॑रास ई॒युः । ये पार्थि॑वे॒ रज॒स्या नि षे॑त्ता॒ ये वा॑नू॒न ꣳ सु॑वृ॒जना॑सु वि॒क्षु ॥ ६८ ॥**

(ये)[8] (उपरासः)[9] उपराः उपरमन्ते विरमन्ति ते उपरा उपरतव्यापाराः कृतकृत्याः (ईयुः)[10] सगुणं ब्रह्म प्रापुः (ये)[11] (पार्थिवे)[12] (रजसि)[13] स्वर्गादिलोकेषु । रजांसि वै लोका उच्यन्त इति श्रुतेः (आनिषत्ता)[14] समन्तान्निषण्णाः । नसत्त निषत्तेत्यादिना निष्ठायां निपातः (वा)[15] अथवा (ये)[16] (नूनꣳ)[17] (सुवृजनासु)[18] धर्मरूपबलयुक्तासु (विक्षु)[19] प्रजासु मनुष्यलोके देहं गृहीत्वा वर्त्तन्ते ॥ ६८ ॥ ॐ अधेत्यस्य शंखऋषि रार्षी त्रिष्टुप् छन्दोऽग्निर्देवता १

**मंत्रार्थः** हे (अग्ने)[1] (नः)[2] अस्माकं (परासः)[3] परा उत्कृष्टाः (प्रत्नासः)[4] प्रत्नाः पुराणाः (ऋतं)[5] यज्ञं (आशुषाणाः)[6] आ



CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

अनु वाना प्राप्नुवन्तः (पितरः) (यथा) येन प्रकारेण (अधा) अधो लोकात् (शुचि) शुचिं निर्मलं। सुपोलोपः (दीधितिं) रविमंडलं (इत्) एव (अयन्) आप्ताः। अय गतौ लङ् अड्भाव आर्षः (उक्थ शासः) यज्ञेषु उक्थानि शस्त्राणि शंसन्ति वदन्ति ते उक्थशासः क्विप् संहितायां दीर्घः (क्षामा) क्षामां भूमिं (भिन्दन्तः) वेदित्वात्वा लादि खननै र्विदारयन्तः सर्वोप करणै र्यज्ञं कुर्वन्तो वयं (अरुणीः) अरुण वर्णाः सूर्य दीधितं (अपव्रन्) अप वृणुमः सूर्य रश्मीनप वृत्य देवयान मार्गं प्राप्नुम। वृञ् वरणे विकरण व्यत्ययेन शपि लुप्ते लङि रूपम् अड भावः पुरुष व्यत्ययश्छान्दसः॥६९॥

ओं उशन्त इत्यस्य शंखऋषिरनुष्टुप् छन्दोऽग्निर्देवता १ **मंत्रार्थः** – हे अग्ने (उशन्तः) कामयमाना वयम्

**अधा यथा नः पितरः परासः प्रत्नासो अग्न ऋतमाशुषाणाः। शुचीदयन्दीधितिमुक्थशासः क्षामा भिन्दन्तो अरुणीरप व्रन्॥६९॥**

**उशन्तस्त्वा निधीमह्युशन्तः समिधीमहि। उशन्नुशत आवह पितॄन्हविषे अत्तवे॥७०॥**

(त्वा) त्वां (निधीमहि) स्थापयामः (उशन्तः) कामयमाना एव वयं त्वां (समिधीमहि) सन्दीपयामः (उशन्) कामयमानस्त्वं (उशतः) कामयमानान् (पितॄन्) (हविषे) (अत्तवे) हविः अत्तुं भक्षयितुं। तुमर्थे तवे प्रत्ययः विभक्ति व्यत्ययः (आवह) आनय॥७०॥ ओं अपामित्यस्य शंखऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता १

**मंत्रार्थः** हे (इन्द्र) (यत्) यदा त्वं (विश्वाः) (स्पृधः) सर्वान् सङ्ग्रामान् (अजयः) जितवानसि तदा (अपाम्) (फेनेन)

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

जलडिन्डीरेण (नमुचेः) असुरस्य (शिरः) (उदवर्त्तयः) छिन्नवानसि उत्पूर्वो वृतिः छेदार्थः ॥ ७१॥

**अथाध्यात्मम्** – हे (इन्द्र) आत्मरूप यजमान (यत्) यस्मात्त्वं (विश्वाः) सर्वान् (स्पृधः) कामादीनां सङ्ग्रामान् (अजयः) तस्मात् (अपाम्) कमलान्तरिक्षाणां (फेनेन) कामजनितेन मलेन (नमुचेः) पापस्य। पाप्मावै नमुचिः श० १२।७।३।४ (शिरः) (उदवर्तयः) ॥ ७१॥ अथर्चैनानुवाकेन समानकालमेव पयोग्रहान् सुराग्रहांश्चाध्वर्युरुपतिष्ठते तस्य प्रथमो मंत्रः का० १९।२।२४ ओं सोम इत्यस्याश्वि सरस्वतीन्द्रा ऋषयो महा बृहती छन्दः सोमो देवता १ **मंत्रार्थः** – यस्मात् (सुतः) अभिषुतः (राजा) (सोमः) (अमृतम्) अमृतरूपो रसरूपो भूत्वा-

**अपाम्फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्त्तयः। विश्वा यदजयः स्पृधः ॥ ७१॥**

**सोमो राजामृतं सुत ऋजीषेणाजहान्मृत्युम्। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोऽमृतम्मधु ॥ ७२॥**

(ऋजीषेण) नीरसेन सोमलताचूर्णेन (मृत्युम्) स्थूलभावं (अजहात्) तस्मात् (ऋतेन) यज्ञेन (इन्द्रस्य) (इदम्) (अन्धसः) अन्नस्य सोमस्य (शुक्रम्) शुद्धं (इन्द्रियम्) वीर्यप्रदं (विपानम्) तथा (इन्द्रियम्) वीर्यप्रदं (अमृतं) अमृततुल्यं (मधु) मधुरं (पयः) (सत्यम्) भवति ॥ ७२॥

**अथाध्यात्मम्** – (यस्मात् (सुतः) देहाभिमानात्पृथक्कृतः (राजा) राजमानः (सोमः) आत्मप्रतिबिंबः (अमृतम्) भूत्वा (ऋजीषेण) देहेन (मृत्युम्) (अजहात्) तस्मात् (ऋतेन) योगयज्ञेन (इन्द्रस्य) आत्मनः (इदम्)





CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥ (अन्धसः) आत्म प्रति विंवस्य (भुक्रम्) भुद्धं (इन्द्रियं) योग वल प्रदं (विपानम्) तथा (इन्द्रियम्) योग वल प्रदं (अमृतम्) अमृत तुल्यं (मधु) मधुरं (पयः) प्राणः। प्राणः पयः श० ६।५।४।१५ (सत्यम्) भवति॥ ७२॥

द्वितीयो मंत्रः ओं अद्भ्य इत्यस्याश्विसरस्वतीन्द्रा ऋषयो महा वृहती छन्दो ग्रहा देवताः १ **मंत्रार्थः**– यस्मात् (कुङ्) हंस रूपः (आङ्गिरसः) प्राणः। प्राणोवा ऽ अङ्गिरा श० ६।१।२।२८ (धिया) प्रज्ञया (अद्भ्यः) कमलान्तरिक्षेभ्यः (क्षीरम्) आत्म प्रति विंवं (अपवित्) तस्मात्० पूर्ववत्॥ ७३॥ तृतीयो मंत्रः ओं सोममित्यस्य विनियोगः पूर्ववत्-

**अद्भ्यः क्षीरं व्यपिवत्क्रुङ्ङाङ्गिरसो धिया। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानᳪं भुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोऽमृतम्मधु॥ ७३॥ सोममद्भ्यो व्यपिवच्छन्दसा हᳪंसः भुचिषत्। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानᳪं भुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोऽमृतम्मधु॥ ७४॥**

**मंत्रार्थः** (भुचिषत्) ब्रह्माग्नौ सीदतिसः (हंसः) आत्मा (अद्भ्यः) कमलान्तरिक्षेभ्यः (छन्दसा) महा वाचा (सोमम्) आत्मप्रति विंवं (व्यपिवत्) तस्मात्०–पूर्ववत्॥ ७४॥ चतुर्थो मंत्रः ओं अन्नादित्यस्याश्विसरस्वतीन्द्रा ऋषयोऽतिजगती छन्दः ग्रहा देवताः १ **मंत्रार्थः** (प्रजापतिः) आत्मा (परिस्रुतः) देह रूपात्। शरीरं सुराग्रहाः श० १२।७।३।१६ (अन्नात्) (रसम्) रस रूपं (सोमम्) आत्म प्रति विंवं (क्षत्रम्) प्राणं। प्राणो वै क्षत्रं श० १४।८।१४।४ (पयः) शीर्षन्प्राणं। प्राणः पयः शीर्षस्तत्प्राणं (ब्रह्मणा) महा वाचा (व्यपिवत्) विविच्य पीतवान्। तस्मात्० पूर्ववत्॥ ७५॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

पंचमो मंत्रः ओं रेत इत्यस्याश्विसरस्वतीन्द्रा ऋषयोऽतिशक्करी छन्दो ग्रहाः देवताः १

**मंत्रार्थः** (इन्द्रियं) इन्द्रियसमूहः (योनिम्) ब्रह्म (प्रविशत्) सत् (रेतः) आत्मप्रतिबिंबं। रेतो वै सोमः श० २।५।१।९ (मूत्रम्) लिंगशरीरं (विजहाति) तथा (जरायुणा) पराशक्त्या (आवृतः) (गर्भः) आत्मप्रतिबिंबः (जन्मना) मोक्षसम्बन्धिसंस्कारेण (उल्वम्) देहरूपं जरायु (जहाति) तस्मात्० पूर्ववत् ॥७६॥

**अन्नात्परिस्रुतो रसम्ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रम्पयः सोमम्प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोऽमृतम्मधु ॥७५॥ रेतो मूत्रं विजहाति योनिम्प्रविशदिन्द्रियम्। गर्भो जरायुणावृत उल्वञ्जहाति जन्मना। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोऽमृतम्मधु ॥७६॥ दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत्सत्यानृते प्रजापतिः। अश्रद्धामनृतेऽदधाच्छ्रद्धां सत्ये प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्प**

षष्ठो मंत्रः ओं दृष्ट्वेत्यस्याश्विसरस्वतीन्द्रा ऋषयोऽतिशक्करी छन्दो ग्रहा देवताः १ **मंत्रार्थः** – (प्रजापतिः) ब्रह्म। ब्रह्म वै प्रजापतिः १३।६।२।८ (सत्यानृते) (रूपे) परापरे प्रकृती (दृष्ट्वा) (व्याकरोत्) व्याकरणं पृथक्त्वं कृतवान्। (प्रजापतिः) ब्रह्म (अनृते) अपरायां (अश्रद्धां) (अदधात्) स्थापयत् (सत्ये) परायां (श्रद्धाम्) (अदधात्) तस्मात्० पूर्ववत् ॥७७॥ सप्तमो मंत्रः ओं वेदेनेत्यस्याश्विसरस्वतीन्द्रा ऋषयो महाबृहती छन्दो ग्रहा देवताः १



CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

**मंत्रार्थः** [1](प्रजा पतिः) आत्मा [2](सुता सुतौ) परापरे [3](रूपे) [4](वेदेन) ज्ञानेन [5](व्यपिवत्) तस्मात्० पूर्ववत् ॥ ७८॥

अष्टमो मंत्रः ओं दृष्ट्वेत्यस्याश्वि सरस्वतीन्द्रा ऋषयोऽति जगती छन्दो ग्रहा देवताः १ **मंत्रार्थः** – [1](प्रजा पतिः) ब्रह्म-[2](परिस्रुतः) देहस्य। शरीरं सुरा ग्रहाः श० १२।७।३।१६ [3](रसम्) भूतात्मानं [4](दृष्ट्वा) [5](शुक्रेण) सूर्य रूपेण। एषवै शुक्रोय एषत पति तस्य येरश्म यस्ते विश्वे देवाः श० ४।३।१।२६ [6](पयः) प्राणं [7](सोमं) अमृतं [8](शुक्रो) मानस सूर्य [9](व्यपिवत्) वियु

**योमृतम्मधुः ॥ ७७॥**

**वेदेन रूपे व्यपिवत्सुता सुतौ प्रजा पतिः। ऋतेन सत्य मिन्द्रियं विपानं शुक्र मन्धस इन्द्रस्येन्द्रिय मिदम्पयोमृतम्मधु ॥ ७८॥ दृष्ट्वा परि स्रुतो रस शुक्रेण शुक्रंव्यपिवत्पयः सोमम्प्रजा पतिः। ऋतेन सत्य मिन्द्रियंविपानं शुक्रम न्धस इन्द्रस्योन्द्रियमिदम्पयोमृतम्मधु ॥ ७९॥**

ज्यपीतवान् तस्मात्० पूर्ववत् — ॥ ७९॥ आर्षभैः खुरैः पशूनां वसां गृहीत्वा द्वात्रिंशत्संख्यान् सुरा ग्रहान् जुहोतित-स्यप्रथमो मंत्रः का० १९। ४। १२ ओं सीसेनेत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिर्जगती छन्दोऽश्वि सरस्वतीन्द्रा देवताः १

**मंत्रार्थः** – [1](आश्विना) अश्विनौ [2](सविता) [3](सरस्वती) [4](वरुणः) [5](मनीषिणः) मेधा विनः [6](कवयः) सर्वज्ञाः सर्वे [7](इन्द्रस्य) [8](रूपम्) [9](भिषज्यन्) भिषज्यन्तः। भिषज् रुग्जये कराड्वादित्वाद्यक् ततः शतृ प्रत्ययः वचन व्यत्ययः [10](यज्ञम्) सौत्रामणीं [11](वयन्ति) निष्पादयन्ति यथा [12](सीसेन) धातुविशेषेण [13](ऊर्णा सूत्रेण) [14](मनसा) च [15](तन्त्रम्) अङ्गद विशे

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

षं पटं वा वयन्ति॥ ८०॥ अथाध्यात्मम् – (अश्विना) नरनारायणौ (सविता) सूर्यः (सरस्वती) वाग धिष्ठात्री देवता (वरुणः) महानारायणः (मनीषिणः) मेधाविनः (कवयः) सर्वज्ञाः सर्वे (इन्द्रस्य) यजमानस्य। इन्द्रो वै यजमानः श० १। १। २। ११ (रूपम्) (भिषज्यन्) संसार रोग रहितं कुर्वन्तः (यज्ञम्) (वयन्ति) निष्पादयन्ति यथा (सीसेन) धातु विशेषेण (ऊर्णा सूत्रेण) (मनसा) च (तन्त्रम्) अङ्ग द विशेषं पटं वा वयन्ति॥ ८०॥

द्वितीयो मंत्रः- ॐ तदस्येत्यस्य प्रजा पति र्ऋषि र्जगती छन्दोऽश्विसरस्वतीन्द्रा देवताः १

सीसे॑न॒ तन्त्रं॒ मन॑सा मनी॒षिण॑ ऊर्णासू॒त्रेण॑ क॒वयो॑ वयन्ति। अ॒श्विना॑ य॒ज्ञꣳ स॑वि॒ता सर॑स्व॒तीन्द्र॑स्य रू॒पं वरु॑णो भि॒षज्य॑न्॥ ८०॥ तद॑स्य रू॒पम॒मृत॒ꣳ शची॑भिस्ति॒स्रो द॑धुर्दे॒वताः॑ सꣳर॒राणाः॑। लोमा॑नि॒ शष्पै॑र्ब॒हुधा॒ न तोक्म॑भि॒स्त्वग॑स्य मा॒ꣳसम॑भव॒न्न ला॒जाः॥ ८१॥

**मंत्रार्थः** (तिस्रः) (देवताः) अश्वि सरस्वत्यः (संरराणाः) सम्यक् रममाणाः सत्यः (अस्य) इंद्रस्य (तत्) (अमृतं) अमरणधर्मि (रूपम्) (शचीभिः) कर्मभिः (सन्दधुः) कर्माङ्गैः सन्धानं चक्रुः तदेवाह (अस्य) इन्द्रस्य (लोमानि) (शष्पैः) विरूढ व्रीहिभिः (न) च (त्वक्) (तोक्मभिः) विरूढ यवैः (बहुधा) आधिदैवाध्यात्म भेदाभ्यां सन्दधुः (न) च (मांसं) (लाजाः) (सम्भवन्) ॥ ८१॥ अथाध्यात्मम् (तिस्रः) (देवताः) वाग धिष्ठात्री नरनारायणाः (संरराणाः) सम्यक् रममाणाः सन्तः (अस्य) यजमानस्य (तत्) (अमृतम्) (रूपम्) (शचीभिः) महावाग्भिः निघं०



CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

[९](सन्दधुः) तदेवाह [१०](अस्य) यजमानस्य [११](लोमानि) रोमाणि [१२](शष्पैः) शष्परूपैः [१३](न) च [१४](त्वक्) [१५](तोक्मभिः) तोक्मरूपैः [१६](वऊधा) सन्दधुः [१७](न) च [१८](मांसं) [१९](लाजाः) [२०](समभवन्) ॥ ८१॥ तृतीयोमंत्रः ओंतदश्विनेत्यस्य विनियोगः पूर्ववत्-

**मंत्रार्थः** [१](गवाम्) [२](त्वचि) चर्मणि [३](दधतः) सुरांस्थापयन्तः [४](रुद्रवर्त्तनी) रुद्रवत् वर्तनिर्मार्गो ययोस्तौ- [५](भिषजा) भिषजौ वैद्यौ [६](अश्विना) अश्विनौ [७](सरस्वती) [८](अन्तरम्) [९](पेशः) इन्द्रस्य शरीरान्तर्वर्तिरूपं [१०](वयति) वयन्ति सम्बध्नन्ति वचनव्यत्ययः तदेवाह [११](अस्थि) [१२](मासरैः) शष्पादिचूर्णचरुभिः स्रावैः [१३](न) च [१४](मज्जानम्) [१५](कारोतरेण) गलन

**तदश्विना भिषजा रुद्रवर्त्तनी सरस्वती वयति पेशो अन्तरम्। अस्थि मज्जानं मासरैः कारोतरेण दधतो गवान्त्वचि॥ ८२॥ सरस्वती मनसा पेशलं वसु नासत्याभ्याम् वयति दर्शतं वपुः। रसम्परिस्रुता न रोहितन्नग्नहुर्द्धीरस्तसरन्न वेम॥ ८३॥**

वासस्रावयन्ति ॥ ८२॥ **अथाध्यात्मम्** [१](गवाम्) इन्द्रियाणां [२](त्वचि) गोलके [३](दधतः) अविद्यां स्थापयन्तः [४](रुद्रवर्त्तनी) प्राणमार्गे वर्त्तमानौ श० १४।६।९।५ [५](भिषजा) संसाररोगनाशकौ [६](अश्विना) नरनारायणौ [७](सरस्वती) महावागपि [८](अन्तरम्) [९](पेशः) यजमानस्य यत्ररूपं [१०](वयति) वयंति तदेवाह [११](अस्थि) [१२](मासरैः) मासररूपैः [१३](न) च [१४](मज्जानम्) [१५](कारोतरेण) कारोतररूपेण वयन्ति ॥ ८२॥ ओंसरस्वतीत्यस्य विनियोगः पूर्ववत्-

**मंत्रार्थः** [१](नासत्याभ्याम्) अश्विभ्यां सहिता [२](सरस्वती) [३](मनसा) विचार्य इन्द्रस्य [४](पेशलम्) पेश इति हिरण्य

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

रूपयोर्नाम पेश लाति गृह्णाति पेशलं हिरण्य वद्रूपवत् (वसु) धनं तथा (दर्शतं) दर्शनीयं (वपुः) रूपं (वयति) पटमिव स्रजति (न) च (रसम्) (परिस्रुता) सन्दधुः (रोहितम्) लोहितं (धीरः) मादकः (नग्नहुः) किएवः (सुरा कन्दः) (न) च (तसरं) सूत्रं (वेम) वापदण्डोऽभवत् ॥ ८३ ॥ **अथाध्यात्मम्**–(नासत्याभ्याम्) नास्त्य सत्यं ययोस्ताभ्यां नरनारायणाभ्यां सहिता (सरस्वती) वाग धिष्ठात्री देवी (मनसा) विचार्य यजमानस्य (पेशलम्) विष्णुसम्बन्धिनं (वसुः) योगैश्वर्यं तथा (दर्शतं) सूर्यतुल्यं (वपुः) रूपं (वयति) पटमिवस्रजति (न) च (रसम्) देहे वर्त्तमान मन्न रसं-

**पयसा शुक्रममृतञ्जनित्र थं सुरया मूत्राज्जनयन्त रेतः। अपामतिन्दुर्म्मतिम्बाधमाना ऊवध्यं वात थं सब्वन्त दारात् ॥ ८४ ॥ इन्द्रः सुत्रामा हृदयेन सत्यम्पुरोडाशेन सविता जजान ॥ यकृत्क्लोमानं वरुणो भिषज्यन्म तस्ने वायव्यैर्नमिनाति पित्तम् ॥ ८५ ॥**

(परिस्रुता) परिस्रुद्रूपेण सन्दधुः (रोहितम्) लोहितं (धीरः) मादकः (नग्नहुः) (न) च (तसरं) (वेम) अभवत् । ८३ ॥

ओंपयसेत्यस्य विनियोगः पूर्ववत्- **मंत्रार्थः** त्रयो देवाः (पयसा) दुग्धेन इन्द्रस्य (शुक्रम्) शुक्लं (अमृतम्) अमृत रूपं (जनित्रं) जनन शीलं (रेतः) वीर्यं (जनयन्त) उदपादयन् अड भाव आर्षः तथा (आरात्) समीपे (अमतिम्) अज्ञानं (दुर्मतिं) दुर्बुद्धिं (बाधमानाः) निवर्त्तयन्त स्त्रयो देवाः (तत्) (ऊवध्यं) आमाशय गतान्न सम्बन्धि (वातम्) (सुरया) तथा (सब्वम्) पक्वाशय गतं वातं (अप मूत्रात्) ऋजीषात् गतसार सोमाद् जनयन्त ॥ ८४ ॥



CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

**अथाध्यात्मम्** – त्रयोदेवाः (पयसा) प्राणेन पयः प्राणः १२।८।१।२० यजमानस्य (शुक्रम्) शुद्धं (अमृतम्) (जनित्रं) मोक्षजनकं (रेतः) योग बलं (जनयन्त) तथा (आरात्) समीपे (अमतिम्) अज्ञानं (दुर्मतिं) दुर्बुद्धिं (बाधमानाः) निवर्तयन्त स्त्रयो देवाः (तेन) (ऊवध्यं) (वातम्) (सुरया) सुरा रूपेण तथा (सप्पम्) (अपमूत्रात्) अपमूत्र रूपाद् कल्पयन् ॥ ८४॥ ओं इन्द्र इत्यस्य विनि योगः पूर्ववत्॰

**मंत्रार्थः** (सुत्रामा) श्रेष्ठ रक्षकः (इन्द्रः) महा नारायणः (हृदयेन) तथा (सविता) विराट् पुरुषः (पुरोडाशेन) मानस सूर्येण अन्नं वाः एत द्ब्राह्मणस्य यत्सोमः श॰१२।७।२।२ सोमो वैभ्राट् ३।२।४।९ इन्द्रस्य (सत्यम्)

आन्त्राणि स्थालीर्म्मधु पिन्वमाना गुदाः पात्राणि सुदुघा न धेनुः। श्येनस्य पत्रन्न प्लीहा शचीभिरा सन्दी नाभि रुदरन्न माता ॥ ८६॥

(जजान) (भिषज्यन्) इन्द्रस्य चिकित्सां कुर्वन् (वरुणः) (यकृत्) काल खण्डं (क्लोमानं) गलनाडिकां (मतस्ने) हृदयोभय पार्श्वस्थे अस्थिनी (न) च (पित्तं) (वायव्यैः) सौमि कौर्ध्व पात्रैः (मिनाति) निर्मिमीते स्रजति ॥ ८५॥ **अथाध्यात्मम्** (सुत्रामा) सुष्ठु रक्षकः (इन्द्रः) महा नारायणः (हृदयेन) तथा (सविता) सूर्यः (पुरोडाशेन) आत्मप्रति बिंबेन (सत्यम्) (जजान) (भिषज्यन्) यजमानस्य चिकित्सां कुर्वन् (वरुणः) ईश्वरः (यकृत्) (क्लोमानं) (मतस्ने) (न) च (पित्तं) (वायव्यैः) सौमि कौर्ध्व पात्र रूपैः (मिनाति) कल्पयति ८५

ओं आन्त्राणीत्यस्य विनियोगः पूर्ववत्॰ **मंत्रार्थः** – (मधु) (पिन्वमानाः) मधुसिञ्चन्त्यः (स्थालीः) स्थाल्यः

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

([4]आन्त्राणि) अभवन् ([5]सुदुघा) सुदोग्ध्री ([6]धेनुः) ([7]न) इव ([8]पात्राणि) ([9]गुदाः) माणाः। प्राणो वै गुदः श० ३।८।४।३
अभवन् ([10]न) च ([11]श्येनस्य) ([12]पत्रम्) ([13]प्लीहा) हृदय वाम भागस्थः सिथिल मांसपिण्डोऽभवत् ([14]न) च ([15]माता) अभिषेक स्थानभूता जननी स्थानीया ([16]आसन्दी) ([17]शचीभिः) कर्मभिः ([18]नाभिः) ([19]उदरं) चाभवत्॥ ८६॥

**अथाध्यात्मम्**–([1]मधु) ([2]पिन्वमानैः) ([3]स्थालीः) स्थाल्य ([4]आन्त्राणि) आन्त्ररूपाण्यभवन् ([5]सुदुघा) ([6]धेनुः) ([7]न) इव ([8]पात्राणि) ([9]गुदाः) प्राणा एवाभवन् ([10]न) च ([11]श्येनस्य) ([12]पत्रम्) ([13]प्लीहा) प्लीहैवाभवत् ([14]न) च ([15]माता) ([16]आसन्दी) ([17]शचीभिः) कर्म कारणैः ([18]नाभिः) नाभिरेव ([19]उदरं) उदरमेवचाभवत्॥ ८६॥

**कुम्भो॑ वनि॒ष्टुर्ज॑नि॒ता शची॑भि॒र्यस्मि॑न्न॒ग्रे योन्यां॒ गर्भो॑ऽअ॒न्तः। प्ला॒शिर्व्य॑क्तः श॒तधा॑र॒ऽउत्सो॑ दु॒हे न कु॒म्भी स्व॒धां पि॒तृभ्यः॑॥ ८७॥**

ॐ कुम्भ इत्यस्य विनियोगः पूर्ववत्। **मंत्रार्थः** ([1]जनिता) ([2]कुम्भः) सुराधान कुम्भः ([3]शचीभिः) कर्मभिः ([4]वनिष्टुः) स्थूलान्त्र मासीत् ([5]यस्मिन्) ([6]योन्याम्) कुम्भरूपे ([7]अन्तः) मध्ये ([8]अग्रे) प्रथमम् ([9]गर्भः) सुरारूपउषितः ([10]शतधारः) ([11]उत्सः) कूपतुल्यः कुम्भः ([12]व्यक्तः) स्पष्टः ([13]प्लाशिः) शिश्नोऽभवत् ([14]न) च ([15]कुम्भी) सुराधानी ([16]पितृभ्यः) ([17]सुधां) अन्नं ([18]दुहे) दुग्धे पूरयति लोपस्त आत्मनेपदेष्विति तलोपः॥ ८७॥

**अथाध्यात्मम्**– ([1]जनितः) जनकः ([2]कुम्भः) ([3]शचीभिः) योगयत्न कारणैः ([4]वनिष्टुः) स्थूलान्त्ररूपोऽभवत् ([5]यस्मिन्) ([6]योन्याम्) कुम्भरूपे ([7]अन्तः) मध्ये ([8]अग्रे) प्रथमं ([9]गर्भः) सुरा रूपउषितः स ([10]शतधारः) ([11]उत्सः) कूपतु



CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

ल्यः कुम्भः (व्यक्तः) स्पष्टः (श्राशिः) शिश्नरूपोऽभवत् (न) च (कुम्भी) सुराधानी देहः। शरीरं सुराग्रहाः श० १२।७।३।१६ पितृभ्यः) (सुधां) (दुहे) ॥ ८७॥ ओं मुखमित्यस्य विनियोगः पूर्ववत् १

**मंत्रार्थः** –(सत्) सतः पात्रविशेषः अन्त्यलोपश्छान्दसः (अस्य) इन्द्रस्य (मुखम्) अभूत् (सतेन) (इत्) पात्रेणैव-(शिरः) अभूत् (पवित्रं) (जिह्वा) अभूत् (अश्विना) अश्विनौ (सरस्वती) च (आसन्) आस्येऽभूवन् (न) च (चप्यम्) (पायुः) इन्द्रियमभूत् (वालः) सुरागलनवस्त्रं (अस्य) इन्द्रस्य (भिषग्) वैद्यः (वस्तिः) गुदं (न) च (हरसा) वीर्येण (तरस्वी) वेगवान् (शेपः) लिङ्गं चाभूत् वालेन त्रयं जातम् ॥ ८८॥

**मुखꣳ सदस्य शिर इत्सतेन जिह्वा पवित्रमश्विनासन्त्सरस्वती। चप्यन्न पायुर्भिषगस्य वालो वस्तिर्न शेपो हरसा तरस्वी ॥ ८८॥**

**अथाध्यात्मम्** –(सत्) सतः पात्रविशेषः (अस्य) यजमानस्य (मुखम्) मुखमेवाऽभवत् (सतेन) (इत्) सतरूपेणैव (शिरः) कल्पितोऽभूत् (पवित्रं) (जिह्वा) जिह्वैवाभवत् (अश्विना) नरनारायणौ (सरस्वती) महावागभिमानिनी देवी (आसन्) जप्यरूपेण मुखेऽभवन् (न) च (चप्यम्) (पायु) पायुरेवाभूत् (वालः) सुरागलनवस्त्रं (अस्य) यजमानस्य (भिषग्) वैद्यरूपः (वस्तिः) गुदं (न) तथा (हरसा) बलेन (तरस्वी) वेगवान (शेपः) लिंगमेवाभूताम्। अङ्गेष्वेव सर्वेषां कल्पना ॥ ८८॥ ओं अश्विभ्यामित्यस्य विनियोगः पूर्ववत् १

**मंत्रार्थः** (अश्विभ्याम्) अश्विदेवत्याभ्यां (ग्रहाभ्याम्) इन्द्रस्य (अमृतम्) अनश्वरं (चक्षुः) अभूत (ग्रहेण)

॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

पक्वेन (छागेन) छागरूपेण (हविषा) (तेजः) चक्षुः सम्बन्धि तेजोऽभवत् (गोधूमैः) (पक्ष्माणि) नेत्रावरकाधो लोमानि (कुवलैः) वदरैः (उतानि) नेत्रावरकोर्ध्व लोमानि चाभवन् येद्वे (भुक्ले) (न) च (असितम्) कृष्णां (पेशः) रूपं नेत्र गते रूपे (वसाते) आच्छादयाते ॥ ८९ ॥ **अथाध्यात्मम्** – (अश्विभ्याम्) नरनारायणदेवत्याभ्यां (ग्रहेभ्याम्) गृहरूपाभ्यां यजमानस्य (अमृतम्) (चक्षुः) कल्पिताभूत् (भृतेन) पक्वेन (छागेन) छागरूपेण (हविषा) हवीरूपेण (तेजः) चक्षुस्तेजः कल्पितमासीत् (गोधूमैः) गोधूमरूपैः (पक्ष्माणि) नेत्रावरकाधो लोमानि (कुवल्यैः) वदररूपैः (उतानि) नेत्रावरकोर्ध्व लोमानि कल्पितान्यभवन् येद्वे (भुक्ले) (न) च (असितम्) कृष्णां

**अश्विभ्याञ्चक्षुरमृतङ्ग्रहाभ्याञ्छागेनतेजोहविषाभृतेन । पक्ष्माणि गोधूमैः कुवलैरुतानि पेशोन भुक्लमसितं वसाते ॥ ८९ ॥ अविर्न मेषो नसि वीर्य्याय प्राणस्य पन्था अमृतो ग्रहाभ्याम् । सरस्वत्युपवाकैर्व्यानन्नस्यानि वर्हिर्वदरैर्ज्जजान ॥ ९० ॥**

(पेशः) रूपं नेत्र गते रूपे (वसाते) आच्छादयाते यथा श्रुतिः चक्षुषी एवास्याश्विनौ ग्रहौ १२ । ८ । ३ । ४ – ॥ ८९ ॥

ॐ अविर्नेत्यस्य विनियोगः पूर्ववत् १ **मंत्रार्थः** (अविः) (न) च (मेषः) (नसि) नासिकायां (वीर्याय) वलप्राप्तये कारणीभूताम् (ग्रहाभ्याम्) सारस्वताभ्याम् (प्राणस्य) (अमृतः) (पंथा) मार्गः प्राप्तोऽभूत (सरस्वती) (उपवाकैः) यवाङ्कुरैः (व्यानम्) (जजान) (वदरैः) सह (वर्हिः) (नस्यानि) नासिकाभवानि लोमानि । अभवत् ॥ ९० ॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

**अथाध्यात्मम्** (अविः) (न) च (मेषः) (नसि) नासिकायां छिद्र रूपौ (वीर्याय) प्राणायाम वलाय कल्पितौ (ग्रहाभ्याम्) सारस्वत ग्रह रूपाभ्यां (प्राणस्य) (अमृतः) (पन्था) मार्गः कल्पितः (सरस्वती) (उपवाकैः) यवाङ्कुर रूपैः (व्यानम्) (जजान) कल्पितवान् (वदरैः) सह (वर्हिः) वर्ही रूपाणि (नस्यानि) नासिक भवानि लोमानि। कल्पितानि यथा श्रुतिः नासिके ऽएवास्य सारस्वतौ ग्रहावथ यानि नासिकयो र्लोमानि तान्युपवाक सक्तवश्च वदर सक्तवश्च १२।८।३।५–९०

ओं इन्द्रस्येत्यस्य विनियोगः पूर्ववत्–१ **मंत्रार्थः** (वलाय) सामर्थ्याय (इन्द्रस्य) (रूपम्) (ऋषभः) चक्रे (कर्णाभ्याम्) श्रोत्र सम्बन्धिभ्यां (ग्रहाभ्याम्) (अमृतम्) भूत भविष्य द्वर्तमान शब्द ग्राहि (श्रोत्रम्) श्रोतेन्द्रिय

**इन्द्रस्य रूपमृषभो वलाय कर्णाभ्या श्रोत्रममृतङ्ग्रहाभ्याम्। यवा न वर्हि भ्रुवि केसराणि कर्कन्धुर्जज्ञे मधु सारघम्मुखात् ॥ ९१॥**

म भवत् (यवाः) (न) च (वर्हिः) (भ्रुवि) भ्रुवोः (केसराणि) लोमान्यभवन् (मुखात्) (कर्कन्धुः) वदरमेव (सारघम्) सरघा मधु मक्षिका तत्तुल्यं (मधु) लाला श्लेष्मादि (जज्ञे) ९१॥

**अथाध्यात्मम्**–(वलाय) योगवलाय (इन्द्रस्य) यजमानस्य। इन्द्रो वै यजमानः श० १।१।२।११ (रूपम्) (ऋषभः) ऋषभ रूपमभवत्। गावः पुरुषस्य रूपम् श० १२।८।३।४ (कर्णाभ्यां) ऐन्द्राभ्यां (ग्रहाभ्याम्) ऐन्द्र ग्रह रूपाभ्यां (अमृतम्) (श्रोत्रम्) कल्पितं (यवाः) (न) च (वर्हिः) तद्रूपे (भ्रुवि) (केसराणि) कल्पितानि (मुखात्) (कर्कन्धु) वदर रूपमेव (सारघम्) (मधु) (जज्ञे) यथा श्रुतिः श्रोत्रे ऽएवास्यैन्द्रौ ग्रहावथ यानि कर्णयोर्लोमानि यानि च भ्रुवोस्ता

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

नियवसक्तवश्च कर्कन्धुसक्तवश्च १२। ८।३।५ — ॥ ९१॥ ओं आत्मन्नित्यस्य विनियोगः पूर्ववत्- १

**मंत्रार्थः** (उपस्थे) (न) च (आत्मन्) आत्मनि देहस्याधोभागे (लोम) लोमानि। जातावेक स्वनं (वृकस्य) लोमभिरभवन् (न) च (मुखे) (श्मश्रूणि) (व्याघ्रलोम) व्याघ्रलोमभिरभवन् (न) च (शीर्षन्) शीर्षि। शिरसि (यशसे) यशोऽर्थाय (केशाः) (श्रियै) शोभायै या (शिखा) या (कान्तिः) यानिच (इन्द्रियाणि) तत्सर्वं (सिंहस्य) (लोम) लोमभिरभवत् ॥ ९२॥

**अथाध्यात्मम्** (उपस्थे) (न) च (आत्मन्) देहस्याधोभागे (लोम) लोमान्येव (वृकस्य) लोमानि कल्पतानि (न) च (मुखे) (श्मश्रूणि) (व्याघ्रलोम) व्याघ्रलोमानि कल्पितानि (न) च (शीर्षन्) शिरसि (यशसे) यशोऽर्थाय-

**आत्मन्नुपस्थेन वृकस्य लोम मुखे श्मश्रूणि न व्याघ्रलोम। केशा न शीर्षन्यशसे श्रियै शिखा सिंहस्य लोम त्विषिरिन्द्रियाणि ॥ ९२॥ अंगान्यात्मन्भिषजा तदश्विनात्मानमङ्गैः समधात्सरस्वती। इन्द्रस्य रूपं शतमानमायुश्चन्द्रेण ज्योतिरमृतन्दधानाः ॥ ९३॥**

(केशाः) तथा (श्रियै) शोभायै या (शिखा) या (कान्तिः) यानिच (इन्द्रियाणि) तत्सर्वं (सिंहस्य) (लोम) लोमानि कल्पितानि यथा श्रुतिः यान्युपस्थे लोमानि यानिचाधस्तात्तानि वृकलोमान्यथ यान्युरसि लोमानि यानिच निकक्षयोस्तानि व्याघ्रलोमानि केशाश्च श्मश्रूणि चासिंह लोमानि १२। ८।३।६ — ॥ ९२॥ ओं अङ्गानीत्यस्य विनियोगः पूर्ववत्- १ **मंत्रार्थः** - (इन्द्रस्य) (रूपम्) च (शतमानम्) शतसंख्यापरमितं (अमृतम्) अल्प



CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

रहितं [५](आयुः) [६](चन्द्रेण) आल्हादकेन [७](ज्योतिः) ज्योतिषा सह [८](दधानाः) सम्पादयन्तः [९](भिषजा) भिषजौ [१०](अश्विना) अश्विनौ च [११](सरस्वती) [१२](आत्मन्) आत्मनि [१३](अङ्गानि) च [१४](तत्) [१५](आत्मानम्) [१६](अङ्गैः) [१७](समधात्) संदधे ॥ ९३ ॥

**अथाध्यात्मम्** [१](इन्द्रस्य) यजमानस्य [२](रूपम्) मोक्षार्हं च [३](शतमानम्) शताब्द परिमितं [४](अमृतम्) अल्प रहितं [५](आयुः) [६](चन्द्रेण) वैष्णवानामाल्हादकेन [७](ज्योतिः) ज्योतिषा सह [८](दधानाः) सम्पादयन्तः [९](भिषजा) संसार रोगनाशकौ [१०](अश्विना) नरनारायणौ [११](सरस्वती) वागधिष्ठात्री देवी च [१२](आत्मने) आत्मनि [१३](अङ्गानि) च [१४](तत्) [१५](आत्मानम्) [१६](अङ्गैः) [१७](समदधात्) संदधे यथा श्रुतिः त्रेधा विहितो वा ऽ अयं पुरुष स्यात्मात्मानमेवास्यते स्पृणोति यद् वाङ्नाभेस्तदाश्वि

**सरस्वती योन्याङ्गर्भमन्तरश्विभ्याम्पत्नी सुकृतम्बिभर्त्ति। अपा थं रसेन वरुणो न साम्नेन्द्र थं श्रियै जनयन्नप्सु राजा॥ ९४॥ तेजः पशूना थं हविरिन्द्रियावत्परिस्रुता**

नेन यदूर्ध्वं नाभेरवाचीन थं शीर्ष्णस्तत्सारस्वतेनाशिर ऐन्द्रेण यथा रूपमेव यथा देवतमात्मानं मृत्योस्पृत्वा मृतं कुरुते स वा ऽ एष आत्मैव यत्सौत्रामणी १२।८।३।७। ११— ॥ ९३ ॥

ओं सरस्वतीत्यस्य विनियोगः पूर्ववत्—१ **अथ मंत्रार्थः** [१](अश्विभ्याम्) अश्विनोः नरनारायणयोः [२](पत्नी) [३](सरस्वती) महावाक्। वाक्सरस्वती श० १३।९।१।१३ [४](सुकृतं) शुभकर्माणं [५](गर्भम्) इन्द्रं यजमानं वा [६](योन्याम्) [७](अन्तः) योनिमध्ये [८](बिभर्त्ति) [९](न) च [१०](अप्सु) कमलान्तरिक्षेषु [११](राजा) देवानां रूपेण राजमानः [१२](वरुणः) परमेश्वरः [१३](अपाम्) ब्रह्मांशु रूपाणां [१४](रसेन) [१५](साम्ना) महावाचा [१६](इन्द्रम्) इन्द्रं यजमानं वा [१७](श्रियै) राजलक्ष्म्यै यांगैश्वर्या

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

यवा [१८](जनयन्) संस्कुर्वन् सन् विभर्त्ति ॥ ९४ ॥ ओं तेज इत्यस्य विनि योगः पूर्ववत्—१

**मंत्रार्थः** [१](भिषजा) भिषजाभ्यां संसार रोगस्य वैद्याभ्यां [२](अश्विभ्याम्) नरनारायणाभ्यां [३](सरस्वत्या) महावाचा च [४](इन्द्रियावत्) योग वीर्य वत् [५](सारघम्) मधु माक्षिका सम्बन्धि [६](मधु) मधुवत् [७](पशूनाम्) इन्द्रियाणां [८](तेजः) [९](हदिः) [१०]परिस्रुता) देहेन। शरीरं सुरा ग्रहाः श० १२।७।३।१६ [११](पयसा) प्राणेन। प्राणः पयः शीर्षस्त त्राणां श० ६।५।४।१५ [१२](दुग्धम्) स्रावितं तथा [१३](सुता सुताभ्यां) परिस्रुत्पयोभ्यां देह प्राणाभ्यां सकाशात् [१४](अमृतः) अमृत रूपः [१५](इन्दुः) ऐश्वर्यप्रदः [१६](सोमः) आत्म प्रति विंवः सोमो वै भ्राट् श० ३।२।४।९ दुग्धः ॥ ९५ ॥ ओं श्रीनरनारायणाभ्यां सरस्वत्यै देव्यै च नमो नमः-

**पयसा सारघम्मधु। अश्विभ्यान्दुग्धम्भिषजा सरस्वत्या सुतासुताभ्याममृतः सोमइन्दुः ॥ ९५ ॥ क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि। मात्वाहिंसीन्मामाहिंसीः १**

इतिश्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म कृते यजुर्वेदीय ब्रह्म भाष्ये सुरा दीन्द्राभिषेकान्तो नवदशोऽध्यायः १९ ॥ अथ विंशोऽध्यायः जानु प्रमाण पादां मुञ्ज रज्जु व्युता मासन्दी दक्षिणोत्तर वेद्यो र्मध्ये निदधाति तस्य मंत्रः का० १९।४।७ आसन्द्यां कृष्णाजिन मास्तृणाति का० १९।४।८ ओं क्षत्रस्येत्यस्य प्रजापति र्ऋषि र्द्विपदा विराड् गायत्री छन्द आसन्दी देवता १ ओं मात्वेत्यस्य प्रजापति र्ऋषिः प्राजापत्या गायत्री छन्दः कृष्णाजिनं देवतम् २

**मंत्रार्थः** – हे आसंदि त्वं [१](क्षत्रस्य) क्षतात्संसार रोगात्त्वात्मानं त्रायते तस्य यजमानस्य [२](योनिः) स्थानं [३](असि) [४](क्षत्रस्य) यजमानस्य [५](नाभिः) भोगायतन लोकस्योत्पत्ति स्थानं [६](असि) हे कृष्णाजिन् आसन्दी [७](त्वा) त्वां [८](मा) [९](हिंसीः) त्वं च



CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

(मा) मां (मा) (हिंसीः) ॥ १ ॥ **अथाध्यात्मम्** – हे मनः त्वं (क्षत्रस्य) जीवात्मनः (योनिः) स्थानं (असि) (क्षत्रस्य) जीवात्मनः (नाभिः) ब्रह्मप्राप्ति द्वारं (असि) हे हृदय मनः (त्वा) त्वां (मा) (हिंसीः) त्वंच (मा) मां यजमानं (मा) (हिंसीः) संसार वंधनेन ॥ १ ॥ यजमानः कृष्णाजिने उपविशति तस्य मंत्रः का० १९।४।९ आसान्द्या मुपविष्टस्य यजमानस्य पादयोर धो रुक्मौ मण्डलाकारौ भूषण विशेषौ न्यस्यति राजतं सव्ये मृत्योरिति मंत्रेण सौवर्णं दक्षे विद्योदिति सौवर्णं रुक्मं शिरसीत्येके तस्य मन्त्रौ का० १९।४।१०–११ ओंनिषसादेत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिरार्च्युष्णिक् छन्दो यजमानो देवता १

**निषसाद धृतव्रतो वरुणः पस्त्यास्वा। साम्राज्याय सुक्रतुः। मृत्योः पाहि विद्योत्पाहि ॥ २ ॥ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्याम् पूष्णो हस्ताभ्याम्। आश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि ३**

ओं २,३ मंत्रयोः प्रजापतिर्ऋषिर्दैवी बृहती छन्दो रुक्मौ देवते २,३ **मंत्रार्थः** प्रथमो व्याख्यातः हे रुक्मप्राणवा रुक्म एवेन्द्रः श० १०।४।१६ प्राण इन्द्रः श० ६।१।२।२८ (मृत्योः) अकालमरणान्मां (पाहि) रक्ष हे सौवर्ण मनो वा (विद्योत्) विद्युतः विद्युत्पातात्। क्विप्प्रत्यये गुणः (पाहि) रक्ष ॥ २ ॥

वेतसमात्रस्थापितैर्वसाग्रह शेषैः प्रतिदिशं स्थितोध्वर्युरामुखादवस्रावयन्नासन्दीस्थं सुरभिभिश्चंदन कर्पूर कस्तूरी केसरादिभिरुद्वर्तितं यजमानमभिषिञ्चति तस्य मंत्राः का० १९।४।१४ ओं देवस्येत्यस्याश्विनावृषी प्राजाप

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

त्या बृहती छन्दो लिङ्गोक्त देवता १ ओं सरस्वत्याश्विना वृष्यान्वी गायत्री छन्दो लिङ्गोक्त देवता २ ओं इन्द्रस्येत्यस्याश्विना वृष्यान्वी गायत्री छन्दो लिङ्गोक्त देवता ३ **मंत्रार्थः** – हे यजमान (सवितुः) (देवस्य) (प्रसवे) (आश्विनोः) (बाहुभ्याम्) (पूष्णः) (हस्ताभ्याम्) (आश्विनोः) (भैषज्येन) वैद्य कर्मणा (तेजसे) कान्त्यै (ब्रह्म वर्चसाय) (त्वा) त्वां (अभिषिञ्चामि) (सरस्वत्यै) सरस्वत्याः। षष्ठ्यर्थे चतुर्थी (भैषज्येन) भिषक्कर्मणा (वीर्याय) (अन्नाद्याय) अन्न भक्षण सामर्थ्याय (अभिषिञ्चामि) (इन्द्रस्य) (ऐन्द्रियेण) इन्द्रियसामर्थ्येन (बलाय) सामर्थ्याय (श्रिये) सर्वसमृद्ध्यै (यशसे) कीर्त्यै (अभिषिञ्चामि) ३

**अथाध्यात्मम्** हे यजमान (सवितुः) गुरोः (देवस्य) (प्रसवे) प्रेरणे सति (आश्विनोः) हृदय मनसोः (बाहुभ्याम्) (पूष्णः)

**कौसिकुतमोसिकस्मैत्वा कायत्वा। सुश्लोक सुमङ्गल सत्यराजन् ४**

मानस सूर्यस्य (हस्ताभ्याम्) (आश्विनोः) नरनारायण योः (भैषज्येन) वैद्य कर्मणा (तेजसे) (ब्रह्म वर्चसाय) (त्वा) त्वां (अभिषिञ्चामि) (सरस्वत्यै) महा वाचः (भैषज्येन) भिषक्कर्मणा (वीर्याय) योग बलाय (अन्नाद्याय) सर्वोपाधेः स्वात्म-निलय कारणाय (अभिषिञ्चामि) (इन्द्रस्य) महानारायणस्य (इन्द्रियेण) शक्त्या (बलाय) योग बलाय (श्रिये) योगलक्ष्म्यै (यशसे) कीर्त्यै (अभिषिञ्चामि) ॥ २३ ॥ अध्वर्युर्यजमानं स्पृशति का० १९। ४। १९ अध्वर्युणा स्पृष्टो यजमान आह्वयति का० १९। ४। २० ओं कोसीत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिरुषिग्गर्भा प्राजापत्या गायत्री छन्दो यजमानो देवता १ **मंत्रार्थः** – हे यजमान त्वं (कः) ब्रह्मा शिवो वातयो रंशः (असि) (कतमः) विष्णुः विष्णवंशः (असि) (कस्मै) ब्रह्मणे शिवाय वा (त्वा) त्वामभिषिक्त वान् (काय) विष्णवे (त्वा) त्वामभि षिक्त वान्। यजमानो कथयति हे (राजन्)



CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

राजमान [१०](सुश्लोक) सुकीर्त्ते [११](सुमंगल) [१२](सत्य) महानारायण ॥ ४॥ यजमानो यथालिङ्ग मङ्गान्या लभते तस्य प्रथमो मंत्रः १

ओं शिरोम इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्र शरीरा वया देवताः **मंत्रार्थः** यजमान आत्मानं सर्वात्मकं पश्यन्ना

ह [१](मे) मम [२](शिरः) [३](श्रीः) प्रभा रूपं ब्रह्म वर्चसो लाभात् [४](मुखम्) [५](यशः) वेदपाठात् [६](केशाः) [७](च) [८](श्मश्रूणि) [९](त्विषिः) दीप्तिः

हृदये ब्रह्माग्नेः प्रज्वलनात् [१०](मे) [११](राजा) दीप्यमानः [१२](प्राणः) [१३](अमृतम्) समाधि लाभात् [१४](चक्षुः) इन्द्रियं [१५](सम्राट्) सम्यक्

राजमानं दिव्य दृष्टि लाभात् [१६](श्रोत्रम्) इन्द्रियं [१७](विराट्) विविधं राजमानं दूर श्रवण शक्ते र्लाभात् ॥ ५॥

द्वितीयो मंत्रः ओं जिह्वाम इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्र श० देवता १

**शिरो मे श्री र्यशो मुखन्त्विषिः केशाश्च श्मश्रूणि। राजा मे प्राणो अमृतं सम्राट् चक्षुर्विराट् श्रोत्रम् ॥ ५॥ जिह्वा मे भद्रं वाङ्महो मनो मन्युः स्वराड् भामः। मोदाः प्रमोदा अङ्गुलीरङ्गानि मित्रम्मे सहः ॥ ६॥**

**मंत्रार्थः**– [१](मे) [२](जिह्वा) [३](भद्रम्) कल्या रूपा [४](वाक्) [५](महः) पूज्य माना वैदिक सिद्धान्त कथनात्। महतेरसुन् प्रत्ययः [६](मनः) [७](मन्युः) अहङ्कार रूपं अहं ब्रह्मास्मीत्युच्चारणात् [८](भामः) मानस सूर्यः [९](स्वराट्) स्वेनैव राजमानः समष्टि भाव लाभात् [१०](अङ्गुल्यः) [११](मोदाः) आनन्द रूपाः करन्यासात् [१२](अङ्गानि) [१३](प्रमोदाः) परमानन्द रूपाः अङ्गन्यासात् [१४](मे) [१५](मित्रम्) (म, अपरा प्रकृतिः (इ) परा प्रकृति स्तयो रक्षकं त्रानं [१६](सहः) संसारोपाधेर्नाशकं ॥ ६॥ तृतीयो मंत्रः ओं वाहूम इत्यस्य प्रजापति

र्ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्र शरीरा वया देवताः १

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

मंत्रार्थः - [१] (मे) [२] (वाहू) [३] (इन्द्रियम्) च [४] (वलम्) आधिदैवाध्यात्मवलरूपम् [५] (मे) [६] (हस्तौ) [७] (कर्मवीर्यम्) देवार्चनवलरूपौ [८] (मम) [९] (आत्मा) [१०] (उरो) तस्य स्थानं हृदयञ्च [११] (क्षत्रम्) क्षतात्संसारात्त्राण करं ॥ ७ ॥ ओं पृष्ठीरित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिर्निचृदनुष्टुप् छन्द इन्द्र शरीरावयवा देवताः [१] (पृष्ठीः) पृष्ठे मेरुदण्ड वाह्यस्था सुषुम्णा [२] (मे) [३] (राष्ट्रम्) वास स्थानं [४] (उदरम्) [५] (अंसौ) स्कन्धौ [६] (ग्रीवाः) कंठ देशाः [७] (श्रोणी) कटि देशौ [८] (उरू) सक्थिनी [९] (अरत्नी) हस्त देशौ [१०] (जानुनी) [११] (च) [१२] (सर्वतः) [१३] (अङ्गानि) [१४] (मे) [१५] (विशः) प्रजाः न कामस्य ॥ ८ ॥ ओं नाभिर्म इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिर्निचृज्जगती छन्द इन्द्र शरीरावयवा देवताः ॥

वाहू मे वलमिन्द्रियꣳ हस्तौ मे कर्म्म वीर्य्यम् । आत्मा क्षत्र मुरो मम ॥ ७ ॥
पृष्ठीर्म्मे राष्ट्र मुदर मꣳसौ ग्रीवाश्च श्रोणी । ऊरू अरत्नी जानुनी विशो मेऽङ्गानि सर्वतः ८
नाभिर्म्मे चित्तं विज्ञानम्पायुर्म्मेऽपचितिर्भसत् । आनन्दनन्दा वाण्डौ मे भगः सौभाग्यम्पसः जङ्घाभ्याम्पद्भ्यान्धर्म्मोऽस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः ९

[१] (मे) [२] (नाभिः) [३] (चित्तं) ज्ञान रूपं तस्मिन् लक्ष्मी नारायण यो र्ध्यानात् [४] (मे) [५] (पायुः) गुदेन्द्रियं [६] (विज्ञानम्) श्री गणेशस्य ध्यानात् [७] (भसत्) भगेन्द्रियं [८] (अपचितिः) ऋतु काला दृते मैथुन रहिता [९] (मे) [१०] (आण्डौ) वृषणौ [११] (आनन्दनन्दौ) ब्रह्मानंद नन्दौ [१२] (पसः) लिङ्गं । पसतेः स्पृशति कर्मा निघ० [१३] (भगः) योगैश्वर्यसम्पन्नं [१४] (सौभाग्यं) योग सम्पत्ति सम्पन्नञ्च [१५] (जङ्घाभ्याम्) [१६] (पद्भ्याम्) चाहं [१७] (धर्मः) धर्म रूपः [१८] (अस्मि) न विषयासक्तः [१९] (विशि) प्राणे । प्राणो मनुष्याः श० १४।४।३।१३ [२०] (प्रतिष्ठितः) अहं [२१] (राजा) राज मानोऽस्मि ॥ ९ ॥



CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

आसन्दी तो यजमानः कृष्णाजिने अव तरति तस्य मंत्रः का० १९।४।२३ ॐ प्रति क्षत्र इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः शक्करी छंदो विश्वेदेवा देवताः १ **मंत्रार्थः** – अहं [1](क्षत्रे) क्षत्रिय जातौ [2](प्रतितिष्ठामि) प्रतिष्ठा युक्तो भवामि [3](राष्ट्रे) देशे [4](प्रति) प्रतिष्ठामि वशी करोमि [5](अश्वेषु) [6](प्रति) [7](गोषु) [8](प्रति) [9](अङ्गेषु) [10](प्रति) नीरोगत्वाय [11](आत्मन्) आत्मनि चित्ते [12](प्रति) निराधित्वाय [13](प्राणेषु) [14](प्रति) [15](पुष्टे) धनसमृद्धौ [16](प्रतितिष्ठामि) [17](द्यावा पृथिव्योः) [18](प्रतितिष्ठामि) कीर्त्या [19](यज्ञे) [20](प्रतितिष्ठामि) धनलाभाय ॥ १० ॥ **अथाध्यात्मम्**- अहं (क्षत्रे) क्षताद्रक्षके मनसि [2](प्रतितिष्ठामि) [3](राष्ट्रे) ब्रह्म देशे हृदये [4](प्रति) प्रतितिष्ठा

**प्रति क्षत्रे प्रतितिष्ठामि राष्ट्रे प्रत्यश्वेषु प्रति तिष्ठामि गोषु। प्रत्यङ्गेषु प्रति तिष्ठाम्यात्मन्प्रति प्राणेषु प्रतितिष्ठामि पुष्टे प्रति द्यावा पृथिव्योः प्रतितिष्ठामि यज्ञे॥१०॥**

**त्रया देवा एकादश त्रयस्त्रि ꣳ शाः सुराधसः। बृहस्पतिपुरोहिता देवस्य सवितुः सवे। देवा देवैरवन्तु मा॥११॥**

मि [5](अश्वेषु) कर्मेन्द्रियेषु [6](प्रति) [7](गोषु) ज्ञानेन्द्रियेषु [8](प्रति) [9](अङ्गेषु) देहाङ्गेषु [10](प्रति) [11](आत्मन्) आत्मनि चित्ते [12](प्रति) [13](प्राणेषु) [14](प्रति) [15](पुष्टे) योगैश्वर्ये [16](प्रतितिष्ठामि) [17](द्यावा पृथिव्योः) ब्रह्मपुर शरीरे [18](प्रतितिष्ठामि) [19](यज्ञे) यज्ञ पुरुषे [20](प्रतितिष्ठामि) ॥ १० ॥ शस्त्रान्ते जुहोतितस्य प्रथमो मंत्रः का० १९।५।८ ॐ त्रया देवे त्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः स्वअवसाना पंक्तिश्छन्दो विश्वेदेवा देवताः १ **मंत्रार्थः** [1](सुराधसः) श्रेष्ठ धन वन्तः। राध इति धन नाम [2](बृहस्पति पुरोहिताः) ब्रह्म एव पुरोहित करो येषान्ते। ब्रह्म वै बृहस्पतिः श० ३।१।४।१५ [3](त्रयाः) त्रयो देवाः [4](एकादश देवाः) [5](त्रयस्त्रि ꣳ शाः)

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

(देवाः)[6] (सवितुः)[7] (देवस्य)[8] महानारायणस्य (सवे)[9] आज्ञायां वर्त्तमानाः सन्तः (देवैः)[10] अग्रमंत्र कथितैः सत्यादिभिः सह (मा)[11] मां (अवन्तु)[12] अत्र श्रुतिः। अष्टौ वसव एकादश रुद्रा द्वादशादित्यास्त्रऽएकत्रिंशादिन्द्रश्चैव प्रजापतिश्च १४।६।३—॥ ११॥ द्वितीयो मंत्रः ओं प्रथमेत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः प्रकृतिश्छन्दो विश्वेदेवा देवताः १

**मंत्रार्थः** पूर्वमंत्र कथिताः (प्रथमाः)[1] देवाः (द्वितीयैः)[2] देवैः (द्वितीयाः)[3] देवाः (तृतीयैः)[4] देवैः सह (तृतीयाः)[5] देवाः (सत्येन)[6] ब्रह्मणा (सत्यं)[7] ब्रह्म (यज्ञेन)[8] (यज्ञः)[9] (यजुर्भिः)[10] (यजूंषि)[11] (सामभिः)[12] (सामानि)[13] (ऋग्भिः)[14] (ऋचः)[15] (पुरोनुवाक्याभिः)[16] ऋग्भेदैः (पुरोनुवाक्याः)[17] (याज्याभिः)[18] ऋग्विशेषैः (यज्याः)[19] (वषट्कारैः)[20] हविस्त्यागैः (वषट्काराः)[21] (आहुतिभिः)[22] (आहुतयः)[23] (मे)[24] (कामान्)[25] (समर्द्धयन्तु)[26] पूरयन्तु (भूः)[27] ते ब्रह्म प्रादुर्भावास्तेभ्यः (स्वाहा)[28] यथा भगवद्वाक्यं ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणाहुतम् ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्म कर्म समाधिना ॥ १२॥

प्र॒थ॒मा द्वि॒तीयै॑र्द्वि॒तीया॑स्तृ॒तीयै॑स्तृ॒तीयाः॑ स॒त्येन॑ स॒त्यं य॒ज्ञेन॑ य॒ज्ञो यजु॑र्भि॒र्यजूं॑षि॒ सामा॑भि॒स्सामा॑न्यृ॒ग्भिर्ऋ॒चः पु॑रोऽनु॒वा॒क्याभिः॑ पुरोनु॒वा॒क्या या॒ज्या॒भि॒र्या॒ज्या व॑षट्का॒रैर्व॑षट्का॒रा आहु॑ति॒भि॒राहु॑तयो मे॒ कामा॒न्त्सम॑र्द्धयन्तु॒ भूः स्वाहा॑ ॥ १२॥ लोमा॑नि॒ प्रय॑ति॒र्मम॒ त्वङ्म॒ आन॑ति॒राग॑तिः। मा॒ꣳस॑म्म॒ उप॑न॒ति॒र्वस्व॒स्थि म॒ज्जा म॒ आन॑तिः॥ १३॥

यजमानो ग्रहशेषं प्रत्यक्षमुपहूव पूर्वकं भक्षयति तस्य मंत्रः का० १९।५।१० ओं लोमानीत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप् छन्दो लिङ्गोक्त देवताः १

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

**मंत्रार्थः** (प्रयतिः) यस्योदये प्रयत्नो भवति तत्त्रानं (मम) (लोमानि) तथा (आनतिः) भूतानांनमनं यस्मिन् तद्यशः (आगतिः) आनंदस्य प्राप्तिर्यस्मिन्त द्वीर्यञ्च (मे) (त्वक्) तथा (उपनतिः) समीपे भूतानांनमनं यस्मिन्त दैश्वर्यं (मे) (मांसं) तथा (वसु) पूर्णसम्पत्तिर्मे (अस्थि) तथा (आनतिः) आसमन्तान्नमनं यस्मिन्त द्वैराग्यं (मे) (मज्जा) षडैश्वर्यरूपोस्मीत्यर्थः यथा श्रुतिः एषलोकांश्च देवतांश्चविशति यः सौत्रामण्याभिषिच्यते तदेतद्वान्तरात्मानमुपह्वयते तथा कृत्स्नएवसर्वतनूः साङ्गः सम्भवति ॥ १२।८।३।३१– ॥ १३ ॥ इतउत्तरमवभृथः सार्धकंडिकाचतुष्कात्मकेनमंत्रेणमासर

**यद्देवा देवहेडनन्देवासश्चकृमा वयम्। अग्निर्मातस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳहसः ॥ १४ ॥ यदिदिवायदिनक्तमेनाꣳसिचकृमा वयम्। वायुर्म्मातस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳहसः ॥ १५ ॥ यदिजाग्रद्यदिस्वप्न एनाꣳसिचकृमा वयम्। सूर्य्योमातस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳहसः १६**

कुम्भंजलेतारयंति तस्य प्रथमो मंत्रः का० १९।५।१३ ॐ यद्देवा इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप् छन्दोऽग्निर्देवता १

**मंत्रार्थः** हे (देवाः) नानाव्रतादिक्रीडनशीलाः (देवासः) ब्रह्मपरा महानारायणाः (वयम्) (यत्) (देवहेडनं) देवानामपराधं (आचकृम) कृतवन्तः। करोतेर्लिट् (अग्निः) (तस्मात्) (एनसः) पापात् (विश्वात्) (अꣳहसः) विघ्नात् (मां) मां (मुञ्चतु) ॥ १४ ॥ द्वितीयो मंत्रः ॐ यदीत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप् छन्दो वायुर्देवता १

**मंत्रार्थः** (ई) हे देवि (वयम्) (दिवा) अहनि (नक्तं) रात्रौ (यत्) (यत्) (एनाꣳसि) पापानि (आचकृम) (वायुः)

(तस्मात्)(एनसः)(विश्वात्) सर्वस्मात् (अंहसः) (मा) मां (मुञ्चतु)॥ १५॥

तृतीयो मंत्रः ओं यदीत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता १ **मंत्रार्थः** (ई) हे देवि (वयम्) (जाग्रत्) जाग्रति मनुष्येषु (स्वप्ने) पितृषु यथा श्रुतिः मनुष्या वै जागरितं पितरः सुप्तं १२।९।२।२ (यत्) (यत्) (एनांसि) (आचकृम) (सूर्यः) (तस्मात्) (एनसः)(विश्वात्)(अंहसः)(मा) मां (मुञ्चतु)॥ १६॥ चतुर्थो मंत्रः ओंयद्ग्रामइत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिर्निचृदनुष्टुप् छन्दो लिङ्गोक्त देवता १ **मंत्रार्थः** हे (यत्) (य) वायुः (अ) अग्निः (त) सूर्यः हे वाय्वग्निसूर्यरूप महानारायण (वयम्)

**यद्ग्रामे यदरण्ये यत्सभायां यदिन्द्रिये। यच्छूद्रे यदर्ये यदेनश्चकृमा वयं यदेकस्याधि धर्म्मणि तस्यावयजनमसि॥ १७॥ यदापो अघ्न्या इति वरुणेति शपामहे ततो वरुण नो मुञ्च। अवभृथ निचुम्पुण निचेरुरसि निचुम्पुणः अव देवैर्देवकृतमेनोऽयक्ष्यव मर्त्यैर्मर्त्यकृतम्पुरुराव्णो देवरिषस्पाहि॥ १८॥**

(यत्)(एनः) पापं (ग्रामे) (यत्) (अरण्ये) (यत्) (सभायाम्) (यत्) (इन्द्रिये) इन्द्रियसमूहे (यत्) (शूद्रे) दासवर्गे (यत्) (अर्ये) स्वामिनि (यत्) (एकस्य) ब्रह्मणः (अधिधर्मणि) भक्तियोगादिधर्मविषये (आचकृम) (तस्य) सर्वस्य पापस्य त्वं (अवयजनम्) नाशनं नाशकारणं। अव पूर्वो यजिर्नाशनार्थः (असि)॥ १७॥

यदापः (व्याख्यातम् (६, २२) अर्द्धमंत्रेण सुराकुम्भस्य जले मज्जनम् का० १९।५।१४ अवभृथेति। व्याख्यातम् (३, ४८, ८, २५) इयान्विशेषः (अवायक्षि) नाशितवानस्मि। यजेर्लुङि तङि उत्तमैकवचने रूपम्॥ १८॥



CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

यजमानोऽवभृथप्रदेशाद्द्वौ विक्रमौ उदीच्यां गत्वा जलाञ्जलिमादाय यस्यां दिशि रिपुस्तां प्रति सिञ्चति का० १९।५।१५ (व्याख्यातम्) (६,२२) ॥ १९॥ जलस्था वेवजायापती सौमिकावभृथवत्स्नात्वा कर्मकाले धृतं वासोऽप्सु-क्षिपतस्तस्य मंत्रः का० १९।५।१६ ॐ द्रुपदादित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप् छन्द आपो देवता १

**मंत्रार्थः** –[1](आपः) जलानि यद्वा ब्रह्माम्बुरूपा पः [2](मा) मां [3](एनसः) पापात् [4](शुन्धन्तु) पुनन्तु पापात्पृथक् कुर्वन्तु [5](इव) यथा [6](द्रुपदात्) द्रुतरुः तन्मयं पदं द्रुपदं पादुका तस्मात् [7](मुमुचानः) पृथग्भवन् मुचेर्विकरण व्यत्ययेन शान-

**समुद्रेते हृदयमप्स्वन्तः सन्त्वा विशन्त्वोषधीरुतापः । सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु दुर्म्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यञ्च वयन्द्विष्मः । १९।**

**द्रुपदादिवमुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव । पूतम्पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः २०॥**

चिजुहोत्यादित्वाद्द्वित्वे मुमुचान इति रूपम् [8](इव) यथा वा [9](स्विन्नः) स्वेदयुक्तः पुरुषः [10](स्नातः) सन् [11](मलात्) [12](वा) यथा वा [13](पवित्रेण) कम्बलमयेन [14](पूतं) गालितं [15](आज्यं) शुद्धं भवति ॥ २०॥

सोमवज्जलान्निष्क्रमण मागमनञ्चतस्य मंत्रः का० १९।५।१७ ॐ उद्वयमित्यस्य प्रस्कण्वऋषिरनुष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता १ **मंत्रार्थः** –[1](तमसः) मायान्धकाराद्वा पापाद्वा। पाप्मा वै तमः श० १२।९।२।८ [2](परि) [3](उत्तमम्) उत्कृष्टतरं [4](स्वः) महानारायणलोकं [5](पश्यन्तः) सन्तः [6](वयम्) [7](देवत्रा) तस्मिन्लोके [8](देवम्) नानावतारैः क्रीडनशीलं

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

(ज्योतिः) ज्योतिः स्वरूपं (उत्तमम्) (सूर्यम्) महा नारायणं (उदगन्म) प्राप्ताः ॥ २१ ॥

यजमान आहवनीय मुपतिष्ठते का० १९।५।१८ ओं अप इत्यस्य प्रजापति र्ऋषिः पंक्ति श्छन्दो ऽग्नि र्देवता १

हे (अग्ने) (अद्य) (अपः) जलं (अन्वचारिषम्) अवभृथ कर्मणा प्राप्तो ऽस्मि। चरते र्लुङ् (रसेन) (समसृक्ष्महि) संसृष्टो ऽस्मि। सृजे र्लुङ् वचन व्यत्ययः (पयस्वान्) उदक वान्सन् (आगमम्) आगत वानस्मि। गमे र्लुङि पुषादीति च्लेरङ् (तम्) (मा) मां (वर्चसा) ब्रह्म वर्चसेन (च) (प्रजया) पुत्रादिकया (च) (धनेन) सुवर्णादिकेन (संसृज) त्वं संयोजय ॥ २२

अथाध्यात्मम् – हे (अग्ने) ब्रह्माग्ने (अद्य) (अपः) ब्रह्मांभु रूपापः (अन्वचारिषम्) (रसेन) (समसृक्ष्महि)

**उद्वयन्तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवन्देवत्रा सूर्य्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् २१**
**अपो अद्यान्वचारिषꣳ रसेन सम सृक्ष्महि। पयस्वानग्न आगमन्तम्मा सꣳसृज वर्च्चसा प्रजया च धनेन च २२**

(पयस्वान्) अमृत वान्सन्। अमृतं वा ऽआपः श० ४।४।३।१५ (आगमम्) (तम्) (मा) मां (वर्चसा) ब्रह्म वर्चसेन (च) (प्रजया) प्राणेन। प्राणः प्रजा श० १४।४।३।१४ (च) (धनेन) योग धनेन (संसृज) संयोजय ॥ २२ ॥

यजमानः समिधं गृहीत्वा ऽग्नौ दधाति तस्य मंत्रः का० १९।५।१९ यजमानः सकृद् गृहीत माज्यं कण्डिका शेषेण जुहोति तस्य मंत्रः का० १९।५।२० ओं एधो ऽसीत्यस्य प्रजापति र्ऋषिः प्राजापत्या बृहती छन्दः समि द्देवता १

ओं समावर्त्तीत्यस्य प्रजापति र्ऋषि र्ब्राह्म्युष्णिक् छन्दो ऽग्नि र्देवता २



CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

**मंत्रार्थः** हे समित् यद्वा हे प्राण त्वं । प्राणा वै समिधः श० १।५।४।१ (एधः) दीपिका (असि) (एधिषीमहि) वयं त्वत्प्रसादाद्वृद्धिं प्राप्नुयाम । एधने राशी र्लिङ् तथा (समित्) दीपयति सा (असि) (तेजः) (असि) (मयि) (तेजः) (धेहि) धारय (पृथिवी) (समावर्त्ति) ब्रह्मणि लयं प्राप्नोति । विकरण व्यत्ययेन वृत्तेः शपः श्लुः (उषाः) दिवसोऽपि (सम्) समावर्त्ति (सूर्यः) (उ) अपि (सम्) समावर्त्ति (इदम्) (विश्वम्) सर्वं (जगत्) (उ) अपि (सम्) समावर्त्ति तस्मादहं (वैश्वानरज्योतिः) विश्वेभ्यो नरेभ्यो हितो वैश्वानरः परमात्मा तद्रूपं ज्योतिर्ब्रह्मैव (भूयासं) (विभून्) महतः (कामान्) षडैश्वर्यं (व्यश्नवै) प्राप्नुयाम् (भूः) भुवनं भूः सत्तामात्रं ब्रह्म तस्मै (स्वाहा) सुहुतमस्तु ॥ २३ ॥

**एधोऽस्येधिषीमहि समिदसि तेजोऽसि तेजो मयि धेहि । समाववर्त्ति पृथिवी समुषाः समु सूर्य्यः । समु विश्वमिदं जगत् । वैश्वानरज्योतिर्भूयासं विभून् कामान्व्यश्नवै भूः स्वाहा ॥ २३ ॥ अभ्यादधामि समिधमग्ने व्रतपते त्वयि । व्रतञ्च श्रद्धाञ्चोपैमीन्धे त्वा दीक्षितोऽअहम् ॥ २४ ॥**

यजमान आहवनीये तिस्रः समिधोऽभ्यादधाति तस्य प्रथमो मंत्रः का० १९।५।२१ ओं अभ्यादधामीत्यस्याश्वतराश्विऋषिर्निचृदनुष्टुप् छन्दोऽग्निर्देवता १ **मंत्रार्थः** हे (व्रतपते) व्रतस्य पालक (अग्ने) अग्ने आत्माग्ने वा (समिधं) समिधं प्राणं वा (त्वयि) (अभ्यादधामि) तथा (दीक्षितः) सन् (अहम्) (व्रतम्) कर्म (च) (श्रद्धाम्) (उपैमि) उपगच्छामि (च) (त्वा) त्वां (इन्धे) दीपयामि ॥ २४ ॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

द्वितीयो मंत्रः ओं यत्रेत्यस्याप्रवतराम्वि ऋषिरनुष्टुप् छन्दोऽग्निर्देवता १ **मंत्रार्थः** (यत्र) (ब्रह्म) ब्राह्मण जातिः (च) (क्षत्रं) क्षत्रियजातिः (च) अपि (सह) (सम्यञ्चौ) संगतौ (चरतः) तिष्ठतः (यत्र) (देवाः) (अग्निना) (सह) वर्तन्ते (तम्) (पुण्यम्) पवित्रं (लोकम्) देवलोकं (प्रज्ञेषं) जानीयाम् ॥ २५ ॥

**अथाध्यात्मम्** (यत्र) भ्रकुटि कमले (ब्रह्म) मनः। मनो वै ब्रह्म श० १४।६।१०।१४ (च) (क्षत्रं) प्राणाः। प्राणो वै क्षत्रं श० १४।८।१४।४ (च) अपि (सह) (सम्यञ्चौ) संगतौ (चरतः) तिष्ठतः (यत्र) (देवाः) विद्वांसः। विद्वांसो हि देवाः श० ३।७।३।१० (अग्निना) ब्रह्माग्निना (सह) वर्तन्ते (तम्) (पुण्यम्) पवित्रं (लोकम्) भ्रकुटिचक्रं (प्रज्ञेषं) जानीयाम् ॥ २५ ॥

**यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह। तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना ॥ २५ ॥ यत्रेन्द्रश्च वायुश्च सम्यञ्चौ चरतः सह। तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र सेदिर्न विद्यते। २६।**

तृतीयो मंत्रः ओं यत्रेन्द्र इत्यस्याप्रवतराम्वि ऋषिर्निचृदनुष्टुप् छन्दोऽग्निर्देवता १

**मंत्रार्थः** (यत्र) (इन्द्रः) (च) (वायुः) (च) अपि (सह) (सम्यञ्चौ) संगतौ (चरतः) तिष्ठतः (यत्र) यस्मिन् लोके (सेदिः) दुःखं (न) (विद्यते) (तम्) (पुण्यम्) (लोकम्) देवलोकं (प्रज्ञेषं) जानीयाम् ॥ २६ ॥

**अथाध्यात्मम्** (यत्र) यस्मिन् भ्रकुटि कमले (इन्द्रः) यजमानः। इन्द्रो वै यजमानः श० २।१।२।११ (च) (वायुः) प्राणाः (च) अपि (सह) सम्यञ्चौ सङ्गतौ (चरतः) तिष्ठतः (यत्र) (सेदिः) दुःखं (न) विद्यते (तम्) (पुण्यम्)



CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

(लोकम्)[१३] (मत्तेषं)[१४] जानीयाम। जानतेः सिब्वद्धलं लेटीति सिपीटिच रूपम्॥२६॥

ओं अंमु नेत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सुरा देवता१ **मंत्रार्थः** हे सुरे (ते)[१] तव (अंमुः)[२] भागः (अंमुना)[३] सोमभागेन (परूः)[४] तव पर्व (परूषा)[५] सोमस्य पर्वणा सह (एन्च्यताम्)[६] संयुज्यताम् (तव)[७] (गन्धः)[८] (अच्युतः)[९] अनश्वरः (रसः)[१०] च (मदाय)[११] (सोमम्)[१२] (अवतु)[१३] आलिङ्गतु॥२७॥ **अथाध्यात्मम्** हे शरीर (ते)[१] तव (अंमुः)[२] आत्मसम्बन्धि तेजः (अंमुना)[३] आत्मप्रतिबिंबस्य तेजसा (परूः)[४] तव भागः (परूषा)[५] आत्मप्रतिबिंबस्य भागेन (एन्च्यताम्)[६] (तव)[७] (गन्धः)[८] इन्द्रियाणां धारक इन्द्रिय शक्ति समूहः (अच्युतः)[९] (रसः)[१०] रागः (मदाय)[११] अहं ब्रह्मास्मीति मदाय (सोमम्)[१२]

**अ॒ꣳशुना॑ ते अ॒ꣳशुः पृ॑च्यता॒म्परु॑षा॒ परुः॑। ग॒न्धस्ते॒ सोम॑मवतु॒ मदा॑य॒ रसो॒ऽअच्यु॑तः॥२७॥ सि॒ञ्च॑न्ति॒ परि॑ षिञ्च॒न्त्युत्सि॑ञ्चन्ति पुन॑न्ति च। सुरा॑यै ब॒भ्र्वै मदे॑ कि॒न्त्वो व॑दति कि॒न्त्वः॥२८**

आत्मप्रतिबिंबं (अवतु)[१३] आलिङ्गतु॥२७॥ ओं सिञ्चन्तीत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप् छन्दः सुरा देवता१ **मंत्रार्थः** यस्मात् (त्वः)[१] एकः पुरुषः (बभ्र्वै)[२] बभ्रुवर्णायै (सुरायै)[३] (किम्)[४] कुत्सितं वचनं (वदति)[५] (त्वः)[६] एकः पुरुषः (मदे)[७] (किम्)[८] कुत्सितं वदति तस्मात्तां सुरां पात्रे (सिञ्चन्ति)[९] तथा पयआदिभिः (परिषिञ्चन्ति)[१०] तथा ग्रहैः (उत्सिञ्चन्ति)[११] (च)[१२] गोवालहिरण्यादिभिः (पुनन्ति)[१३] सोमरूपं कुर्वन्ति॥२८॥

**अथाध्यात्मम्** (यस्मात् (त्वः)[१] एको विद्वान् (बभ्र्वै)[२] पिङ्गलवर्णायै (सुरायै)[३] देहाभिमानाय। तमः सुरा श०

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

५।१।५।२८ (किम्) कुत्सितं (वदति) (त्वः) एको देहाभिमानी (मदे) विषयमदे सति (किम्) कुत्सितं वदति तस्मात् देहस्थं भूतात्मनं योग पात्रे (सिञ्चन्ति) पुनः प्राणादिभिः (परिषिञ्चन्ति) पुन इन्द्रिय शक्तिभिः उत्सिञ्चन्ति (च) (पुनन्ति) शुद्धं कुर्वन्ति ॥ २८ ॥ ओं धानावन्तमित्यस्य विश्वामित्र ऋषि र्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता १

**मंत्रार्थः** हे (इन्द्र) (प्रातः) प्रातः काले (नः) अस्माकं (धानावन्तं) धाना विद्यन्ते यत्रतं (करम्भिणं) करम्भवन्तं अपूपवन्तं (उक्थिनं) शस्त्र वन्तं स्तुति युक्तं पुरोडाशं (जुषस्व) ॥ २९ ॥

**अथाध्यात्मम्** हे (इन्द्र) परमेश्वर। इदऐश्वर्ये (प्रातः) मोक्ष काले (नः) अस्माकं (धानावन्तं) अहोरात्र म-

धानावन्तङ्करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनम्। इन्द्र प्रातर्ज्जुषस्वनः ॥ २९ ॥
बृहदिन्द्राय गायत मरुतो वृत्रहन्तमम्। येन ज्योतिरजनयन्नृतावृधो देवन्देवाय जागृवि ॥ ३० ॥

ध्ये वर्त्तमानं। अहोरात्राणां वा एतद्रूपं यद्धानाः श० १३।२।१।४ (करम्भिणं) (क) घ्राणेन्द्रियं (अ) चक्षुः (र) वाक् (अ) त्वक् (म) मेधा (भ) श्रोत्रेन्द्रियं तद्वन्तं (अपूपवन्तं) (अ) निवृत्तिः (प) प्रीतिर्भक्तिः (ऊ) शान्तिः (प) मनस्तद्वन्तं (उक्थिनं) प्राणवन्तमात्मानं। प्राणो वा उक्थं प्राणो हीदं सर्व मुत्थापयति श० १४।८।१४।१ (जुषस्व) २९ अध्वर्यु प्रेषितो ब्रह्मा इन्द्रदेवतायां बृहत्यां साम गायतितस्य मंत्रः का० १९।५।२ ओं बृहदिन्द्रायेत्यस्य नृमेधपुरुषमेधा वृषी बृहती छन्द इन्द्रो देवता १



CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

**मंत्रार्थः** हे (मरुतः) ऋत्विजो वागाद्यृत्विजो वा (इन्द्राय) परमेश्वराय (वृत्र हन्तमम्) अतिशयेन पापनाशकं (बृहत्साम) (गायत) (ऋतावृधः) यज्ञ वृद्धि करा ऋत्विजः (येन) (देवाय) यजमानाय (देवम्) नाना व्रतादैः क्रीडन शीलं (जागृवि) जागरण शीलं (ज्योतिः) ज्योतिः स्वरूपं महानारायणं (अजनयन्) उदपादयन् ॥ ३० ॥

ब्रह्मापयोऽनुमंत्रयते का० १९।२।११ ॐ अध्वर्यवित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता १

**मंत्रार्थः** हे (अध्वर्यो) त्वं (अद्रिभिः) ग्रावभिः (सुतम्) अभिषुतं (सोमं) (पवित्रे) कम्बलमये (आनय) सिञ्च (इन्द्राय) (पातवे) इन्द्रस्य पानार्थं । तुमर्थे तवे प्रत्ययः (पुनाहि) पुनीहि गालय । ईत्वाभाव आर्षः ॥ ३१ ॥

**अध्वर्य्योऽअद्रिभिः सुतꣳ सोमम्पवित्रऽआनय । पुनाहीन्द्राय पातवे ॥ ३१ ॥**
**यो भूतानामधिपतिर्य्यस्मिँल्लोका अधि श्रिताः । यऽईशे महतो महांस्तेन गृह्णामि त्वामहम्मयि गृह्णामि त्वामहम् ॥ ३२ ॥**

**अथाध्यात्मम्** — हे ज्ञानचक्षुः । चक्षुर्वै यज्ञस्याध्वर्युः श० १४।६।१।६ (अद्रिभिः) प्राणैः । प्राणा वै ग्रावाणः श० १४।२।२।३३ (सुतम्) अभिषुतं (सोमम्) आत्म प्रति बिंबं । सोमो वै भ्राट् श० ३।२।४।९ (पवित्रे) प्राणे । पवित्रं वै प्राणो दानौ श० १।१।३।१ (आनय) सिञ्च (इन्द्राय) (पातवे) महानारायण पानार्थं (पुनाहि) ॥ ३१ ॥

त्रयस्त्रिंशं वसाग्रहं गृह्णाति का० १९।४।२४ ॐ यो भूतानामित्यस्य कौण्डिन्य ऋषिः पंक्तिश्छन्दो ग्रहो देवता १

**मंत्रार्थः** — आत्मा कथयति (यः) महानारायणः (भूतानाम्) (अधिपतिः) (यस्मिन्) (लोकाः) (अधिश्रिताः)

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

आश्रिताः यदा धाराः [7](महान्) सर्वोत्कृष्टः [8](यः) महानारायणः [9](महतः) ब्रह्मविष्णु महेशादिरूपस्य साकारस्य ब्रह्मणः [10](ईशे) नियन्ता वर्तते। लोपस्त आत्मनेपदेष्विति तलोपे लटि तङि प्रथमैकवचने ईशे इति रूपम् अधीगर्थ दयेशामिति कर्मणि षष्ठी हे ग्रह आत्मप्रतिविंब वा [11](अहम्) आत्मा [12](तेन) महानारायणेन कृत्वा [13](त्वा) त्वां [14](गृह्णामि) [15](मयि) परमात्मभावमापन्नेम यिविषये [16](अहम्) [17](त्वा) [18](गृह्णामि) ॥ ३२॥ व्याख्याता (१९,२३)—॥३३॥

सशस्त्र ग्रह होमानन्तरं शेषमृत्विजः सर्वे वजि घ्नन्ति तस्य प्रथमो मंत्रः का० १९।५।१९ ओंप्राणपाम इत्यस्य प्रजापति

**उपयामगृहीतोस्यश्विभ्यान्त्वा सरस्वत्यैत्वेन्द्रायत्वा सुत्राम्णा एषते योनिरश्विभ्यान्त्वा सरस्वत्यै त्वेन्द्रायत्वा सुत्राम्णे ॥ ३३॥ प्राणपामेऽअपानपाश्चक्षुष्पाः श्रोत्रपाश्चमे। वाचो मेविश्वभेषजो मनसोसि विलायकः ॥ ३४॥**

**अश्विनकृतस्यते सरस्वति कृतस्येन्द्रेण सुत्राम्णा कृतस्य। उपहूत उपहूतस्य भक्षयामि॥३५॥**

ऋषिरनुष्टुप् छन्दो ग्रहो देवता १ **मंत्रार्थः** हे ग्रह आत्मप्रतिविंब वात्वं [1](मे) [2](प्राणपाः) प्राण रक्षकः [3](अपानपाः) [4](चक्षुष्पाः) [5](च) [6](मे) [7](श्रोत्रपाः) [8](मे) [9](वाचः) [10](विश्व भेषजः) सर्वौषधिरूपः [11](च) [12](मनसः) [13](विलायकः) विषयेभ्यो निवर्त्तकः [14](असि) ॥ ३४॥ द्वितीयो मंत्रः ओंअश्विन कृतस्येत्यस्य प्रजापतिऋषिरुपरिष्टाद्बृहती छन्दो ग्रहो देवता १

**मंत्रार्थः** हे ग्रह आत्मप्रतिविंब वा [1](उपहूतः) आह्वातोहमात्मा [2](अश्विन कृतस्य) अश्विनाभ्यां नरनारायणाभ्या



CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

म्वासंस्कृतस्य (सरस्वति कृतस्य) सरस्वत्या महावाचा वा संस्कृतस्य (सुत्राम्णा) सुष्ठु रक्षकेन (इन्द्रेण) इन्द्रेण महा-
नारायणेन वा (कृतस्य) संस्कृतस्य (उपहूतस्य) ऋत्विग्भिर्वागा ऋत्विग्भिर्वा कृतोपहवस्य (ते) तव। कर्मणि षष्ठी
(भक्षयामि) भक्षणं करोमि॥ ३५॥ अध्वर्यवं समाप्तम् इतः सौत्रामणिकं हौत्रमुच्यते एकादशऋचः प्रथमस्यैन्द्रस्य
पशोराप्रियः प्रयाजयाज्यास्तासु प्रथमा का० १९। ६। १२ ओंसमिद्ध इत्यस्याङ्गिरस ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता १

**मंत्रार्थः** (समिद्धः) सन्दीप्तः (उषसाम्) (अनीके) मुखे प्रातः काले (पुरो रुचा) अग्रेप्रसरन्त्या दीप्त्या (पूर्वकृत्) आदि-
त्यात्मना पूर्वस्याः कर्त्ता। सर्वनाम्नो वृत्तिमात्रे पुंवद्भावः (त्रिभिः) (त्रिंशता) (देवैः) सह (वावृधानः) वर्धमानः। वृधेर्वि-

**समिद्ध इन्द्र उषसामनीके पुरोरुचा पूर्वकृद्वावृधानः। त्रिभिर्देवैस्त्रिंशता**
**वज्रवाहुर्जघान वृत्रं विदुरो ववार॥ ३६॥ नराशंसः प्रति शूरो मिमानस्त**

करणाव्यत्ययेन शपः तुजादीनां दीर्घोऽभ्यासस्येति अभ्यासदीर्घः संहितायाम् (वज्रवाहुः) वज्रपाणिः (इन्द्रः) (वृत्रं) मेघं
दैत्यं वा (जघान) हतवान् (दुरः) मेघस्य द्वाराणि स्रोतांसि दैत्यपुरद्वाराणि वा। द्वारशब्दस्य सम्प्रसारणे दुर इति रूपम्
(विववार) विवृतान्यकरोत् शून्यान्यकरोद्वा॥ ३६॥ **अथाध्यात्मम्** — (समिद्धः) सम्यक् दीप्तः (उषसाम्)
(अनीके) समाधिकाले (पुरोरुचा) अग्रेप्रसरन्त्या दीप्त्या (पूर्वकृत्) उदयं कुर्वन् (त्रिभिः) (त्रिंशता) (देवैः) चतुर्दशे-
न्द्रियैर्दशप्राणैस्त्रिगुणैस्त्रिदेहैर्जीवेशप्रतिविंवैश्च (वावृधानः) वर्धमानः (वज्रवाहुः) ज्ञानवज्रधारी (इन्द्रः) आत्म-
रूपयजमानः। आत्मा वै यज्ञस्य यजमानः श० ९। ५। २। १६ (वृत्रं) पापं। पाप्मा वै वृत्रः श० १३। ४। १। १३ (जघान)

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

[१४] (द्वुरः) कमल द्वाराणि (विववार) [१५] विवृतान्य करोत् ॥३६॥ ओं नराशंस इत्यस्याङ्गिरस ऋरषिस्त्रिष्टुप् छन्दस्तनूनपा द्देवता १ **मंत्रार्थः** य आत्माग्निः (नराशंसः) [१] वागाद्यृत्विग्भिः स्तुतः (भूरेः) [२] योग भूरः (प्रतिमिमानः) [३] जीवस्य मिद्भावं प्रापकः (तनूनपात्) [४] तनोति विस्तार यति ब्रह्माण्डं स तनूमहा नारायणस्तस्य पुत्रो विष्णुस्तस्य पुत्र आत्मा यद्वा देहस्य रक्षकः (यज्ञस्य) [५] (धाम) [६] यज्ञ पुरुषस्य तेजः (गोभिः) [७] इन्द्रियैः (वपा वान्) [८] (मधुना) [९] ज्ञानेन। श० १४ ५।५।१६ (समञ्जन्) [१०] हवींषि भक्षयन् (हिरण्यैः) [११] इन्द्रिय शक्तिभिः। हिरण्यं ज्योतिः श० ६।७।१।२ (चन्द्री) [१२] सुवर्णी दाक्षिणा वान्नास्ति तमा त्माग्निं (प्रचेताः) [१३] विज्ञान वान्नात्म प्रतिविंवः (प्रतियजति) [१४] ॥ ३७॥

नूनपा॒त्प्रति य॒ज्ञस्य॒ धाम। गोभि॒र्व॒पावा॒न्मधु॑ना सम॒ञ्जन्हिर॑ण्यैश्च॒न्द्री य॑जति॒ प्रचे॑ताः ॥३७॥ ई॒डि॒तो दे॒वैर्हरि॑वाँ२॥ अभि॒ष्टिरा॒जुह्वा॑नो ह॒विषा॒ शर्द्ध॑मानः। पु॒र॒न्द॒रो गो॑त्र॒भिद्वज्र॑बाहु॒रा या॑तु य॒ज्ञमुप॑ नो जु॒षा॒णः। ३८।

ओं ईडित इत्यस्याङ्गिरस ऋरषिस्त्रिष्टुप् छन्दोऽग्निर्देवता १ **मंत्रार्थः** (देवैः) [१] (ईडितः) [२] पूजितः स्तुतः (हरिवान्) [३] अश्व वान् (अभिष्टिः) [४] समन्तात्स्तुतः। स्तौ ते रौणादिको डि प्रत्ययः (हविषा) [५] निमित्तेन हविर्निमित्तं (आजुह्वानः) [६] ऋत्विग्भिराहूयमानः (शर्धमानः) [७] अति वलायमानः (पुरन्दरः) [८] रिपुनगरं दारयतिसः (गोत्रभित्) [९] असुर कुलानां भेत्ता (वज्र वाहुः) [१०] वज्रधरः (नः) [११] अस्माकं (यज्ञम्) [१२] (उपजुषाणः) [१३] उपसेवमान इन्द्रः (आयातु) [१४] आगच्छतु ॥ ३८॥

**अथाध्यात्मम्** – (देवैः) [१] वागाद्यृत्विग्भिः (ईडितः) [२] पूजितः (हरिवान्) [३] प्राणवान् श० ५।२।४।६ (अभिष्टिः) [४] (अ-

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

आत्मा (भ) प्रकाश आत्मप्रकाश एवेष्टिर्यस्य सः (हविषा) आत्मप्रति विंवार्पण निमित्तं (आजुह्वानः) वागाद्युत्विग्भिराहू-
यमानः (शर्धमानः) अति वलायमानः (पुरन्दरः) कामनगरं दारयतिसः (गोत्रभित्) कामकुलस्य नाशकः (वज्रबाहुः) ज्ञा
नवज्रधरः (नः) अस्माकं वागाद्युत्विजां (यज्ञम्) योगयज्ञं (उपजुषाणः) आत्मा (आयातु) प्रादुर्भवतु ॥ ३८॥

ओंजुषाण इत्यस्याङ्गिरस ऋषिर्निचृत्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता १

**मंत्रार्थः** (हरिवान्) अश्व युक्तः (उरुप्रथाः) विस्तीर्णख्यातिः (सजोषाः) प्रीत्या सहितः (इन्द्रः) (पृथिव्याः)
स्वर्गस्य निघ० (प्रदिशा) मार्गेण (आदित्यैः) (वसुभिः) (अक्तं) म्रक्षितम् (प्रथमानं) विस्तीर्णं (स्योनम्) सुखरूपं (व-

**जुषाणो बर्हिर्हरिवान्न इन्द्रः प्राचीन छं सीदत्प्रदिशा पृथिव्याः उरुप्रथाः प्र-**
**थमान छं स्योनमादित्यैरक्तं वसुभिः सजोषाः ॥ ३९॥ इन्द्रं दुरः कवष्यो धा**
**वमाना वृषाणं यन्तु जनयः सुपत्नीः। द्वारो देवीरभितो विश्रयन्तां छं सुवीरा वी**

र्हिः) अन्तरिक्षं निघ० (जुषाणः) सेवमानः। शानच्चिशपोलुक् (नः) अस्माकं (प्राचीनं) प्राग्भवं प्रदेशं (सीदत्) सीद-
तु आस्ताम् इतश्च लोप इति इलोपः ॥ ३९॥ **अथाध्यात्मम्** – (हरिवान्) प्राणवान् (उरुप्रथाः) महायशाः
(सजोषाः) सन्तुष्टः (इन्द्रः) आत्मरूप यजमानः (पृथिव्याः) देहस्य (प्रदिशा) प्राणमार्गेण (आदित्यैः) कमलस्थैर्दे
वैः (वसुभिः) कमलैः (अक्तं) व्याप्तं (प्रथमानं) विस्तीर्णं (स्योनम्) सुखरूपं (बर्हिः) सुषुम्नां (जुषाणः) (नः) अस्माकं
वागाद्युत्विजां (प्राचीनं) मानसकमलं (सीदत्) ॥ ३९॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

ओं इन्द्रमित्यस्याङ्गिरसऋषिर्भुरिक् त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता १

**मंत्रार्थः** [1](कवष्यः) कुशब्दे कूयन्ते कुवन्ति शब्दयन्ति जना या सुता: कवष्यः ससुषिराः सच्छिद्रे एव शब्दप्रसरात् कौते रोएणादिको ऽषट्प्रत्ययः [2](दुरः) यन्त्र ग्रह द्वाराणि [3](वृषाणं) वर्षितारं [4](वीरं) शूरं [5](इन्द्रम्) [6](यन्तु) प्राप्नुवन्तु [7]यथा [8](धावमानाः) (सुपत्नीः) शोभनाः साध्व्यः पत्न्यो यन्ते सहाधिकारिण्यः [9](जनयः) जायाः स्त्रियः [10]तथा (सुवीराः) शोभना वीरा ऋत्विजो या सुताः ऋत्विग्युक्ताः [11](महोभिः) तेजोभिरुत्सवैर्वा [12](प्रथमानाः) विस्तृताः [13](द्वारः) [14](देवीः) देव्यः [15](अभितः) सर्वत्र [16](विश्रयन्तां) विवृता भवन्तु ॥ ४० ॥ **अथाध्यात्मम्** [1](कवष्यः) अनाहत शब्द पूरितानि [2](दुरः)

**रम्प्रथमाना महोभिः ॥ ४० ॥ उषासानक्ता बृहती बृहन्तम्पयस्वती सुदुघे शूरमिन्द्रम् । तन्तन्ततम्पे शसा संवयन्ती देवानान्देवंव्यजतः सुरुक्मे ॥ ४१ ॥**

कमल द्वाराणि [3](वृषाणं) अमृत वृष्टि कर्त्तारं [4](वीरं) जितेन्द्रियं [5](इन्द्रम्) आत्मानं [6](यन्तु) प्राप्नुवन्तु यथा [7](धावमानाः) [8](सुपत्नीः) [9](जनयः) तथा [10](सुवीराः) देवैरधिष्ठिताः [11](महोभिः) तेजोभिः [12](प्रथमानाः) विस्तृताः [13](द्वारः) [14](देवीः) कमलद्वाराणि [15](अभितः) सर्वत्र [16](विश्रयन्तां) विवृताः भवन्तु ॥ ४० ॥

ओं उषासानक्ता इत्यस्याङ्गिरसऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द उषासानक्ता देवते १ **मंत्रार्थः** [1](बृहती) बृहत्यौ [2](पयस्वती) उदकवत्यौ अवश्यायवत्यौ [3](सुदुघे) शोभनं दुग्धः ते दुहः कव्घश्चेति कप्घादेशश्च [4](ततं) विस्तीर्णं [5](तन्तुम्)



CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

[OrderDescription]
,CREATED=11.12.19 12:30
,TRANSFERRED=2019/12/11 at 12:56:45
,PAGES=161
,TYPE=STD
,NAME=S0002325
,Book Name=M-2248-SHRISUKAL YAJUVED BRAHAMBHAVYA
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF
,FILE7=00000007.TIF
,FILE8=00000008.TIF
,FILE9=00000009.TIF
,FILE10=00000010.TIF
,FILE11=00000011.TIF
,FILE12=00000012.TIF
,FILE13=00000013.TIF
,FILE14=00000014.TIF

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

FILE15=00000015.TIF
,FILE16=00000016.TIF
,FILE17=00000017.TIF
,FILE18=00000018.TIF
,FILE19=00000019.TIF
,FILE20=00000020.TIF
,FILE21=00000021.TIF
,FILE22=00000022.TIF
,FILE23=00000023.TIF
,FILE24=00000024.TIF
,FILE25=00000025.TIF
,FILE26=00000026.TIF
,FILE27=00000027.TIF
,FILE28=00000028.TIF
,FILE29=00000029.TIF
,FILE30=00000030.TIF
,FILE31=00000031.TIF
,FILE32=00000032.TIF
,FILE33=00000033.TIF
,FILE34=00000034.TIF
,FILE35=00000035.TIF
,FILE36=00000036.TIF
,FILE37=00000037.TIF

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

FILE38=00000038.TIF
,FILE39=00000039.TIF
,FILE40=00000040.TIF
,FILE41=00000041.TIF
,FILE42=00000042.TIF
,FILE43=00000043.TIF
,FILE44=00000044.TIF
,FILE45=00000045.TIF
,FILE46=00000046.TIF
,FILE47=00000047.TIF
,FILE48=00000048.TIF
,FILE49=00000049.TIF
,FILE50=00000050.TIF
,FILE51=00000051.TIF
,FILE52=00000052.TIF
,FILE53=00000053.TIF
,FILE54=00000054.TIF
,FILE55=00000055.TIF
,FILE56=00000056.TIF
,FILE57=00000057.TIF
,FILE58=00000058.TIF
,FILE59=00000059.TIF
,FILE60=00000060.TIF

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

FILE61=00000061.TIF
,FILE62=00000062.TIF
,FILE63=00000063.TIF
,FILE64=00000064.TIF
,FILE65=00000065.TIF
,FILE66=00000066.TIF
,FILE67=00000067.TIF
,FILE68=00000068.TIF
,FILE69=00000069.TIF
,FILE70=00000070.TIF
,FILE71=00000071.TIF
,FILE72=00000072.TIF
,FILE73=00000073.TIF
,FILE74=00000074.TIF
,FILE75=00000075.TIF
,FILE76=00000076.TIF
,FILE77=00000077.TIF
,FILE78=00000078.TIF
,FILE79=00000079.TIF
,FILE80=00000080.TIF
,FILE81=00000081.TIF
,FILE82=00000082.TIF
,FILE83=00000083.TIF

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

FILE84=00000084.TIF
,FILE85=00000085.TIF
,FILE86=00000086.TIF
,FILE87=00000087.TIF
,FILE88=00000088.TIF
,FILE89=00000089.TIF
,FILE90=00000090.TIF
,FILE91=00000091.TIF
,FILE92=00000092.TIF
,FILE93=00000093.TIF
,FILE94=00000094.TIF
,FILE95=00000095.TIF
,FILE96=00000096.TIF
,FILE97=00000097.TIF
,FILE98=00000098.TIF
,FILE99=00000099.TIF
,FILE100=00000100.TIF
,FILE101=00000101.TIF
,FILE102=00000102.TIF
,FILE103=00000103.TIF
,FILE104=00000104.TIF
,FILE105=00000105.TIF
,FILE106=00000106.TIF

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

FILE107=00000107.TIF
,FILE108=00000108.TIF
,FILE109=00000109.TIF
,FILE110=00000110.TIF
,FILE111=00000111.TIF
,FILE112=00000112.TIF
,FILE113=00000113.TIF
,FILE114=00000114.TIF
,FILE115=00000115.TIF
,FILE116=00000116.TIF
,FILE117=00000117.TIF
,FILE118=00000118.TIF
,FILE119=00000119.TIF
,FILE120=00000120.TIF
,FILE121=00000121.TIF
,FILE122=00000122.TIF
,FILE123=00000123.TIF
,FILE124=00000124.TIF
,FILE125=00000125.TIF
,FILE126=00000126.TIF
,FILE127=00000127.TIF
,FILE128=00000128.TIF
,FILE129=00000129.TIF

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

FILE130=00000130.TIF
,FILE131=00000131.TIF
,FILE132=00000132.TIF
,FILE133=00000133.TIF
,FILE134=00000134.TIF
,FILE135=00000135.TIF
,FILE136=00000136.TIF
,FILE137=00000137.TIF
,FILE138=00000138.TIF
,FILE139=00000139.TIF
,FILE140=00000140.TIF
,FILE141=00000141.TIF
,FILE142=00000142.TIF
,FILE143=00000143.TIF
,FILE144=00000144.TIF
,FILE145=00000145.TIF
,FILE146=00000146.TIF
,FILE147=00000147.TIF
,FILE148=00000148.TIF
,FILE149=00000149.TIF
,FILE150=00000150.TIF
,FILE151=00000151.TIF
,FILE152=00000152.TIF

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

FILE153=00000153.TIF
,FILE154=00000154.TIF
,FILE155=00000155.TIF
,FILE156=00000156.TIF
,FILE157=00000157.TIF
,FILE158=00000158.TIF
,FILE159=00000159.TIF
,FILE160=00000160.TIF
,FILE161=00000161.TIF
,

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection